शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन

लेखक : श्रीमंत कोकाटे

'ब्राह्मण ही इसकी क्या परवाह करना !' - छ. शिवाजी महाराज

प्रकाशक: मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज
के
वास्तविक दुश्मन

लेखक
श्रीमंत कोकाटे
एम०ए०(इतिहास)

प्रकाशन : मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज
के
वास्तविक दुश्मन

लेखक	:	श्रीमंत शिवाजी कोकाटे कुर्डवाडी, ता. माढा. जि.सोलापूर
द्वितीय संस्कर	:	26 जून, 2011
तृतीय संस्करण	:	26 जून, 2012 छत्रपति शाहू महाराज जयंती, कोल्हापूर
चर्तुथ आवृत्ती	:	2013
पांचवी आवृत्ती	:	2014
प्रकाशक	:	मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट सर्व्हे नं. 5, 4/311, केशवनगर, मुंढवा, पूना- 411036
सहयोग राशी	:	60/-

(C) सम्पूर्ण अधिकार प्रकाश के स्वाधीन

(नीजि वितरण के लिए)

टाईप सेटिंग	:	मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट
मुद्रक	:	छत्रपति प्रिंटर्स सर्वे नं.5, 4/311, केशवनगर, मुंढवा, पूना- 411036 . (020-26812932)

Scanned with CamScanner

प्रकाशन की कलम से....

मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट यह मूलनिवासी बहुजन समाज के प्रति बामसेफ की एक अत्यंत महत्वपूर्ण देन है। बामसेफ व्यवस्था परिवर्तन के लिए निर्माण हुआ संगठन है। व्यवस्था परिवर्तन यह एक दुष्कर साध्य है, परन्तु बामसेफ संगठन जानता है कि इस साध्य को पूर्ण करने के लिए वैसे ही साधन भी होने चाहिए, जिन साधनों का उपयोग और प्रयोग व्यवस्था परिवर्तन के लिए आवश्यक होता है। क्योंकि साध्य जितना महान होता है उसी अनुपात में ही साधनों का निर्माण एवं प्रयोग होना आवश्यक है।

बामसेफ का अपना दो सूत्रीय कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में प्रचार माध्यमों का निर्माण, उपयोग यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट के माध्यम से अलग-अलग महत्वपूर्ण विषयों पर किताबे प्रकाशित कर अपने प्रचार-प्रसार माध्यम की और बामसेफ ने एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है, जिसके तहत अब तक कई पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी है, तथा इस कदम को अब और भी गंभीरतापूर्वक आगे बढ़ाया जा रहा है।

मूलनिवासी बहुजन समाज में पैदा हुए महापुरुषों के जीवन संघर्ष की सफलता का श्रेय लेना जब असंभव प्रतीत हुआ तब से ब्राह्मणवादियों ने उन महापुरुषों का विकृतिकरण करने का सिलसिला शुरु किया है। छत्रपति शिवाजी महाराज भी उन्हीं में से एक है, जिनका झूठा इतिहास लोगों के संमुख रखा गया है। इस झूठे इतिहास से लोगों को बाहर निकालकर उन्हें वास्तविक इतिहास से अवगत करना तथा शिवाजी महाराज के छुपे हुए दुश्मनों का पर्दाफाश करने का मूल मकसद ध्यान में रखते-हुए **शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन** यह किताब पाठकों के सामने प्रस्तुत हैं।

प्रकाशक

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

छत्रपति शिवाजी महाराज एक विश्वविख्यात एवं कर्तुत्वान राजा है। मूलनिवासी भूमिपुत्रों की सहायता से शिवाजी महाराज ने स्वराज (सामान्य जनों का राज) स्थापित किया। किन्तु शिवाजी महाराज का निर्विवाद चरित्र उपलब्ध नहीं है, यह एक कटू सत्य है। कल्पित कथा, रंजकता यह शिवचरित्र के सामने की मुश्किलें हैं। शिवचरित्र यह अपने आप में किताब में न समाने वाला जीवन कार्य है। शिवचरित्र के विभिन्न पहलुओं पर लिखने की जरुरत है। शिवचरित्र यह सिर पर उठाकर प्रदर्शन करने की विषय कतई नहीं है, बल्कि यह दिमाग में डालने का विषय है। शिवचरित्र पर धारावाहिक, कहानी, फिल्म, महानाट्य निर्माण करना और व्याख्या देना यह कई लोगों का धंधा बन गया है। ऐसे समय में कटुता का विचार न करते हुए श्रीमंत को काटे इन्होंने निहायत संशोधनात्मक ऐसा ''शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन'' यह शिवाजी महाराज के जीवन की अपरिचित बातों पर प्रकाश डालने वाली किताब लिखी है। शिवाजी महाराज को जाति-धर्म की हद में अटकाना, रायरेश्वर के मन्दिर में उन्होंने शपथ ग्रहण की या नही, महारानी पुतलाबाई का सती जाना, भावानी तलबार, बहुजन प्रतिपालक कहने की बजाए गो-ब्राह्मण प्रतिपालक कहने के पीछे की साजिश, जिजाऊ माँ साहब की मृत्यु कैसे हुई? शिवाजी महाराज की किस प्रकारहत्या की गई? ब्राह्मणवादी लोग शिव जयंती की तारीख का विरोध क्यों करते है? आदि बातों के संबंध में श्रीमंत का शोधकार्य नया एवं परिवर्तनशील है। इस काम के लिए श्रीमंत ने काफी मेहनत की है।

शिवाजी महाराज ने सभी जाति-धर्म के मूलनिवासी भूमिपुत्र को साथ में लेकर स्वराज्य निर्माण किया। उसमें बाजी पासलकर, कान्हांजी जेधे, शिवाजी काशिद, जिवा महाला, बर्हिजी नाईक, हिरोजी फर्जंद, नुरखान बेग, काजी हैदर, लाय पाटील, योसाजी कंक, फिरंगोजी, प्रतापराव, कोंडाजी फर्जंद, सुर्यराव काकडे, नेताजी पालकर, सिद्धी हिलाल, सिद्धी इब्राहिम, फकीरा के दादा, मुरारबाजी एवं बाजीप्रभु ये प्रभु आदि सभी जाति धर्म के साथियों ने

Scanned with CamScanner

महाराज के लिए अपने जान की बाजी लगायी।

इस अवसर पर दादोजी कांडदेव, कृष्णाजी कुलकर्णी, रामदास, मोरोपंत आदि अनगिनत ब्राह्मणों ने विरोध किया। जो बीच में आये उन्हें महाराज ने अपने रास्ते से हटाया। अफजल खान के साथ मुलाकात के समय शिवाजी महाराज पर हमला करने वाला कृष्णाजी भास्कर कुलकर्णी को शिवाजी महाराज ने खत्म किया। महाराज को आजीवन तकलीफ पहुँचाने वाले दुश्मनों की जानकारी के साथ-साथ श्रीमंत ने आज तक शिवचरित्र, शिवसूत्र एवं शिवनीति को जान-बूझकर बदनाम करने वाले तिलक, सावरकर, पुंदरे, बेडेकर और य॰दि॰फडके इनकी करतुतों का भी प्रस्तुत किताब में पर्दाफाश किया है।

शिवाजी महाराज को उनकी हयात में तकलीफ पहुँचाने वाले जैसे दुशमन हैं वैसे ही उनका बदनामी भरा इतिहास लिखने वाले फडके, माटे, कंटक भी दुश्मन हैं। उन्होंने शिवाजी महाराज का और मराठा महिलाओं का बदनामी भरा इतिहास शिवचरित्र के पहले खण्ड में लिखा। श्रीमंत ने इन बातों पर प्रकाश डाला है। किन्तू प्रतिक्रियाएँ देने में अपनी ताकत गँवाने की बजाए नवनिर्माण की जरूरत है। भावनिक स्तर पर किया गया लेखन कालबाह्य साबित होता है। इसलिए दुश्मन का जिक्र कर उन्हें बड़ा करने की बजाए शिवाजी महाराज के मुद्दों पर भी लिखने की जरूरत है। शिवचरित्र की कई बातें आज भी अनभिज्ञ हैं। उन अनभिज्ञ बातों को ढुँढना होगा, ढुढ़कर लोगों के सामने प्रस्तुत करना होगा।

श्रीमंत यह सृजनशील, अभ्यासू और स्पष्ट विचारों का प्रभावी वक्ता है। इसलिए इस अवसर पर मैं श्रीमंत को सूचित करना चाहूँगा कि वे संभाजी महाराज पर भी लिखें।

पुरूषोत्तम खेडेकर

(राष्ट्रीय अध्यक्ष मराठा सेवा संघ)

प्राक्कथन

शिवाजी महाराज पूरी दुनिया के लिए वंदनीय राजा हैं। शिवाजी महाराज का कर्तुत्व स्वर्णाक्षरों में घर-घर में लिखकर रखने जैसा है। शिवाजी महाराज ने अपनी ५० साल की उम्र में असंभव कार्य को संभव कर दिखाया। समाज व्यवस्था में आमुलाग्र परिवर्तन करने हेतु शिवाजी महाराज निर्भय होकर लड़ाई की। इसके लिए उन्हें हथियार भी उठाना पडा, किन्तु शिवाजी महाराज ने लड़ाई के लिए हथियार भी उठाना पडा, किन्तु शिवाजी महाराज ने लड़ाई के लिए हथियार का बहुत कम सहारा लिया। हथियारों की तुलना उन्होंने चतुराई से ही अपने दुश्मनों को धूल घटाई। इसमें उन्हें काफी विरोध हुआ। परन्तु जिन्हें विरोध नहीं होता वे परिवर्तन नहीं कर सकते। कभी-कभी शिवाजी महाराज पर जानलेवा हमले भी होते रहे, उन्हें निराश करने का प्रयास किया गया परन्तु शिवाजी महाराज ने सभी समस्याओं को मात दी। अफजलखान, शाहिस्तेखान, सिद्धी जौहर, दिलेरखान, औरंगजेब इन दुश्मनों को शिवाजी महाराज ने पराजित किया। क्योंकि वे खुले दुश्मन थे। खुले दुश्मन के खिला। लड़ना काफी आसान होता है। उनके खिलाफ दांवपेच आँका जा सकता है, परन्तु छुपे हुए दुश्मन के खिलाफ दांवपेच नहीं आँका जा सकता। इसलिए खुले दुश्मन की तुलना छुपा हुआ दुश्मन ज्यादा खतरनाक होता है। औरंगजेब से लेकर दिलेरखान तक, ये सभी शिवाजी महाराज के खुले दुश्मन थे। वे शिवाजी महाराज के कट्टर विरोधी थे इसमें कोई दो राय नहीं। परन्तु शिवाजी महाराज का आश्रय लेने वाले, दोस्ती का नाटक करनेवाले और मुश्किल घडी में शिवाजी महाराज को खत्म करने के लिए खुले दुश्मन के गुट में शामिल होने वाले लोग ही शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है। किन्तु पक्षपाती इतिहासकारों ने इन दुश्मनों का जान-बुझकर जिक्र टाला है। समकालीन दस्तावेज, वस्तुनिष्ठ सबूत होते हुए भी शिवाजी महाराज के दुश्मनों की वाह-वाही (उदात्तीकरण) करने का प्रयास कुछ शिवशाहिरों ने और कादंबरीकारों ने किया है। परन्तु इतिहास में कविकल्पना, रंजनकता, व्यक्तिगत राय, ललित लेख, द्वेष पूर्वाग्रह इन बातों को बिल्कूल स्थान नहीं होता।

शिवाजी महाराज के इतिहास का पारदर्शक वृत्ती से लेखन किया जाए तो दादोजी कोंडदेव, कृष्णाजी कुलकर्णी, रायबाधीन देशमुख, मुरगुड नांदगांव

के जोशी, मोरोपंत पिंगले, आण्णाजी दत्तो, उमाजी पंडित, राहुजी सोमनाथ, गागाभट्ट, हनुमंते, रामदास आदि शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन हैं। उपरोक्त सभी ने शिवाजी महाराज को कैसे और कितनी तकलीफ पहुँचायी, स्वराज निर्माण के कर्य में कैसे रोड़ा अटकाया, समय आने पर शिवाजी महाराज पर हमल किया और आखिरकार राहुजी सोमनाथ ने शिवाजी महाराज की कैसे हत्या की, यह आपको प्रस्तुत किताब में पढ़ने को मिलेगा परन्तु इसी के साथ आपको कुछ अप्रिय लगेगी और खटकने की भी संभावना है। परन्तु दोस्तों, एक झूठ हजार दफा बताया जाए तो वह सब को सच लगने लगता है और जब सच्चाई शुरु में ही बयान की जाती है तो वह सबको खटकती है। परन्तु यह सच बताने की और सुनकर, पढ़कर समझने की आपको हिम्मत करनी होगी। यह मेरी नम्र बिनती है। यदि कुछ बातें खटकती है तो विचार नामक शक्ति आपके पास है। कम से कम आप विचार जरुर करें। प्रस्तुत किताब में एक भी शब्द बगैर सबूतों के नहीं लिखा गया है। हर जगह पर संदर्भ दिया गया है तथा साथ में संदर्भ सूचि भी दी गई है। जो घटनाएँ घटित हुई हैं, उसके पीछे दलीलपूर्ण, मनोवैज्ञानिक, सैद्धान्तिक आधार है।

शिवाजी महाराज की हत्या के साथ ही उनके दुश्मन समाप्त नहीं हुए बल्कि उनकी संख्या में बड़े पैमाने पर इजाफा हुआ। भूमिपुत्रों की स्वराज निगलने वाले पेशवाओं ने शिवाजी महाराज द्वारा खूद के बलबूते पर शुरु किया गया शिवशक बन किया। तिलक ने शिव जयंती बन्द करने के लिए गणेशोत्सव प्रारंभ किया। अत्रे, सावरकर, पुरंदरे बेडेकर, फडके इन्होंने शिवाजी महाराजा को बदनाम किया तो दूसरी तरफ विश्वभूषण डा.बाबासाहब अम्बेडकर इन्होंने शिवाजी महाराज का चिकित्सात्मक लेखन किया। राष्ट्रपिता जोतिराव फुले इन्होंने शिवजयंती शुरु की। कर्मवीर भाऊराव पाटील इन्होंने आजीवन शिवाजी महाराज का जय-जयकार करते हुए भूमिपूत्रों को शिक्षा दी। साहित्य रत्न थोर समाज सुधारक अण्णाभाऊ साठे इनकी वजह से रशियावासियों को शिवाजी महाराज का परिचय हुआ। डा.पंजाबराव देशमुख, केशव सिताराम ठाकरे, कर्मवीर डा.मामा साहब जगदले, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह ये लोग शिवाजी महाराज के निःसीमा अनुयायी थे। इस संबंध में असंख्य वस्तुनिष्ठ संदर्भ प्रस्तुत किताब में दिये गए हैं। इस लेखन के पीछे जातिद्वेष

Scanned with CamScanner

यास व्यक्तिद्वेष नहीं बल्कि केवल मात्र सत्यशोधन यहीं मकसद है। सत्य लेखन, सत्य भाषण का मतलब गाली नहीं है। भारतीय समाज मन पर हजारों साल से कहानी, कादंबरी (नावेल) और फिल्मों का प्रभाव होने की वजह से वास्तविक इतिहास से समाज वंचित रहा।

वास्तविक इतिहास संशोधन और लेखन में आज तक महाराष्ट्र में बड़ी क्रान्ति हुई है। इतिहासाचार्य मा॰म॰देशमुख इस वास्तव इतिहास लेखन के जनक हैं। "शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन" यह किताब आपके सामने प्रस्तुत करते समय मुझे बहुत आनंद हो रहा है। मेरे मित्र प्रवीण गायकवाड और शांताराम कुंजीर इनकी वजह से ही यह किताब पाठको तक पहुँचा सके। प्रस्तुत किताब अभिरूची से ज्यादा देश की आवश्यकता के लिए है। क्योंकि वास्तविक इतिहास समझे बगैर वास्तविक इतिहास निर्माण नहीं होता। देश के फँसाद, जातिवाद, अंधश्रद्धा खत्म करने मकसद से ही यह किताब आपके हाथ में दे रहे हैं। कृपा आप इस किताब को गंभीर रूप से अन्य लोगों को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहीत करें। आपकी प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं।

श्रीमंत कोकाटे

विषयानुक्रम

1. शिवजयंती की तारीख-तिथि का विवाद -------------------12
2. शिवाजी पर हमलाकरने वाला कृष्णा भास्कर कुलकर्णी ---------- 15
3. शिवाजी महाराज के खिलाफ लड़नेवाली रायबाधीन देशमुख ----- 16
4. दिलेरखान की सफलता के लिए कोटीचंडी यज्ञ करने वाले 400 ब्राह्मण ---------------------------------- 17
5. राजा जयसिंह का सेक्रेटरी उदयराज ------------------- 18
6. औरंगजेब का प्रधान रघुनाथदास ----------------------- 18
7. औरंगज़ेब का सिपाहसालार आबामसट ----------------18
8. सिद्धी को मदद करने वाले मुरगुड नांदगाँव के जोशी ------------19
9. मथुरा के ब्राह्मणों को दम भरने के कारण ही संभाजी सुरक्षित ------21
10. राजाराम के जन्म के समय शिवाजी महाराज को डर बताने वाले सनातनी --22
11.बापुखान को मदद करने वाला नागोजी पंडित ---------------23
12. शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध ---------------23
13. हिन्दू धर्म द्वारा शिवाजी महाराज की प्रताड़ना ---------------26
14. शिवाजी महाराज हिन्दू धर्म के या शिवधर्म के? --------------31
15. हिन्दू धर्म की प्रताड़ना के कारण ही जिजाऊ माँ साहब की मृत्यु --34
16. शिवाजी महाराज का दूसरा राज्याभिषेक: शिवधर्म की बुनियाद की रचना -------------------------------34
17. शिवाजी महाराज का मूल राजस्थान या महाराष्ट्र? -------------35
18. शिवाजी-व्यंकोजी के बीच झगड़ा लगाने वाला हनुमंते ----------35
19. शिवाजी महाराज का घात करनेवाला कुमंत्री मोरोपंत -----------36
20. ब्राह्मणों द्वारा संभाजी महाराज की बदनामी ----------------37
21. हैदराबाद के बादशहा के अधिकारी मादण्णा-आकण्णा --------39
22. शिवाजी महाराज की मृत्यु या खून? --------------------40

Scanned with CamScanner

23. महाराणी पुतलाबाई सती या खून?
24. रामदास संत नहीं, स्वराज में पलने वाला केचुआ 50
25. आदिलशहा का नौकर दादू कोंडदेव कुलकर्णी 52
26. शिवाजी महाराज के गुरु संत तुकाराम का उत्पीड़न 56
27. संत तुकाराम बनाम असमर्थ रामदास 57
28. नेताजी पालकर के धर्मान्तरण को विरोध करने वाले ब्राह्मण 58
गंगाधर कुलकर्णी के धर्मान्तरण के समय खामोश क्यों?
29. संभाजी महाराज को मुगलों के कब्जे में देने वाला 65
धोखेबाज कवी कुलेश
30. औरंगजेब ने संभाजी महाराज को मनुस्मृति संहिता के 67
तहत खत्म किया
31. 'शिवशक' बंद कर 'फसलीशक' शुरु करने वाले पेशवा 70
32. शिवजयंती बंद करने के लिए तिलक द्वारा गणेश 70
उत्सव की शुरुआत
33. शिवाजी महाराज को सीमित करने वाले अत्रे- महाजन 72
34. शिवाजी महाराज का कर्तुत्व अमान्य करने 75
वाले तिलक–सावकर 77
35. शिवद्रोही प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु 80
36. शिवचरित्र को काँटा हुआ जहरीला नाग: बाबा पुरंदरे 80
37. शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाले बेडेकर–प्रधान 81
38. य.दि.फडके द्वारा शिवाजी महाराज तथा 82
महिलाओं की बदनामी
39. शिवाजी महाराज का पुतला चोरी कैसे हुआ? 85
40. विदेशी लेखकों के जरिए शिवाजी महाराज 85
की बदनामी का प्रयास
41. जेम्स लेन के जरिए शिवाजी महाराज की बदनामी
का योजनाबद्ध षड्यंत्र 86
42. शिवाजी महाराज ने स्वराज स्थापित करने की प्रेरणा
रायरेश्वर के मंदिर में नहीं ली 97

Scanned with CamScanner

43. यह झूठा इतिहास लिखने वाले लोग ही शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है 99
44. शिवाजी महाराज ने पुर्तगाली तलवार खरीदी की 100
45. शिवाजी महाराज के माध्यम से मुस्लिम द्वेष फैलाने का षड्यंत्र 102
46. ब्राह्मण मराठों को मुसलमानों के खिलाफ क्यों भड़काते हैं? 105
47. ब्राह्मण हिन्दू नहीं है 110
48. मुसलमान– मराठा दोनों ब्राह्मणों के टार्गेट हैं 113
49. शिवाजी महाराज को 'मराठा राजा' कहने के पीछे की साजिश 113
50. शिवाजी महाराज को 'गो–ब्राह्मण प्रतिपालक' कहने के पीछे की साजिश 114
51. अभिव्यक्ति स्वतंत्रता के नाम पर बदनामी की साजिश 116
52. क्या मराठों ने शिवाजी महाराज को विरोध किया? 117
53. भारत के सभी ब्राह्मण विदेशी हैं 117

Scanned with CamScanner

शिवजंयती की तारीख-तिथि का विवाद

सन् 1869 में मूलनिवासी बहुजनों की मुक्ति के महानायक राष्ट्रपिता जोतिबा फुले इन्होंने रायगड स्थित छत्रपति शिवाजी महाराज की पेड़-पौधे के बीच दबी हुई समाधी को ढुँढ़कर शिवाजी महाराज की जीवनी पर दुनिया का पहला एवं विस्तारित स्वरुप वाला वास्तव 'पोवाडा' लिखा। छत्रपति शिवाजी महाराज का विश्वविख्यात कार्य घर-घर तक पहुँचने के मकसद से राष्ट्रपिता जोतिबा फुले इन्होंने सन् 1870 में शिवजयंती मनाना प्रारंभ किया। शिवजयंती का पहला सफल कार्यक्रम पुना में सम्पन्न हुआ और तभी से बड़े यही धुमधाम से शिवजयंती मनाने का सिलसिला शुरु हुआ। उस समय तिलक मात्र 12-13 साल का बालक थे। शिवजयंती के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए पेशवाई के समर्थकों में जलन पैदा होने लगी क्योंकि पेशवाओं ने 'शिवशक' बंद कर मुगलों का 'फसली शक' शुरु किया था। शिवाजी महाराज के रायगड को तहस-नहस कर वहां स्थित दफ्तरखाने को आग लगा दी गई। उस पेशवाई के समर्थक तथा ब्राह्मणों के वरिष्ठ नेता बाल गंगाधर तिलक ने शिवजयंती उत्सव बंद करने के मकसद से सन् 1893 में गणेशोत्सव मनाना प्रारंभ किया। शिवजयंती का विरोध करने के लिए गणेशोत्सव मनाना प्रारंभ कर शिवभक्तों में शिवजयंयती के संबंध में भ्रान्ति पैदा करने वाले बालगंगाधर तिलक यह आद्य ब्राह्मण हैं। आगे ब्राह्मणों ने शिवजयंती की तारीख तय न हो पाए इसके लिए 'विवाद' बनाए रखा। क्योंकि शिवजयंती के माध्यम से लोग इकट्ठा आएंगे। वास्तविक शिवचरित्र पढ़ कर अपने हक-अधिकार की मांग करने वाले सच्चे शिवभक्त निर्माण होंगे। इसे रोकने के लिए ब्राह्मणों ने शिवजयंती को लेकर निरंतर विवाद बनाए रखा।

इस विवाद को समाप्त करने के मकसद से महाराष्ट्र सरकार द्वारा सन्

Scanned with CamScanner

1966-67 में वा॰सी॰बेंद्रे, न॰र॰फाटक, ग॰ह॰खरे, द॰वा॰पोतदार, डा॰आप्पा सो॰पवार, ब॰म॰पुरंदरे इनकी अगुवाई में एक कमिटी गठित की गई। विवादास्पद बातों को लेकर आमतौर पर सरकार द्वारा समय-समय पर समितियों का गठन किया जाता है। जैसे-श्रीकृष्ण आयोग, न्या॰सावंत आयोग, आदि। ठीक उसी प्रकार शिवजयंती की तारीख तय करने के उद्देश्य से महाराष्ट्र सरकार द्वारा शिवचरित्र शोधकर्ताओं की एक कमिटी गठित की गई। जो काम दो साल में पुरा हो सकता था उस काम को पूरा करने के लिए 30-33 साल का समय लगाया गया। यकिनन यह जान-बुझकर किया गया।

'19 फरवरी' यह शिवजयंती की तारीख तय होते ही 'कालनिर्णय' कैलेंडर के मालिक/संपादक जयंत सालगांवकर इन्होंने तिथि अनुसार शिवजयंती मनाने की अपील की। उसके लिए अखबारों में इश्तेहार दिए गए। ऐसा करने के पीछे जयंत सालगांवकर काशिवाजी महाराज के प्रति प्रेम नहीं था बल्कि जान-बूझकर विवाद उत्पन्न करना, यह मकसद था। सालगांवकर द्वारा 'तिथि' का आग्रह धरते ही पुरंदरे, बेडेकर, मेहंदले इन्होंने 'तिथि' के समर्थन में सालगांवकर को खत लिखा। सरकार द्वारा गठित कमिटी में काम करने वाले पुरंदरे 'तिथि' के अर्थात 'ब्राह्मणों' के गूट में शामिल हो गए।

इसका मतलब पुरंदरे शिवप्रेमी न होकर तिलक, सालगांवकर आदि ब्राह्मण प्रेमी तथा विघ्नसंतोषी होने की बात सिद्ध होती है। सालगांवकर, पुरंदरे, बेडेकर आदि ब्राह्मणों द्वारा तिथि अनुसार शिवजयंती मनाने का आग्रह धरा गया। शिवजयंती की तारीख-तिथि का विवाद किसी भी राजनीतिक पार्टी द्वारा निर्माण नहीं किया गया बल्कि पुरंदरे, बेडेकर, सालगांवकर इनके द्वारा निर्माण किया गया। किन्तू यह विवाद हर तरफ फैले इसके लिए ब्राह्मणों ने उसे राजनीतिक रंग चढ़ाया। अनेक राज्यकर्ताओं को यह पता ही नहीं कि यह विवाद मूलत: ब्राह्मणों द्वारा निर्माण किया गया है। इसके लिए हमेशा की तरह ब्राह्मणों द्वारा धर्म-संस्कृति का हथियार सामने किया गया। ब्राह्मणों ने शिवजयंती की 'तारीख' का विरोध कर 'तिथि' द्वारा जयंती मानाने का अग्रह धरना शुरु किया। इसके पीछे क्या षड्यंत्र है?

'तारीख' के अनुसार यदि शिवजयंती मनायी जाती है तो विवाद समाप्त होकर देश और दुनिया में शिवजयंती मनायी जाएंगी। क्योंकि देश की

Scanned with CamScanner

ग्राम पंचायत, स्कूल, कॉलेज से लेकर न्यायपालिका और संसद आदि सभी जगहों पर तारीख के अनुसार ही काम चलता है। तारीख साल में एक बार और एक ही माह में आती है। इस वजह से विवाद के लिए कोई जगह शेष नहीं रहती। सरकारी बैंक, सरकारी दफ्तर, स्कूल-कॉलेज में शिवचरित्र पर संगोष्ठी के कार्यक्रम होते हैं। इस माध्यम से सच्चा शिवचरित्र लोगों के सामने आता है।

यदि वास्तविक शिवचरित्र लोगों को पता चलता है तो लोग ब्राह्मणों को कतई माफ नहीं करेंगे, इस बात का डर ब्राह्मणों को हमेशा सताता है और इसलिए वे शिवचरित्र को, शिवजयंती की तारीख को लेकर विवाद खड़ा करते हैं। केवल प्रतिक्रिया देने में ही बहुजनों की ताकत जाया हो, यह ब्राह्मणों का दांवपेच है। अंग्रेजी कैलेंडर के नाम पर तारीख को विरोध करनेवाले ब्राह्मण स्वयं अंग्रेजी शिक्षा हासिल करते हैं। अंग्रेजी कम्प्युटर, अंग्रेजी मोबाईल का इस्तेमाल करते हैं। जयंत सालगांवकर अपना कैलेंडर जनवरी के बजाए चैत्र माह में बाजार में बिक्री के लिए क्यों नहीं लाते? कैलेण्डर में तारीख के आंकडें बड़े और तिथि के आंकड़े छोटे क्यों छपवाते हैं? ब्राह्मणों का आज अंग्रेजी और पहले अंग्रेजों के बगैर पत्ता तक नहीं हिलता था, वे आज शिवजयंती की तारीख को क्यों विरोध करते हैं?

ब्राह्मण शिवजयंती के लिए तिथि का आग्रह क्यों धरते हैं? तिथि के अनुसार देश में कोई काम नहीं चलता। अपना गांव, स्कूल, देश तिथि के अनुसार नहीं बल्कि तारीख के अनुसार चलता है। तिथि के अनुसार काम करने पर विवाद बरकरार रहता है। क्योंकि तिथि कभी मार्च माह में, तो कभी अप्रैल में तो कभी मई माह में आती है। तिथि के अनुसार तो ग्राम पंचायत या प्रायमरी स्कूल भी नहीं चलता। शिवाजी महाराज तो पुरी दुनिया के लिए वंदनीय युगपुरुष हैं। तिथि के विवाद में लटकाने इतने वे छोटे कतई नहीं है। शिवाजी महाराज की छोटी प्रतिमा बनाकर महाराज हमेशा विवाद में रहे इस मकसद से सालगांवकर द्वारा तिथि का विवाद उत्पन्न किया गया। तिथि आती है तो पंचांग आएगा, पंचांग आएगा तो भटजी आएगा। भटजी की रोजगार गारंटी चले तथा विवाद में शिवाजी महाराज तथा शिवभक्तों का खात्मा हो इस उद्देश्य से भट ब्राह्मण तिथि का आग्रह धरते हैं। तारीख-तिथि का विवाद प्रारंभ कर ब्राह्मणों ने शिवभक्तों में दो गुट बनायें। तारीख को मानने वाले शिवभक्त

Scanned with CamScanner

बनाम तिथि को मानने वाले शिवभक्त, ऐसा संघर्ष निर्माण किया गया। शिवाजी महाराज की दो बार जयंती मनाकर ब्राह्मणों ने एक महान राजा का मजाक उड़ाया है। ब्राह्मण गुरुनानक, महावीर, बुद्ध, डा.बाबासाहब आंबेडकर इन महापुरुषों की जयंती को लेकर तिथि का आग्रह क्यो नहीं धरते? इनको मानने वाला समाज जागृत होने के कारण ब्राह्मणों की ऐसा करने की हिम्मत नहीं होती। ब्राह्मणों को चाहिए कि वे डा.आंबेडकर जयंती को लेकर तिथि का विवाद उत्पन्न करें, फिर देखते हैं क्या होता है।

मैं एक बार एक जगह शिवचरित्र पर भाषण देने के लिए गया था। तब वहा तारीख-तिथि को लेकर दो विभिन्न पार्टी मे कार्यकर्ताओं के बीच नोंक-झोंक शुरु थी। यह देख कर मुझे बहुत बुरा लगा। शिवचरित्र पर अपने विचार प्रकट करने की बजाए कार्यकर्ता जयंती की तारीख-तिथि को लेकर लड़ रहे थे। इसके पीछे बहुजनों का अज्ञान और ब्राह्मणों का क्रूरता है। किन्तु जब दोनों पार्टी के कार्यकर्ताओं को तारीख-तिथि के विवाद के मूल कारणों का पता चला तब सभी ने अपने मतभेद भूलाकर १९ फरवरी को बड़े ही धुमधाम से शिवजयंती मनायी।

शिवाजी महाराज पर वार करने वाला कृष्णा भास्कर कुलकर्णी

अफजलखान यह मुलाकात करने के नाम पर शिवाजी महाराज को मारने के लिए आया है। यह पक्की खबर रुस्तुमेजमान ने शिवाजी महाराज को दी। अफजलखान विजापूर से सीधा वाई में आया, वा तुलजापूर या पंढरपूर में नहीं गया। (संदर्भ- सेतु माधव पागडी लिखति शिवचरित्र एक अभ्यास) जनभावना भड़काने के लिए अफजलखान ने मुर्तियों की अवमानना की, ऐसा झूठा इतिहास जान-बूझकर लिखा गया। अफजलखान वाई में आते ही वतन की लालच में वाई के ब्राह्मणों ने अफजलखान से मुलाकात की तथा शिवाजी महाराज को खत्म करने के लिए हर संभव सहायता करने का उन्होंने अफजलखान को अभिवचन दिया। इस अवसर पर खान वकील मुसलमान नहीं था, बल्कि कृष्णाजी भास्कर कुलकर्णी नामक एक ब्राह्मण व्यक्ति था। उसने शिवाजी महाराज से संबंधित कई गुप्त बातें खान को बतायी अफजलखान के साथ मुलाकात के समय चिलखत पहनने के कारण शिवाजी महाराज की जान बची। शिवाजी महाराज ने अफजलखान को खत्म किया। उस समय

Scanned with CamScanner

कृष्ण भास्कर कुलकर्णी ने महाराज के माथे पर तलवार से वार किया। (संदर्भ ब॰मो॰पुरंदरे लिखित-'राजा शिवछत्रपति')

शिवाजी महाराज द्वारा अपने शरीर पर 'चिलखत' पहनने की बात का पता चलने के कारण ही कुलकर्णी ने महाराज के माथे पर वार किया। महाराज के समूचे जीवन में किसी ने भी महाराज के शरीर पर जख्म नहीं की। आग्रा, पन्हांला, शाईस्तेखान हमला आदि अवसरों पर महाराज का बाल बाँका नहीं हुआ। अफजलखान, दिलेरखान, औरंगजेब, सिध्दी जौहर, सैयद बंडा इन्हें भी महाराज के शरीर पर जख्म करने में सफलता नहीं मिली। वह काम कृष्णा कुलकर्णी ने किया। कुलकर्णी को पक्का पता था कि शिवाजी महाराज मेरी हत्या नहीं करेंगे। क्योंकि ब्राह्महत्या पाप है। यह ग्रंथों में लिखा है। किन्तु महाराज ने उनके माथे पर वार करने वाले दहशतवाद की जड़ कृष्णा कुलकर्णी के टुकड़े-टुकड़े किये। इसका मतलब महाराज ने ग्रंथों को प्रमाण नहीं माना। मूलनिवासी भूमिपुत्रों का राज निर्माण करने वाले राजा पर कुलकर्णी ने पहला बार किया था। उस समय सिध्दी इब्राहीम महाराज के अंगरक्षक थे। महाराज पर वार करने वाले सैयद बंडा को खत्म करने वाले जिवावाजी महाले भी महाराज के निष्ठावान अंगरक्षक थे, अर्थात दोस्त कौन और दुश्मन कौन? इसके बारे में पाठकों ने जरूर सोचना चाहिए। अफजलखान की कबर के बारे में आवाज उठाने वालों को जरूर सोचना चाहिए कि अफजलखान को प्रतापगढ़ तक आने में किसने सहायता की? ब्राह्मण लेखकों ने शिवाजी महाराज पर हमला करने वाले कृष्णा कुलकर्णी का 'कृष्णाजी' किया तथा शिवाजी महाराज की रक्षा करने वाले अंगरक्षरक जिवाजी महाले का 'जिवा' किया।

शिवाजी महाराज के खिलाफ लड़ने वाली रायबाधीन देशमुख

शिवाजी महाराज पन्हालगढ़ पर फँसने के बाद शाईस्तेखान पुना में आया। शाईस्तेखान को विजय हासिल हो इसके लिए रायबाधीन उदाराम देशमुख यह ब्राह्मण महिला कारतलबखान के कंधे-से-कंधा मिलाकर महाराज के खिलाफ लड़ी। उमर खिड में महाराज के शूरें सिपाहियों ने उसे पराजित किया। फिर भी मरते दम तक रायबाधीन देशमुख शिवाजी महाराज के खिलाफ लड़ी। इसका मतलब ब्राह्मणों को शिवाजी महाराज के स्वराज से ज्यादा औरंगजेब-आदिलशहा का राज प्रिय था। रायबाधीन का पति उदाराम देशमुख

Scanned with CamScanner

यह भी मुगलों का सरदार था। उसकी अचानक मृत्यु के कारण मुगलों ने रायबाधीन देशमुख को सरदार पद बहाल किया था। इसलिए रायबाधीन देशमुख मुगलों को खुश करने के लिए शिवाजी महाराज के खिलाफ लड़ रही थी। कारतलबखान के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने वाली रायबाधीन देशमुख शाईस्तेखान की शुभचिन्तक थी।

दिलेरखान की सफलता के लिए कोटीचंडी यज्ञ करने वाले 400 ब्राह्मण

छ० शिवाजी महाराज को पराजित करने के लिए जयसिंह समेत दिलेरखान लाखों सिपाही लेकर पुरंदर आया। दिलेरखान को शिवाजी कि खिलाफ लड़ाई में सफलता मिले इसके लिए पुना में 400 ब्राह्मणों ने दिलेरखान से मुलाकात कर उसे कोटीचंडी यज्ञ करने की सलाह दी। शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित स्वराज की समाप्ति हो और दिलेखान की विजय हो इसके लिए 400 ब्राह्मणों कोटीचंडी यज्ञ के अनुष्ठान को बैठे। इस कार्य के लिए ब्रा ह्मणों ने दिलेरखान से 2 करोड़ होन (6 करोड़ रुपये) लिए। इसका मतलब यह हुआ कि विजय चाहे किसी की भी क्यों न हो, हमें पैसा मिले और शिवाजी दिलेरखान इनके बीच युद्ध हो, ऐसी मंशा रखने वाले ब्राह्मण ही शिवाजी महाराज के सही दुश्मन थे। इस यज्ञ के कारण ही दिलेरखान को प्रेरणा मिली और शिवाजी महाराज पराजित हुए। (संदर्भ-सभासद लिखित-श्रीशिवप्रभुंचे चरित्र)

यहाँ पर शिवाजी महाराज की एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका नज़र आती है, वह यह कि शिवाजी महाराज ने कोटीचंडी यज्ञ नहीं किया। पुना के ब्राह्मणों के लिए दिलेरखान की बजाए शिवाजी महाराज जिस राजगड पर रूके हुए थे उस रायगड का अन्तर काफी नजदीक था, किन्तु ब्राह्मणों ने दिलेरखान से सही मुलाकात क्यों की? पहले ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज को कोटीचंडी यज्ञ करने की सलाह दी होंगी किन्तु महाराज ने ऐसा करने से साफ इन्कार किया। इसका मतलब शिवाजी महाराज का ऐसी विधियों पर यकीन नहीं था, यह बात साबित होती है यज्ञ, अभिषेक, सत्यनारायण पुजा-अर्चना, ग्रंथ पठन करने मात्र से समस्याएँ हल होने वाली नहीं है, इस बात का शिवाजी महाराज को पूरा ऐहसास था। इसलिए महाराज से पैसे ऐंठने का ब्राह्मणों का दांव-पेंच

Scanned with CamScanner

सफल नहीं हुआ।

अर्थात ब्राह्मणों का ध्यान पैसा, सत्ता और सम्पत्ति पर होता है, इसके लिए वे किसी का भी साथ देते हैं, और झगड़ा लगाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं, और यही कारण है कि शिवाजी महाराज को खत्म करने के लिए पुना के ब्राह्मणों ने दिलेरखान का साथ दिया क्योंकि ब्राह्मणों को लगा होगा कि दिलेरखानै-जयसिंह के तुफान के आगे शिवाजी महाराज टिकने वाले नहीं है। यही कारण है कि पुना के ब्राह्मणों ने मुगलों का साथ दिया। किन्तु महाराज ने 'करार' के माध्यम से विजय हासिल की और आगे जब महाराज की सफलता का आलेख़ बढ़ने लगा तब कहीं जाकर ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज को साथ देने का नाटक किया। ब्राह्मणों का शिवाजी महाराज को साथ देना एक नाटक मात्र था यह बात शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के समय सामने आती है।

राजा जयसिंह का सचिव उदयराज

उदयराज नामक ब्राह्मण राजा जयसिंह का सचिव था। उसने राजा जयसिंह को ज़हर देकर मार डाला। जयसिंह के महत्वपूर्ण दफ्तर पर उसने कब्जा जमा लिया। वो आगे औरंगजेब के पास गया और मुसलमान बना। उदयराज का तालियारखान हुआ। इसी तालियारखाना का लड़का हिदायतखान मुगलों के प्रशासन में था। जहाँ प्रतिष्ठा है, वहां ब्राह्मण पहले जाता है। यहीं ब्राह्मणी संस्कृति है।

औरंगजेब का प्रधान रघुनाथदासः

रघुनाथदास नामक ब्राह्मण औरंगजेब का प्रधान था। शिवाजी महाराज का राज समाप्त हो इसके लिए वो निरंतर प्रयासरत था। औरंगजेब के प्रति प्रेम के कारण वो बाद ाहा के पास नहीं था। पैसा और प्रतिष्ठा मिले इसके लिए वो बादशाहा के साथ खड़ा था। ब्राह्मणों का प्रेम केवल पैसा और ब्राह्मणी व्यवस्था पर होता है, और उसके लिए ब्राह्मण हर तरह की कीमत चुकाते हैं, सनातनी होने के साथ-साथ वे प्रगतीशील होने का भी नाटक करते हैं, किन्तु आपने-आपको प्रगतीशील, सनातनी, विज्ञानवादी, दैववादी कहलाने वाले सभी ब्राह्मण एक समान ही होते हैं।

औरंगजेब का सिपहसालार आबाभट

औरंगजेब की नौकरी करने वाला आबाभट नामक ब्राह्मण 'शिवनेरी'

Scanned with CamScanner

किले का सिपहसालार (किलेदार) था। शिवाजी महाराज ने 'शिवनेरी' किला जितने के लिए आबाभट पर जब हमला किया तब अपने प्राण बचाने हेतु, मैं यह किला आपके कब्जे में देता हूँ, ऐसा आबाभसट ने शिवाजी महाराज को कहा। किन्तु आबाभट ने किला तो दिया ही नहीं। उल्टा वो औरंगजेब के पास भाग गया और मुसलमान बना। आबाभट का अब्दुल अज़ीज हुआ। किन्तु आंज के ब्राह्मण प्रचार करते हैं कि यदि शिवाजी महाराज नहीं होते तो सब की सुन्नत हो गई होती।

यहाँ सवाल खड़ा होता है कि शिवाजी महाराज के रहते हुए भी आबाभट ने सुन्नत क्यों की? शिवाजी महाराज का नाम लेकर भारतवासियों को डर बताना और स्वयं मुसलमानों के साथ यारी करना, यह ब्राह्मणों की हजारों साल की चाल है। इसलिए मुसलमान, बौद्ध, इसाई हमारे दुश्मन नहीं है। बल्कि ब्राह्मण ही सही मायने में भारतवासियों के दुश्मन है।

सिध्दी की मदद करने वाले मुरगुड नांदगांव के जोशी

शिवाजी महाराज के जीवन की सबसे दुःखद बात यह थी कि वे 'जंजीरा' किला कभी भी हासिल नहीं कर सके। महाराज ने कई बार प्रयास किया, किन्तु उन्हें यह किला हासिल करने में सफलता नहीं मिली। फिर भी महाराज निराश नहीं हुए। महाराज 'जंजीरा' किला क्यों नहीं जीत सके, इसके पीछे क्या राज छुपा हुआ था? इन सवालों का जबाव ढुँढ़ना जरूरी है। मुरगुड नांदगांव में रहने वाला जोशी नामक ब्राह्मण सिध्दी के साथ था, इसलिए महाराज 'जंजीरा' नहीं जीत सके। जोशी ने सिध्दी को किला बनाने की सलाह दी तथा उसके शिलान्यास का मुहूर्त बताया। सिध्दी ने (हबशी ने) ठीक वैसा ही किया। जोशी ने हबशी को बताया कि, ''आप ने मुहूर्त पर किला बनाया इसलिए जंजीरा अब 300 साल तक आपके पास ही रहेगा। कोई भी व्यक्ति इसे आपसे जीत नहीं पाएगा।

इसका मतलब दक्षिणा के रुप में ढेर साला पैसा लेने वाले जोशी को शिवाजी महाराज की बजाए सिध्दी की ज्यादा चिंता थी। जोशी द्वारा दिए गए वरदान के कारण ही सिध्दी को मस्ती चढ़ गई थी। उसने संभाजी महाराज को भी काफी तकलीफ दी। जोशी के वरदान के कारण ही सिध्दी का आत्मविश्वास बढ़ा तथा अवाम में डर का वातावरण फैला। क्योंकि उस समय महाराज

Scanned with CamScanner

विज्ञाननिष्ठ थे, किन्तु सामान्य जनों पर देवी-देवताओं का काफी प्रभाव था और इसी कारण 'जंजीरा' जीतते समय मावलों (सिपाहियों) के मन में डर का वातावरण था। जिनके मन में डर का वातावरण होता है वे हथियारों से परिपूर्ण होने के बावजूद भी दुश्मन को पराजित नहीं कर सकते। शिवाजी महाराज को जोशी के षड्यंत्रों की पूरी जानकारी थी फिर भी उन्होंने इन बातों को नजर-अंदाज किया तथा 'जंजीरा' पर हमला चढ़ाया। मगर वे जंजीरा हासिल नहीं कर पायें।

'जंजीरा' से भी ज्यादा मुश्किल किलों पर महाराज ने फतह हासिल की थी। 'पन्हाला' किला कोंडाजी फर्जंद ने केवल पचास सिपाहियों को साथ लेकर जीता था। किन्तु 'जंजीरा' हासिल करने के लिए लाखों रुपये खर्च किए गए, हजारों सिपाहियों का बलीदान देना पड़ा फिर भी किला सिध्दी के ही कब्जे में रहा। इस असफलता का कारण था मुरगुड नांदगांव का जोशी। सिध्दी की सफलता के लिए प्रयास करने वाला और समाज में डर का वातावरण निर्माण कर हीनभावना निर्माण करने वाला जोशी नामक ब्राह्मण ही शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित 'स्वराज' तथा शिवाजी महाराज का वास्तविक दुश्मन था।

मरगुड नांदगांव के जोशी को जैसे शिवाजी महाराज के प्रति प्रेम नहीं था वैसे ही सिध्दी के प्रति भी प्रेम नही थी। फिर भी सिध्दी को 'जंजीरा' किला बनाने हेतु जोशी ने मुहूर्त-पंचांग द्वारा सहायता की। इस माध्यम से जाशी को ढेर सारी दौलत मिली और इसलिए उसने सिध्दी को मदद की। इसका मतलब अपनी अर्थसत्ता मजबूत करना यही ब्राह्मणों का उद्देश्य होता है। जोशी ने पंचांग द्वारा ब्राह्मणी व्यवस्था मजबूत करने का प्रयास किया।

300 साल तक इस किले को आप से कोई जीत नहीं सकता ऐसा वरदान देने वाले जोशी ने एक अर्थ से भविष्यशास्त्र का महत्व विषद करने का प्रयास किया। भविष्यशास्त्र यह ब्राह्मणें के जीने का तथा बहुजन समाज को हमेशा गुलाम बनाने का शास्त्र है। जोशी ने सिध्दी से ढ़ेर सारी धन-दौलत तो हासिल की ही, साथ ही बहुजन समाज को 300 साल का डर भी बताया। शिवाजी महाराज ही नहीं, उनकी किसी भी पीढ़ी को इस किले पर विजय हासिल कर पाना संभव नहीं होगा, यह जहरीला ब्राह्मणी विचार जोशी ने

Scanned with CamScanner

बहुजनों के दिलों-दिमाग में बिठाया।

यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि किले पर विजय पाने का शिवाजी महाराज ने प्रयास किया। उनके पश्चात संभाजी महाराज ने भी जंजीरा की महत्वकांक्षी योजना अपने हाथ में ली किन्तु अचानक औरंगजेब का महाराष्ट्र पर आक्रमण होने के कारण संभाजी महाराज को यह योजना अधूरी ही छोड़नी पड़ी। अन्यथा संभाजी महाराज ने इस क्रूर ब्राह्मणी व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई खड़ी की होती।

मथूरा के ब्राह्मणों को दम देने के कारण ही संभाजी सुरक्षित

शिवाजी महाराज आगरा की कैद में फँसने के बाद महाराष्ट्र में रुके जयसिंह और दिलेरखान को ब्राह्मणों ने काफी सहायता की। ऐसे कठिन समय में भी जिजाऊ माँ साहब ने खंबीर रुप से स्वराज की रक्षा की। एक भी किला जयसिंह जीत नहीं सका। एक इंच भूमि भी आदिलशहा, मुगलों को जितने न देने वाली जिजाऊ माँ साहब जैसी निर्भय माता अपने स्वराज की रक्षा कर रही थी, इसलिए महाराज आगरा से भेष बदलकर बाहर निकलने में कामयाब हुए। (महाराज मिठाई के पिटारे में बैठ कर नही बल्कि भेष बदलकर कैद से बाहर निकले) उस समय महाराज काफी चिन्तित थे। लंबा अंतर, सफर का कोई साधन नहीं, हर कदम पर दुश्मन का खतरा और साथ में अपना नऊ साल का पुत्र संभाजी। ऐसे समय पर संभाजी को कहा पर रखा जाए? यह सवाल महाराज के सामने था। उस समय मोरोपंत पिंगले के रिश्तेदार मथुरा में निवास करते थे। संभाजी को उनके घर पर रखने का निर्णय महाराज ने लिया। परन्तु महाराज को यह डर था कि कहीं पैसे की लालच में आकर ये ब्राह्मण संभाजी को दुश्मन के हवाले न कर दे। क्योंकि शिवाजी महराज ब्राह्मणों की आदत के बारे में अच्छी तरह से वाकीफ थे। कितनी भी दोस्ती होने के बावजूद स्वार्थ की खातिर ब्राह्मण खातिर ब्राह्मण दोस्तों का कैसे गला घोंटते हैं इस प्रचीन काल के इतिहास से महाराज भलि-भाँति वाकिफ थे। शिवाजी महाराज ने संभाजी को त्रिमल बंधु के हवाले किया। केवल हवाले ही नहीं किया बल्कि त्रिमल बंधुओं को चेतावनी भी दी कि यदि संभाजी का बाल भी बांका हुआ तो आपकी खैर नहीं। त्रिमल बंधुओं को ऐसी चेतावनी देने के साथ ही संभाजी को भी अकेले में मार्गदर्शन किया तथा महाराज लौट आयें। अफजल खान,

Scanned with CamScanner

शाईस्तजेखान, जयसिंह और औरंगजेब के नाक में दम करने वाले शिवाजी महराज हमारा एक भी वंश शेष नहीं रखेंगे इसका त्रिमल बंधुओं को डर था। इसलिए वे शिवाजी महाराज के साथ दगाबाजी नहीं कर सके इसका मतलब यह भी हुआ कि त्रिमल बंधुओं ने संभाजी को प्रेम की खातिर नहीं बल्कि डर के कारण संभाला था। (संदर्भ-छ॰संभाजी स्मारक ग्रंथ, पृ॰1178, डॉ॰जयसिंह पवार)

राजाराम के जन्म के समय शिवाजी महाराज को डर बताने वाले सनातनी

शिवाजी महाराज को सोयराबाई के पेट से 24/2/1670 को राजाराम नामक लड़का हुआ। लड़के का जन्म औंधे मूँह हुआ था। उस समय एक पंडित ने महाराज को डर बताया कि औंधे मूँह जन्म होना अशुभ माना जाता है। महाराज के मन में डर निर्माण कर यज्ञ, अभिषेक, सत्यनारायण पुना-अर्चना अनुष्ठान करने की सलाह देना और महाराज से पैसा ऐंठना, सोना ऐंठना यह पंडित का दांव था। परन्तु महाराज एक हाशियार राजा थे। उन्होंने उस पंडित के दांव को पहचाना। महाराज उसे कहने लगे ''चूँकि मेरे ़लड़के का जन्म औंधे मूँह हुआ है, इसका मतलब वो दिल्ली की 'पातशी' (दिल्ली का तख्त) को औंधे मूँह किये बगैर नहीं रहेगा।'' महाराज द्वारा ऐसा कहने पर वो पंडित पूरा ठंडा होगा। क्योंकि शिवाजी महाराज मेरे वश में आने वाले नहीं हैं, इस बात का उसे यकीन हो गया था। परन्तु महाराज को कदम-कदम पर डर बताकर निराश करने का ब्राह्मणों ने प्रयास किया। औरंगजेब, आदिलशहा, सिध्दी, पुर्तगाली डच, अफजलखान, दिलेरखान, शाईस्तेखान ये लोग शिवाजी महाराज के खुले दुश्मन थे, वे महाराज के राजनीतिक दुश्मन थे, धार्मिक नहीं। ठनके खिलाफ महाराज दांव-पेंच बनाते थे। उन्हें महाराज ने कई बार पराजित भी किया। किन्तु दोस्ती का मुखौटा पहनकर बहुजन प्रतिपालक छत्रपति शिवाजी महाराज का काँटा निकालने वाले ब्राह्मण, यही महाराज के सही दुश्मन थे। क्योंकि उनके खिलाफ दांव-पेंच बनाना महाराज को संभव नहीं हो पाया और इसी कारणवश ब्राह्मण शिवाजी महाराज के साथ विश्वासधात कर सके। यही कारण है कि शिवाजी महाराज को पुरंदर का करार करना पड़ा। आगरा जाना पड़ा तथा औरंगजेब की नजर कैद में फँसना पड़ा।

Scanned with CamScanner

बापुखान को मदत करने वाला नागोजी पंडित

बापुखान यह आदीलशाही में पन्हाला किले का किलेदार था। पन्हाला जितने के लिए शिवाजी महराज ने कोंडाजी फजद इन्हें भेजा। कोंडाजी ने बापुखान पर हमला किया, उस समय नागोजी पंडित नामक ब्राह्मण आदिलशहा के प्रशासन में बापुखान के सहायक के तौर पर काम करता था। बापुखान के पराजित होने की खबर सुनते ही नागोजी पंडित भाग गया। खाने के लिए आगे और मरने के लिए पीछे, उसे पंडित कहते हैं पैसा और प्रतिष्ठा के लिए ब्राह्मण किसी केभी साथ साँठगाठ करते हैं और देश में फँसाद करवाते हैं।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध

मुगल, आदिलशहा, अंग्रेज और पुर्तगालियों की गुलामी से देशवासियों को मुक्त करने के बाद शिवाजी महाराज ने अपना राज्याभिषेक करने का फैसला किया। बाहरी सत्ता शिवाजी महाराज को शहाजी राजा इस जहाँगीरदार का क्रान्तिकारी पुत्र समझते थे, तथा ब्राह्मण तो महाराज को राज मानने के लिए भी तैयार नहीं थे। अन्य राजाओं से वार्तालाप, करार करते समय दिक्कत आती थी। इन दिक्कतों को दूर करने के लिए तथा बहुजन भी खुद का स्वतंत्र राज एवं राजा निर्माण कर सकते हैं, यह आत्मविश्वास निर्माण कर हजारों साल की गुलामी समाप्त करने के लिए ही शिवाजी महाराज ने अपना राज्याभिषेक करने का निर्णय लिया। शिवाजी महाराज द्वारा राज्याभिषेक की घोषणा करते यही हिन्दू धर्म द्वारा महाराज का पुरजोर विरोध हुआ।

हिन्दू धर्म क्या है? इसे भी समझना होगा। हिन्दू धर्म का मूल प्राचीन नॉन वैदिक धर्म है। 'वेद' हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रंथ हैं, जिन्हें ब्राह्मणों के अलावा सभी को पढ़ने पर पाबंदी थी। वैदिक धर्म को आगे चलकर ब्राह्मण धर्म कहा जाने लगा। समूचे बहुजन समाज का सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने के लिए ब्राह्मणों ने 'ब्राह्मण धर्म' इस नाम का त्याग किया और 'हिन्दू' यह नाम धारण किया।

आज जो हिन्दू धर्म दिखायी देता है वह मूलतः वैदिक धर्म-ब्राह्मण धर्म है, और यही कारण है कि हिन्दू धर्म के किसी भी धर्म ग्रंथ में इस शब्द का जिक्र तक नहीं है, परन्तु वेद, वैदिक, ब्राह्मण इन शब्दों का जरूर जिक्र मिलता है। हिन्दू धर्म के प्रमाण माने जाने वाले धर्म ग्रन्थ ब्राह्मणों द्वारा रचित

Scanned with CamScanner

है। इसलिए वे ब्राह्मणों के फायदे के तथा बहुजनों की बदनामी करने वाले हैं। हिन्दुत्व का दूसरा नाम ब्राह्मणवाद है। हिन्दू के नाम पर मलाई (क्रीम) ब्राह्मणों को मिलती है और बहुजनतांक के लिए लड़ते हैं। हिन्दुत्व के लिए जोशी, देशपांडे, कुलकर्णी, भिडे, ठाकरे, एक बोटे कभी नहीं मरते। परन्तु हिन्दुत्व के नाम पर जब सत्ता आती है तब सभी प्रमुख पद ब्राह्मण हथियाते हैं। मरने के लिए मराठा और चरने के लिए ब्राह्मणवादी इसी का नाम हिन्दुत्व है। 'हिन्दू' यह विदेशियों (मुगलों) ने पराजित भारतवासियों को दिया हुआ नाम है। हिन्दू शब्द का अर्थ है दास, पराजित, गुलाम।

औरंगजेब ने जब भारतवासियों के लिए 'जिजिया कर' लगाना शुरू किया तब ब्राह्मणों का एक प्रतिनिधि मंडल औरंगजेब से जाकर मिला और कहने लगा कि हम जिजिया कर भरने वाले नहीं हैं। औरंगजेब द्वारा इसका कारण पूछने पर ब्राह्मणों ने दलील दी कि 'हम भारतीय नहीं हैं। हम भी आप ही की तरह विदेश से यहाँ पर आयें है। इसलिए हम भारतीय अर्थात हिन्दू नहीं है। हम आपके लिए हिन्दुओं से जिजिया कर वसूल करके जरूर ला सकते है।' जिन ब्राह्मणों ने अपने पुरखों से जिजिया कर वसूल कर मुगलों को दिया वही ब्राह्मण आज हिन्दुत्व के ठेकेदार हैं। वे हमेशा हमारे सामने आकर कहे हैं 'गर्व से कहो हम हिन्दू है।' अर्थात गर्व से कहो हम पराजित हैं, दास हैं, गुलाम हैं, ऐसा हम लोगों से कहलवाते हैं।

इसलिए बालासाहब ठाकरे के पिता प्रबोधनकार ठाकरे कहते हैं, हिन्दूधर्म यह बिन पेंदे का लोटा है। हिन्दू धर्म यह भटों द्वारा निर्मित एक पहेली है। बहुजनों को फँसाने वाला धर्म यानि हिन्दू धर्म है। बहुजनों को लूटने में हिन्दू धर्म के मंदिर अव्वल नम्बर पर हैं। हिन्दू धर्म के पुराण अर्थात शौचालय (संडास) हैं। बहुजनों को गुलाम बनाने के लिए भट ब्राह्मणों ने अनेक ग्रंथों की रचना की। (संदर्भ-देवळाचा धर्म आणि धर्माची देवळे) तात्पर्य, हिन्दुत्व ही ब्राह्मणवाद है। जब हम सही सत्ता हासिल करते है तब हिन्दुत्ववादी अर्थात ब्राह्मण उस सत्ता का उपयोग करने का विरोध करते हैं।

जैसे ही शिवाजी महाराज ने अपने राज्याभिषेक की घोषणा की, सभी ब्राह्मण ने शिवाजी महाराज का शूद्र कहकर विरोध किया। परशुराम नामक ब्राह्मण ने धरती के सारे क्षत्रियों को इक्कीस बार समाप्त किया है इसलिए एक

Scanned with CamScanner

भी क्षत्रिय शेष नहीं है। ब्राह्मणों को छोड़ शेष सभी शूद्र है। शूद्रों को राजा बनने का अधिकार नहीं है, ऐसा डंका पिटनेवाले ब्राह्मणों ने मुस्लिम राजाओं को कभी विराध नहीं किया। बल्कि उलटा मुस्लिम राजाओं के प्रशासन में ब्राह्मणें का भरणा था। इसका मतलब मुसलमानों को खुशी से राज करने देने वाले ब्राह्मण शिवाजी महाराज के खिलाफ एक साथ खड़े हुए तब शिवाजी महाराज को लगा कि चाहे ब्राह्मणों ने विरोध किया हो किन्तू मेरे सहकारी मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तों आदि ब्राह्मण मित्र मंत्री सहयोग करेंगे, परन्तु महाराज का अपेक्षा भंग हुआ।

मोरेपंत पिंगले भरे दरबार में महाराज से कहने लगा कि आप शूद्र मराठों के हाथ के नीचे हम ब्राह्मण कैसे काम कर सकते हैं? सहयोगी ब्राह्मणों ने भी शिवाजी महाराज का खुलकर विरोध किया। इसका मतलव ब्राह्मण आखिर ब्राह्मण ही होता है यह पंत ने बता दिया।

ब्राह्मण मित्र हो सकता है लेकिन समय आने पर वही ब्राह्मण अपने मित्र की पीठ में छूरा घोंपने का काम करता है, यह मोरापंत पिंगले ने बता दिया। सभी ब्राह्मण ने शिवाजी महाराज को तकलीफ देना प्रारंभ किया। जिन शिवाजी मराहाज ने अपने सभी ब्राह्मण सहकारियों को अपनी जान से भी ज्यादा तवज्जों दिया, संकट के समय उनकी सहायता की, वही ब्राह्मण शिवाजी महाराज के साथ दुश्मन की तरह व्यवहार करने लगे। स्वराज के तथा बाहरी राज्य के सभी ब्राह्मण इकट्ठा हुए। ब्राह्मण किसी भी गुट में, पार्टी में, संगठन में, संस्था में, पंथ में क्यों न हो मगर अंदर से सभी ब्राह्मण एक समान होते हैं, यह बात राज्याभिषेक के समय साबित हुई। विदेश से यहाँ आये ब्राह्मणों ने खूद के स्वार्थ के लिए लिखे झूठे ग्रंथो का आधार लेकर शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध किया। शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक करने के लिए कोई धर्म-संहिता एवं पुरोहित नहीं मिलना चाहिए, इसके लिए ब्राह्मणों ने पुरजोर प्रयास किया फिर भी राज्याभिषेक करने का महाराज ने फैसला किया।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का ब्रह्मणधर्म ने अर्थात हिन्दू धर्म ने बड़े पैमाने पर विरोध किया। दूसरी तरफ शिवाजी महाराज को हिन्दू धर्म रक्षक, हिंदवी स्वराज के संस्थापक कहा जाता है, यह शिवाजी महाराज की क्रूर चेष्ठा है। जिन्होंने विरोध किया उनके लिए ही महाराज

अपना राज्य कैसे निर्माण कर सकते हैं? शिवाजी महाराज का हिन्दू, हिन्दवी, हिन्दुत्व इन शब्दों का जिक्र नहीं है। शिवाजी महाराज का इस्तेमाल करने के लिए ये शब्द बाद में शिवचरित्र में शामिल किये गये। शिवाजी महाराज ने बहुजनों का स्वराज निर्माण किया। शिवाजी महाराज यदि हिन्दुत्व के लिए लड़े तो हिन्दुओं ने राज्याभिषेक का विरोध क्यों किया? जब सभी ब्राह्मणों ने राज्याभिषेक का विरोध किया तब समूचा बहुजन समाज शिवाजी महाराज के साथ खड़ा रहा। सभी मराठा भी शिवाजी महाराज के साथ खड़े हुए। एक भी मराठा शिवाजी महाराज के खिलाफ नहीं था। जिन मराठों ने पहले शिवाजी महाराज का विरोध किया था वह अज्ञानतावश किया था, रामदास की बातें सुनकर किया था।

हिन्दू धर्म द्वारा शिवाजी महाराज की प्रताड़ना

सन् 1668 से शिवाजी महाराज ने रायगड पर अपनी राजधानी बनायी थी। रायगड यह एक मुश्किलों भरा और सुरक्षित किला है। इस किले की लम्बाई 4 कि॰मी॰ तथा रूंदी 1 कि॰मी॰ है। किले के इर्द-गिर्द ऊँची पर्वत छटाएँ है। किसी भी दुश्मन को रायगड किला जीत पाना असंभव है। ऐसे रायगड का शिवाजी महाराज ने राजधानी के लिए चयन किया। किले का निर्माण शिवाजी महाराज ने अपनी देखरेख में किया। इसके साथ ही अन्य दूसरे किलो भी बनवाये। वे एक उत्तम ईजिनियर थे।

ऐसे रायगड पर राजधानी बनाने का शिवाजी महाराज ने फैसला किया। राज्याभिषेक का दिन जैसे-जैसे नजदीक आने लगा कि वैसे-वैसे ब्राह्मणों ने षड्यंत्र करना प्रारंभ किया। परन्तु राजमाता जिजाऊ माँ साहब खंबीर रूप से शिवाजी महाराज के साथ खड़ी थी। उस समय माँ साहब की उम्र 76 साल की थी। इस उमर में भी माँ साहब का साहस, करारापन तेज था।

राज्याभिषेक करने के लिए एक भी ब्राह्मण नही मिलना चाहिए इसका ब्राह्मणों ने बिड़ा उठाया था। तब कायस्थ जाति के बालाजी आवजी नामक शिवाजी महाराज के विश्वासी व्यक्ति ने पुरोहितों का शोध शुरु किया। ब्राह्मणों और कायस्थों के बीचदुश्मनी होने के कारण कायस्थ शिवाजी महाराज के साथ थे। बालाजी आवजी ने महाराष्ट्र के सभी भट-ब्राह्मणों से मूलाकात कर पौरोहित्य करने का आग्रह किया मगर सभी ने शिवाजी शूद्र कहकर

Scanned with CamScanner

राज्याभिषेक के लिए आने से इन्कार किया। तब बालाजी आवजी ने गागाभट को बुलाने हेतु केशव भट, भालचंद्र भट और सोमनाथ भट इन तीन ब्राह्मणों को काशी भेजा।

गागाभट ने इन तीनों को कहा कि शिवाजी शूद्र होने के कारण मैं नहीं आ सकता। (ब्राह्मण हमारे देश में आने से पूर्व कोई भी हलका नहीं था, कोई भी सवर्ण नही था, सभी समान थे। परन्त हमारे ऊपर राज करने के लिए ब्राह्मणों ने वर्ण, जाति निर्माण कर अपना वर्चस्व कायम किया। इसका प्रचार करने के लिए ब्राह्मणों ने ग्रंथों की रचना की। उसे ही हिन्दू धर्म के ग्रंथ कहा जाता है। इन ग्रंथों ने ही शिवाजी महाराज को शूद्र घोषित किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीनों विदेशी आर्यो के वर्ण है। मूल भारतीयों को आर्यो ने शूद्र घोषित किया।)

केशवभट, भालचंद्रभट, सोमनाथभट और गागाभट इन चार भट ब्राह्मणों के बीच गुप्त रूप से खिचड़ी पकने के कारण बालाजी आवजी ने अपने विश्वस्त कायस्थ जाति के निलो येसासजी को फिर से गागाभट के पास भेजा। इस समय शिवाजी महाराज मूलतः उदयपूर के होने के झूठे सबूत बालाजी आवाजी ने गागाभट्ट के पास भेजे। शिवाजी महाराज के भोसले वंश का राजस्थान में कोई संबंध ने होकर भोसले वंश मूलतः महाराष्ट्र के वेरूल में रहने वाले हैं, यह बात बालाजी आवजी और गागाभट्ट को भी भलि-भाँति पता थी। बालाजी आवजी द्वारा पैसे का लालच देते ही गागाभट्ट अपने सभी ग्रंथ लपेटकर रायगड के तल में बसे पाचाड में आया। ब्राह्मण ग्रंथ और भगवान के पिता (निर्माता) होने के कारण गागाभट्ट को ग्रंथ से ज्यादा पैसा प्यारा लगा।

गागाभट्ट के पाचाड में आते ही मोरोपंत ने गागाभट्ट से मुलाकात की और राज्याभिषेक होता है तो ब्राह्मणों का वर्चस्व समाप्त होकर शिवाजी श्रेष्ठ साबित होंगे, इसलिए आप उनका राज्याभिषेक न करने की सलाह मोरोपंत पिंगले ने गागाभट्ट को दी। गागाभट्ट ने तुरन्त गिरगिट की तरह अपना रंग बदला और शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक करने से इन्कार कर दिया।

शिवाजी शूद्र होने के कारण उनकी बजाए बालाजी आवजी का राज्याभिषेक करने का फैसला गागाभट्ट ने लिया। इसका मतलब राज निर्माण किया शिवाजी महाराज ने और फैसला लेता है भट-ब्राह्मण। कायस्थों की

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज पर नितांत श्रध्दा होने के कारण शिवाजी महाराज और कायस्थों के बीच फूट के लिए गागाभट्ट ने यह दांव खेला।

बहुजनों में व्याप्त कर्तुत्ववान नेतृत्व को समाप्त करने के लिए निष्क्रिय व्यक्ति को नेता का पद देना और सत्ता सुत्र अपने हाथ में लेना, यह ब्राह्मणों का हमेशा का दांव होता है। इसलिए गागभट्ट ने बालाजी आवजी का नाम आगे किया परन्तु मोरोपंत पिंगले समेत सभी ब्राह्मणों की और कायस्थ बालाजी आवजी की कट्टर दुश्मनी होने के कारण बालाजी आवजी का नाम पीछे पड़ा। राज्याभिषेक के लिए बालाजी आवजी की तुलना शिवाजी महाराज से ज्यादा पैसा ऐंठने को मिलेगा और बालाजी आवजी का राज्याभिषेक करता हूँ तो शिवाजी महाराज तथा समूचि प्रजा ब्राह्मणों को काँट डालेगी। इस डर से तथा पैसे की लालच में आकर शिवाजी महरासज का राज्याभिषेक करने का तय हुआ। पहले क्षत्रिय के तौर पर बालाजी का राज्याभिषेक करने का फैसला लेने वाले गागाभट्ट ने कायस्थ कैसे हलके हैं, यह साबित करने के लिए 'गागाभट्टीय' नामक ग्रंथ लिखा। मोरोपंत पिंगले के ताल पर नाचने वाला गागाभट्ट पल-पल पगड़ी घुमाकर गिरगिट की तरह रंग बदल रहा था।

शिवाजी महाराज ने अपना खून-पसीना एक कर अपना राज कायम किया परन्तु महाराज श्रेष्ठ है, या कनिष्ठ हैं, यह तय करने का काम ब्राह्मण कर रहे थे, राज्याभिषेक का खुशी का माहौल, परन्तु ब्राह्मणों द्वारा विवाद उत्पन्न करने के कारण किले पर चिंता एवं तनाव का माहौल था, जिन्हें हम अपना कहते हैं उन भट-ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज का शुरू से ही विरोध किया था और अब महाराज के राज्याभिषेक के खिलाफ एक साथ सभी खड़े थे।

शिवाजी महाराज राज्याभिषेक तय करेंगे और उसके लिए मुझे ढ़ेर सारा पैसा मिलेगा इस वजह से गागाभट्ट राज्याभिषेक के लिए तैयार हुआ। पैसा मिलते ही शूद्रों को क्षत्रियत्व बहाल करना और ब्राह्मणों की अर्थात हिन्दुत्व की गुलामी को नकारने वाले को शूद्र-दास संबोधना यह ब्राह्मणों का हजारों साल का फँटा है। शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक करना यह ब्राह्मणों का धंधे का मामला था, उनके प्रति प्यार कतई नहीं था।

बालाजी आवजी द्वारा पैसे की लालच बताते ही गगाभट्ट राज्याभिषेक

करने के लिए तैयार हुआ। अपने साथ-साथ अन्य ब्राह्मणों को भी फायदा होगे ऐसी व्यवस्था गागाभट्ट ने की। राज्याभिषेक का दिन तय हुआ। शिवाजी महाराज के सभी बहुजन सहकारी राज्याभिषेक की तैयारी में जुट गए। हिरोजी फर्जंद, मदारी मेहत्तर, हंबीरराव, मोहिते, नागोजी जेधे, येसाजी कंक आदि सहकारी मेहमानों की व्यवस्था करना आदि कामों में जुट गये। जिजाऊ माँ साहब की इन सब गतिविधियों पर बारीके से नजर थी। शिवाजी महाराज ने माँ साहब के दर्शन लिए।

राज्याभिषेक के लिए सभी ब्राह्मणों द्वारा विरोध करने के कारण माँ साहब बहुत गुस्से में थी। धर्म-संस्कृति के नाम पर ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज की प्रताड़ना करने के कारण बहुजन समाज में कमाल की बेचैनी थी। खुद की स्वतंत्र धर्म-संहिता होने के कारण वैदिकों उर्फ ब्राह्मणों के अर्थात हिन्दू के धर्म ग्रंथों पर महाराज को निर्भर रहना पड़ा। (इसलिए आज शिवाजी महाराज की प्रेरणा से शिवधर्म की स्थापना हुआ है। 17 वीं सदी में यदि शिवधर्म होता तो भटों के विरोध करने का कोई कारण नहीं रहता। धर्म यह भट-ब्राह्मणों का होने के कारण राज्याभिषेक के अवसर पर सभी ब्राह्मण ने शिवाजी महाराज की प्रताड़ना की और ढ़ेर सारा पैसा लूटा।)

राज्याभिषेक के अवसर पर 'व्रात्यास्तोम' करने के लिए गागाभट्ट ने 7000 (सात हजार) होन लिए तथा अन्य ब्राह्मण पुरोहितों के लिए 17000 होन लिए। महाराज के 5 जून के स्नान के समय उपस्थिसत प्रत्येक ब्राह्मण को 100 होन दिए गये। राज्याभिषेक को 50,000 (पचास हजार) ब्राह्मण उस्थित थे, ऐसा 'सभासद' लिखता है। इसका मतलब मुफ्त में खाना और होन मिलेंगे इसलिए सफर का कोई आधुनिक साधन न होते हुए भी देशभर से पचास हजार ब्राह्मण रायगढ़ जैसी दुरदाराज वाली मुश्किल राह भरी जगह पर आये थे। शिवाजी महाराज की सुवर्णतुला की गई। महाराज का वजन 160 पौंड अर्थात 17000 होन हुआ। वे होन, घी, तूप, शक्कर, फल, सुपारी, रूपये, तांबा, लोहा ब्राह्मणों ने लिया। इसके लिए लगभग 50, 0000 होन खर्च हुए।

7 जून, राज्याभिषेक के दूसरे दिन प्रत्येक ब्राह्मणों ने 2 होन तथा ब्राह्मण महिला एवं बच्चों ने 1-1 होन लिए। (एक होन अर्थात तीन रुपये) इसका मतलब जिन लोगों ने शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध

Scanned with CamScanner

किया उन्होंने ही स्वराज को लूटा। राज्याभिषेक को कूल 4 करोड़ 26 लाख रुपये खर्चा हुआ। शिवाजी महाराज के समूचे जीवन में रयत का राज निर्माण करने के लिए जितना पैसा खर्चा नहीं हुआ उससे ज्यादा पैसा ब्राह्मणों ने लूटा। शिवाजी महाराज के (मावला) साथियों ने अपना खून पसीना एक कर कमाये हुए होन मनुवादी कौओं ने धर्म के नाम पर निगल लिए।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के दिन उन्हें बधाई देने के लिए डच, फ्रेंच, पुर्तगाली, अंग्रेज, मुगल, आदिलशहा, कुतूबशहा इनके प्रतिनिधि मूल्यावान उपहार (भेटवस्तुएँ) तथा नजराना लेकर आये थे। जिस अंग्रेज सल्तनत का कभी सुर्यास्त नहीं होता ऐसा कहे जाने वाले अंग्रेजों का प्रतिनिधि ा हेन्री आक्झिन राज्याभिषेक को बधाई देने के लिए ऊँचे वस्त्र एवं अमूल्य भेट वस्तूएँ (उपहार) लेकर महाराज के सामने नतमस्तक हुआ। भेट वस्तु प्रदान कर महाराज को 'मुजरा' (अभिवादन) कर पिछले कदमों से दरबार से बाहर निकल आया। महाराज के तरफ उसने पीठ नहीं की। परन्तु जिन लोगों को महाराज ने अपना कहा उन ब्राह्मणों ने ही शिवाजी महाराज को ठेंस पहुँचायी। शिवाजी महाराज ने यह विरोध बाजू में रख कर अपना राज्याभिषेक सम्पन्न कराया। अपनी माँ, सभी महारानियाँ, हिन-दीन गरीब जनता को महाराज ने दरबार में पूरे सम्मान के साथ बिठाया।

सभी लोग राज्याभिषेक के सुनहरे पल का आनंद उठा सके इसके लिए महाराज ने तय समय पर सभी किलों पर तोपों की सलामी देने का आदेश दिया। तोपों का यह आवाज सामान्य जनों के कर्णपटल पर, दिल पर और बाद में आँखों पर फिट हुआ। जमकर विरोध होने के बावजूद भी महाराज ने राज्याभिषेक करवाकर न्यायदण्ड एवं राजदंड अपने हाथ में लिया। प्रजा में खुशी की लहर छा गई। इससे ब्राह्मणों के पैरों तले की जमीन हिलने लगी।

राज्याभिषेक के दिन से शिवाजी महाराज ने नया 'शिवशक' प्रारंभ किया। सारा कारोबार शिवशक के अनुसार शुरु हुआ। (यही 'शिवशक' आगे पेशवाओं ने बंद कर मुसलमानों का फसली शक शुरू किया। शिवाजी से ज्यादा पेशवाओं का मुस्लिम संस्कृति पर ज्यादा प्रेम था। अर्थात मुसलमानों का अनुकरण (अनुनय) एवं उनकी दाढ़ी मलने का काम ब्राह्मणों ने (पेशवाओं ने) किया। पेशवाओं का 'शनीवारवाड़ा' महोत्सव मनाना यह देशद्रोह के

Scanned with CamScanner

समान है, क्योंकि 'शनीवारवाडा' यह भारतवासियों के लिए पराजय का तथा पेशवाओं के लिए व्यभिचार का प्रतीक है।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के पश्चात गागाभट्ट की मृत्यु हो गई। उसकी लाश एक शौचालय के टाके में मिली। तब से देश के सारे ब्राह्मणों ने प्रचार करना शुरु कर दिया कि शिवाजी महाराज के शूद्र होते हुए भी गागाभट्ट ने उनका राज्याभिषेक से पैसे मिलने के कारण गागाभट्ट मस्ती में लिन हो गया और उसने खाने के साथ-साथ शराब पीना भी शुरु किया। नशे में धूर्त रहने के कारण ही उसकी मृत्यु हुई। फिर भी शिवाजी महराज को कम आंकने के लिए ब्राह्मणों ने उपरोक्त प्रचार किया।

शिवाजी महाराज हिन्दू धर्म के या शिवधर्म के?

शिवाजी महाराज ने अथक प्रयासों से अपना राज्याभिषेक सम्पन्न कराया। दुनिया के किसी भी धर्म के व्यक्ति को या राजा को उसके धर्म के विधि करने के लिए विरोध नहीं किया जाता। समता यह धर्म का महत्वपूर्ण मूल्य है। एक ही धर्म के श्रेष्ठ एवं कनिष्ठ व्यक्ति को धर्म के आचार, विचार, अध्ययन करने की अनुमति होती है, और शिवाजी महाराज ने तो अविरत मेहनत, चरित्र तथा पाक वृत्ति से अपना कर्तुत्व साबित किया था, फिर भी उनके ही धर्म में रहने वाले ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज का विरोध क्यों किया? इससे एक बात साबित होती है कि शिवाजी महाराज का तथा ब्राह्मणों का धर्म एक नहीं है?

धर्म यदि एक होता तो ब्राह्मणों ने खुशी से और मुफ्त में राज्याभिषेक किया होता। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। उलटा ब्राह्मणों ने महाराज को काफी तकलीफ पहुँचायी। वहीं हिन्दुत्ववादी (ब्राह्मण) आज शिवाजी महाराज का नाम लेकर जीते हैं।

शिवाजी महाराज महान पराक्रमी, बुद्धिमान, चरित्रवान, प्रजाहितदक्ष और न्यायवादी होते हुए भी किस धर्म ने महाराज को शूद्र ठहराया? उन्हें शूद्र कहकर उनका कर्तुत्व नकारने वाला तथा विदेश से आयें ब्राह्मणों को श्रेष्ठत्व बहाल करने वाला हिन्दू धर्म शिवाजी महाराज का धर्म भला कैसे हो सकता है?

हिन्दू धर्म ने भारतीयों के सृजनशिलता पर कड़क पाबंदियाँ लगायी।

Scanned with CamScanner

समुन्दर पार करना, शस्त्र धारण करना, महिलाओं को आजादी प्रदान करना, शिक्षा देना, समता का पालन करना आदि बातों पर ब्राह्मणों ने प्रतिबंध लगाया था। शिवाजी महाराज ने यह प्रतिबंध तोड़ा। शिवाजी महाराज ने समुन्दर पार किया, अपना तटरक्षक दल (आरमार) खड़ा किया, बहुजनों के हाथों में अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए हथियार दिया, महिलाओं को आजादी प्रदान की, स्वयं अपनी माँ से शिक्षा हासिल की, संभाजी महाराज को शिक्षा दी। हिन्दूओं के ग्रंथों को प्रमाण मानने से इन्कार किया तथा समता पर आधारित राज स्थापित किया। ऐसी स्थिति में शिवाजी महाराज हिन्दू कैसे हो सकते हैं?

हिन्दुत्व का ही दूसरा नाम ब्राह्मणवाद है, इसे पहचानने वाले जैन, बुद्धिस्ट, सिक्ख हमारे भाई है। इन्होंने वैदिकों की क्रूरता को पहचाना और जैन, बुद्धिस्ट या सिक्ख ये लोग ब्राह्मण धर्म से अलग हुए। जैन, बुद्धिस्ट एवं सिक्ख धर्म के मामले में नाक घोंपने की ब्राह्मणों को अनुमति नहीं है और इसी वजह से इस देश में जैन, बुद्धिस्ट, सिक्ख की प्रगति हुई है। शिवाजी महाराज ने भी आजादी के लिए प्रयास शुरु किया था। 'राजव्यवहार कोष' निर्माण किया। शिवशक आरंभ किया। स्वतंत्र रुप से 'शिवराई होन' यह चलन शुरु किया। स्वतंत्र रुप से राजकाट, न्यायपालिका शुरु की। शिवाजी महाराज के प्रतापी पुत्र संभाजी महाराज ने धर्म चिकित्सा प्रारंभ की। भट-ब्राह्मणों के सभी दांवपेच ध्यान में आने के बाद महाराज ने स्वतंत्र रुप से अपनी व्यवस्था का निर्माण किया। यदि शिवाजी महाराज और कुछ साल जीवित होते तो उन्होंने उसी समय शिवधर्म की स्थापना की होती। यही कारण है कि 3 अप्रेल 1680 को मोरोपंत पिंगले एवं अण्णाजी दत्तों इन्होंने महाराज की हत्या की।

शिवजी महाराज को अपना राज्याभिषेक करवाना बहुत जरुरी था। किन्तु खुद की धर्म संहिता ने होने के कारण महाराज को ब्राह्मणों के अर्थात हिन्दू धर्म पर ही निर्भर रहना पड़ा। यदि शिवाजी महाराज को खुद का धर्म होता तो राज्याभिषेक के अवसर पर ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज की प्रताड़ना नहीं की होती। महाराज के कारोबार में अपनी नाक नहीं घोंपी होती। शिवाजी महाराज की धार्मिक कमान संभालने वाले संत तुकाराम महाराज इनका ब्राह्मणों ने, शिवाजी महाराज के बचपन में ही खून कर दिया। अन्यथा संत तुकाराम

Scanned with CamScanner

महाराज ने शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक तक स्वतंत्र धर्म की स्थापना की होती और ब्राह्मणों ने अर्थात हिन्दू धर्म ने शिवाजी महाराज ने शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक तक स्वतंत्र धर्म की स्थापना की होती और ब्राह्मणों ने अर्थात हिन्दू धर्म ने शिवाजी महाराज की जो प्रताड़ना की, जो विरोध किया, शूद्र कहकर उनकी जो अपमान (अवहेलना की) किया, इन बातों का बदल लिया होता। इसी जरुरत को पहचानते हुए देश भर के अनगिनत अभ्यासक, शोधकर्ता, विचारक, देशभक्त समाज सुधारकों ने शिवाजी महाराज की विचार प्रेरणा का शिवधर्म स्थापना किया है।

शिवधर्म यह शिवाजी महाराज का धर्म है। शिव यानि शिवाजी। शिव यानि सत्य, मंगलमय, शिवधर्म में असत्य के लिए कोई स्थान नहीं है। संत तुकाराम महाराज, शहाजी महाराज, संभाजी महाराज, ताराराणी इनके कर्तुव्य विचारों की मुल्य विरासत यानि शिवधर्म ! आजादी की जननी राजमाता जिजाऊ माँ साहब को प्रेरणा का स्त्रोत मानकर एकमात्र और पहला ही धर्म है। जिन्होंने हमारे लिए अपना पूरा जीवन दांव पर लगया वही शिवधर्म के सच्चे महापुरुष है। ब्राह्मण निर्मित झूठे, काल्पित भगवान और ग्रंथों को शिवधर्म में कोई स्थान नहीं है। शिवाजी महाराज की प्रताड़ना करने वाले ब्राह्मणों को शिवधर्म में कोई स्थान नहीं है।

शिवाजी महाराज को शूद्र ठहरानेवाला, राज्याभिषेक को नकारने वाला, ढेर सारा पैसा लेकर राज्याभिषेक के समय प्रताड़ित करने वाला हिन्दू धर्म शिवाजी महाराज का या फिर शिवाजी महाराज की विचार प्रेरणा से निर्मित शिवधर्म शिवाजी महाराज का? यह अब पाठकों को ही तय करना है।

यदि शिवाजी महाराज धर्मनिष्ठ हिन्दू होते तो वे राज्याभिषेक नहीं करते, क्योंकि गैर-ब्राह्मणों को राज्याभिषेक करने पर पाबंदी थी। शिवाजी महाराज धर्मनिष्ठ हिन्दू अर्थात ब्राह्मणनिष्ठ होते तो महाराज ने समुन्दर पार नहीं किया होता, कृष्णा कुलकर्णी के दो टुकड़े नहीं किये होते, शूद्र-अतिशूद्रों को अधिकार पद बला नहीं किये होते। शिवाजी महाराज यदि धर्मनिष्ठ हिन्दू होते तो सत्यानारायण, यज्ञ अभिषेक किया होता। मुहूर्त देखा होता, प्रतिदिन ब्राह्मण निर्मित ग्रंथों का पठन किया होता। मगर सच्चई यह है कि ऐसा करने की बजाए शिवाजी महाराज ने उलटा ब्राह्मण निर्मित सभी हिन्दू धर्म ग्रंथों एवं

Scanned with CamScanner

विधियों को पैरोतले रौंधा। शिवाजी महाराज धर्मनिष्ट हिन्दू होते तो वे प्रतिदिन ब्राह्मणों की सलाह लेते। मगर शिवाजी महाराज ने उलटा कई ब्राह्मणों को मौत के घाट उतारा और कहा कि 'ब्राह्मण हो इसकी क्या परवाह करना !'' इन बातों से साबित होता है। कि शिवाजी महाराज शिवधर्म के हैं।

हिन्दु धर्म की प्रताड़ना के कारण ही जिजाऊ माँ साहब की मृत्यु

शूद्र कहकर ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध किया। धर्म संस्कृति के नाम पर गागाभट्ट ने विरोध किया। इस अपमान के कारण ही माँ साहब जैसा स्वराज का आधारस्तंभ 17 जूल 1674 को ढह गया। राज्याभिषेक के ठीक दस दिन पश्चात माँ साहब की प्राकृतिक मृत्यु होना संभव नहीं है। इसका मतलब ब्राह्मणी व्यवस्था ने माँ साहब की जान लेने वाला धर्म माँ साहब का धर्म कदापि नहीं हो सकता इसलिए मराठों को शिवधर्म की जरुरत है।

शिवाजी महाराज का दूसरा राज्याभिषेक : शिवधर्म की बुनियाद की रचना

शिवाजी महाराज का 6 जून 1674 में सम्पन्न राज्याभिषेक इस देश के ब्राह्मणों द्वारा पैसा लेकर शिवाजी महाराज एवं बहुजनों का किया हुआ बहुत बड़ा उत्पीड़न था, परन्तु अपना धर्म न होने के कारण शिवाजी महाराज को हिन्दू धर्म पर निर्भर रहना पड़ा। इसका महाराज को बहुत का दुःख था। इसलिए शिवाजी महाराज ने 24 सितंबर 1674 को अवैदिक तरीके से अपना दूसरा राज्याभिषेक करवाया। इसका पौरोहित्य निश्चलपुरी गोसावी ने किया। इसके लिए बहुत बड़ा प्रचार या खर्चा नहीं हुआ। इस राज्याभिषेक के समय एक भी अपमाननास्पद घटना नहीं हुई।

शिवाजी महाराज द्वारा किया गया दूसरा राज्याभिषेक यानि उनके द्वारा ब्राह्मण धर्म (हिन्दू धर्म) को नाकरने की बात साबित होती है। हिन्दू धर्म ग्रंथ ब्राह्मणों के फायदे के तथा बहुजनों के घाटे के हैं यह बात महाराज जान गये थे। हिन्दूत्व मूलतः ब्राह्मणवाद है इस बात को शिवाजी महाराज ने पहचाना था। इसलिए उन्होंने अपना दूसरा राज्याभिषेक करवाया। शिवाजी महाराज के जीवन में दूसरे राज्याभिषेक को अनन्य साधारण महत्व है। दूसरा राज्याभिषेक हमें अपनी सही दिशा बताता है और यही कारण है कि ब्राह्मण दूसरे राज्याभिषेक के बारे में लोगों को कुछ नहीं बताते। दूसरा राज्याभिषेक अपने आप में

Scanned with CamScanner

शिवधर्म की बुनियाद की रचना है। दूसरा राज्याभिषेक (24 सितंबर) यह शिवधर्म दिन (बहुजन मुक्ति दिन) है।

शिवाजी महाराज का मूल राजस्थान या महाराष्ट्र?

कई लोगों की यह गलत धारणा है कि शिवाजी महाराज के पुरखे राजस्थान के सिसोदिया घराने के थे। जब ब्राह्मणों ने शूद्र कहकर शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध किया। तब बालाजी आवजी इन्होंने राज्याभिषेक को इन्कार करने वाले गागाभट्ट को आमंत्रित करने के लिए अपनी चतुराई का इस्तेमाल किया और वंश से संबंधित झुठे दस्तावेज पेश किये। तब कही जाकर पैसे की लालच में गागाभट्ट राज्याभिषेक के लिए राजी हुआ। इसका मतलब राज्याभिषेक सम्पन्न कराने के लिए बालाजी आवजी द्वारा दी गई। विसंगतिपूर्ण वंशावली को प्रमाण मान कर शिवाजी महाराज को सिसोदिया वंश के बताना, यह अनैतिहासिक है। शिवाजी महाराज के पुरखें मूलतः महाराष्ट्र के ही मूलनिवासी है। उनका उदयपुर के सिसौदिया घराने से कोई संबंध नहीं है। ऐसी वास्तविक स्थिति होते हुए भी महाराज को राजस्थान के बताना और महाराष्ट्र में ही उन्हें बाहरी ठहराना, यह ब्राह्मणी षड्यंत्र।

शिवाजी-व्यंकोजी के बीच झगड़ा लगानेवाला हनुमंते

रघुनाथपंत हनुमंते नामक एक भष्ट्राचारी एवं व्यभिचारी अधिकारी तंजाबर में व्यकोजी महाराज की सल्तनत में था। उसके द्वारा प्रशासन में की गई गंभीर गलतियों के कारण व्यंजकोजी ने उसे प्रशासन से बाहर कर दिया था वो तामिलनाडू से सीधा रायगढ़ पर आया और व्यंकोजी के संबंध में अनेक गलत-सलत बातें शिवाजी महाराज को बताने लगा। परन्तु शिवाजी महराज एक चतुर एवं दुरदृष्टि रखने वाले राजा थे, महारज ने हनुमंते के दांव को पहचाना।

हनुमंते को लगा कि व्यंकोजी महाराज तो शिवाजी महाराज के सौतेले भाई है। इसलिए शिवाजी महाराज व्यंकोजी के खिलाफ भूमिका लेंगे। परन्तु शिवाजी महाराज ब्राह्मणों के दांवपेचों से भलिभाँति वाकीफ थे। महाराज ने दक्षिणा प्रान्त के अभियान पर जाने की योजना बनाई। व्यंकोजी पर हमला करने के लिए नहीं बल्कि दक्षिणा में राज करने वाले राजाओं ने गठबंधन कर दिल्ली की गद्दी हासिल करनी चाहिए। यह उस अभियान के पीछे विशाल

Scanned with CamScanner

दृष्टिकोण था। रघुनाथपंत हनुमंते ने शिवाजी महाराज और व्यंकोजी के बीच झगड़ा लगाकर मलाई (क्रीम) खाने का प्रयास किया परन्तु महाराज की दुरदृष्टि के आगे हनुमंते अपनी चाल में कामयाब नहीं हो पाया।

शिवाजी महाराज का घात करने वाला कुमंत्री मोरोपंत

मोरोपंत पिंगले ने शिवाजी महाराज को काफी तकलीफ दी। गागाभट्ट को भड़काने का प्रयास किया, राज्याभिषेक के समय कई मुश्किलें खड़ी की। इसलिए मोरोपंत का जिक्र कई जगहों पर 'मयुरादी कुमंत्री' के तौर पर किया गया है। शिवाजी महाराज ने अपने राज्य में किले बनाना प्रारंभ किया तब मोरोपंत और निलोपंत ने किले बनाने का जमकर विरोध किया। महाराज बहुत पैसा खर्चा करते हैं, ऐसा गलत प्रचार उसने शुरू किया।

यह बात जब महाराज को पता चली तब महाराज ने उनकी अच्छी खिंचाई की। महाराज ने कहा, ''मुझे पता है कि आप कितने होशियार हैं? मैं किले क्यों बाँध रहा हूँ? जैसे एक किसान अपने खेत में बाँध लगाकर खेती की रक्षा करता है, नाव चालक जैसे खिले मार कर नाव को मजबूत बनाता है, उसी प्रकार किले बनाकर भूमिपूत्रों का राज मुझे मजबूत करना है और आप मुझे होशियारी पढ़ाते हैं?'' महाराज द्वारा मोरोपंत की इस प्रकार खिंचाई करते ही मोरोपंत मूँह ढाँक कर घर में घूस गया। क्योंकि इसके पहले उनका ऐसा अपमान किसी ने नहीं किया था। (संदर्भ वा॰सी॰बेंद्रे लिखित-छ॰संभाजी महाराज,पृष्ठ-84)

राज्याभिषेक के माध्यम से शिवाजी महाराज को ब्राह्मणों की क्रूरता का ऐहसास हुआ। चाहे कितना भी प्यार से रखो, नजदीक करो, सहायता करो, फिर भी ब्राह्मण कितने दगाबाज होते हैं, इसका महाराज को प्रत्यक्ष अनुभव हुआ था। तब महाराज ब्राह्मणों को संबोधित कर कहने लगे, ''इतनी दगाबाजी (हरामी) आप करेंगे ! ब्राह्मण हो इसकी कौन परवाह करता है? जो दुश्मन की बात करेंगे, उनका भी वही नतीजा होगा !'' शिवाजी महाराज जैसे दुनिया के लिए वंदनीय राजा ने भी आखिर ब्राह्मणों को 'हरामी' कहा तथा ब्राह्मण हो इसलिए आप की कोई परवाह नहीं की जाएगी, ऐसा इशारा दिया।

इससे पता चलता है कि महाराज को कितनी दी गई होंगी। राज्याभिषेक के पश्चात् शिवाजी महाराज का नेतृत्व निर्विवाद हुआ। सभी को समान न्याय,

Scanned with CamScanner

अधिकार प्रस्थापित हुए। ब्राह्मणों को वर्चस्व समाप्त हुआ। ग्रंथों का राज समाप्त हुआ कर्तव्यगार 'कुलवाडी भुषण' शिवाजी महाराज का राज स्थापित हुआ। इससे ब्राह्मणों का मानो खून खौल गया। महाराज को खत्म करने का ब्राह्मणों ने प्रयास शुरू किया और इसी के चलते ब्राह्मणों ने महाराज के घर में झगड़ा लगाना शुरु किया।

ब्राह्मणों द्वारा संभाजी महाराज की बदनामी

शिवाजी महाराज दक्षिण अभियान पर जाने के बाद शिवाजी महाराज और संभाजी महाराज इनके बीच झगड़ा खड़ा करने के लिए ब्राह्मणों ने कई दांव-पेंच खेले। उस समय संभाजी महाराज शृगांरपुर में, ससुराल में थे। शिवाजी महाराज की हत्या के बाद ही वे रायगढ़ पर गये। मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तों इन्होंने शिवाजी महाराज और संभाजी के बीच फूट डालने के लिए, संभाजी अपनी आवाम को कर में सहुलियत देते है संभाजी महाराज शौकिन हैं, वे व्यभिचारी हैं ऐसी अफवा फैलाना शुरु किया। संभाजी महाराज की बदनामी करने के लिए उमाजी पंडित एक प्रचारक के तौर पर पूरे महाराष्ट्र में घुमा। यह ख़बर शिवाजी महाराज के कान पर जायें ऐसी महाराज के मंत्रियों द्वारा व्यवस्था की गई। संभाजी-शिवाजी इनके बीच फूट पड़ने पर इस संघर्ष का फायदा लेना यह ब्राह्मणों का दांवपेच था। ब्राह्मण कभी भी सामने आकर नहीं लड़ते, वे हमेशा पीछे रहकर बहुजनों में झगड़ा लगाते हैं। ऐसा ही प्रयास ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज के घर में शुरू किया। परन्तु शिवाजी महाराज ने ब्राह्मणों का यह दांव पहचाना था, क्योंकि महाराज संभाजी के स्वभाव से भलिभांति परिचित थे।

संभाजी महाराज ने अपने समूचे जीवन में कभी भी शराब को नहीं छुआ। उन्हें सुपारी खाने की आदत नहीं थी। उन्होंने 'बुधभूषण', 'सातसतक', 'नायिकाभेद' 'नखशिख' इन चार ग्रंथों की रचना की है। वे एक कर्तव्यदक्ष व्यक्ति थे इसलिए लोकप्रिय थे। उन्होंने कभी भी किसी ब्राह्मण को प्रणाम (मुजरा) नहीं किया, इसलिए ब्राह्मण उन पर ख़फा थे। वे संस्कृत पढ़े, उन्होंने ग्रंथ लिखे यह उस समय के प्रस्थापित ब्राह्मणों पर करारी चोट थी। इसलिए ब्राह्मणों ने संभाजी महाराज जैसे नेक चरित्र के राजपुत्र की बदनामी करना प्रारंभ किया।

Scanned with CamScanner

सोयराबाई को अपने हाथ में लेने का प्रयास किया। इसके लिए राजाराम को राजगद्दी पर बिठाने की सोयराबाई को लालच दी गई। उसका सौतेला मातृत्व जागृत किया गया। परन्तु सोयराबाई का राजाराम की तरह संभाजी महाराज पर भी उतना ही प्रेम था। सईबाई की अचानक मृत्यु के पश्चात सोयराबाई ने संभाजी को अपनी जान से भी ज्यादा चाहा। जिजाऊ माँ साहब के कुशल मार्गदर्शन के कारण ही पूरा परिवार आवाम के प्रति गंभीरथा। ऐसे स्वरासज के प्रति मर-मिटने वाले परिवार में थोड़े से सुख में लिए कभी भी घरेलू संघर्ष नहीं होता। इसलिए सोयराबाई निष्कलंक एवं स्वराजनिष्ठ महिला थी। यही कारण है कि वह आखिर तक ब्राह्मणों के सत्तांतर के दांव में शामिल नहीं हुई। वह यदि इस दांव में शामिल हुई होती तो सोयराबाई के सगे भाई हंबीरराव मोहिते इन्होंने सोयराबाई का साथ दिया होता। परन्तु हंबीरराव मोहिते मरते दम तक संभाजी महाराज के साथ खंबीर रुप से खड़े रहे। सोयराबसाई का पुत्र राजाराम की तरह संभाजी पर भी नितांत प्रेम था तथा संभाजी महाराज ने भी राजाराम को सगे भाई की तरह तथा सोयराबाई को माँ की तरह संभाला। राजाराम की तीन दफा शादियाँ करवा दी। संभाजी महाराज सोयराबाई को हमेशा एक स्फटीक के समान निर्मल मन की माता मानते थे। इसका मतलब संभाजी और सोयराबाई इनके बीच कोई अंतर्गत संघर्ष नहीं था। उलटा सोयराबाई, राजाराम, शिवाजी महाराज को तकलीफ देने वाले ब्राह्मणों को संभाजी ने मौत के घाट उतारा। संभाजी महाराज निष्कलंक एवं आवाम (स्वराज) के प्रति निष्ठावान होने के बाबवजूद भी महाराज की निरतंतर बदनामी क्यों की गई? क्योंकि संभाजी व्यवस्था के बंधन में बंधने वाले व्यक्ति नहीं थे। वे एक स्वतंत्र विचार के धनी थे। परंपरागत तरीके से गुलाम की तरह राजसिंहासन पर आरूढ़ होने की संभाजी महाराज की स्वार्थी वृत्ति नहीं थी। इसलिए संभाजी महाराज की जिद्द समाप्त करने के लिए उनकी बदनामी कर उनका मानसिक रुप से उत्पीड़न किया गया। एक चरित्रवान व्यक्ति होने के बावजूद भी संभाजी महाराज की मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तो, प्रल्हादपंत, उमाजी पंडित, आदि ब्राह्मणों ने बदनामी क्यों की? क्योंकि संभाजी महाराज ने ब्राह्मणी व्यवस्था पर आघात किया था।

उन्होंने संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व हासिल किया था। चार ग्रंथों की

Scanned with CamScanner

रचना की थी। अर्थात संभाजी महाराज ने साहित्य क्षेत्र के एकाधिकार पर ही प्रहार किया था। उन्होंने ब्राह्मण मंत्रियों का वर्चस्व कभी स्वीकार नहीं किया। हिन-दीन गरीब बहुजनों को उन्होंने अनक सहुलियतें दी। ब्राह्मणों की दादागिरी समाप्त की। इसलिए शिवाजी महाराज के आश्रय में रहने वाले सभी ब्राह्मणों ने संभाजी महाराज की बदनामी शुरू की।

कर्तुत्व सम्पन्न, पराक्रमी, साहसी, विद्वान बहुजनों को समाप्त करने के लिए उनकी हर तरह से बदनामी करना यह ब्राह्मणों का ज़हरीला हथियार है। किसी निष्कलंक विद्वान बहुजनों की बदनामी शुरु होने पर वह निराश होता है। चिन्ता में डूब जाता है 'मैं इतना अच्छा होते हुए भी मेरी बदनामी क्यों', इसी सोच में वह व्यक्ति निराश हो जाता है और धीरे-धीरे उसकी उम्मीद समाप्त हो जाती है। संभाजी को नाउम्मीद करने के लिए ही सभी मंत्रियों ने मिलकर उनकी बदनामी शुरु कर दी । संभाजी महाराज ने सोयराबाई को आदरपूर्वक संभाला फिर भी यह अफवा फैलायी गई कि रायगड पर आते ही संभाजी महाराज ने सोयराबाई की जान ली। किन्तु यह सच नहीं है। उस समय सोयराबाई जिन्दा थी। इस गलत अफवा के सवा साल (एक साल तीन महिने) बाद अर्थात 27 अक्टूबर 1681 को सोयराबाई की रायगड़ पर मृत्यु हुई। उस समय संभाजी महाराज पन्हालगढ़ पर थे। संभाजी महाराज के साथ जिन महिलाओं के नाम जोड़े जाते हैं वे गोदावरी, कमला ये महिलाएँ इतिहास में कभी नहीं हुई। बखर, नाटक और कादंबरी लिखने वालों ने इन महिलाओं को जन्म दिया। संभाजी महाराज की इस तरह बदनाम करने वाले ब्राह्मण मुगलों से भी ज्यादा क्रूर हैं।

हैदराबाद के बादशाह के अधिकारी मादण्ण-आकण्णा

मादण्णा और आकण्णा नामक ब्राह्मण हैदराबाद के बादशहा के प्रशासन में अधिकारी पद पर कार्यरत थे। हिन्दुत्ववादी ब्राह्मण, मुस्लिम सत्ताधिशों के अधिकारी कैसे? क्योंकि पैसा-सत्ता यही ब्राह्मणों का सच्चा धर्म है। उसके लिए वे हमेशा प्रबल धर्मसत्ता में होते है। ब्राह्मण विदेशी होने के कारण उन्हें देश और धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। आज भारत में बहुजन समाज संख्या में अधिक है।, उनका नेतृत्व करने के लिए ब्राह्मण हिन्दुत्व का जयघोष करते हैं। यदि भारत में मुसलमान संख्या में ज्यादा होते तो सभी

Scanned with CamScanner

ब्राह्मणों ने मुसलमानों का जयघोष किया होता, यह उनका इतिहास है। अकबर औरंगजेब, अंग्रेजों के कार्यकाल में ब्राह्मण उनकी तरफ थे।

शिवाजी महाराज की मृत्यु या खून?

विफल होने के बावजूद भी मोरोपंत, अण्णाजी, राहुजी सोमनाथ इनकी करतुतें बंद नहीं हुई। किसी भी स्थिति में शिवाजी महाराज को समाप्त करने का उन्होंने बिड़ा उठाया था। उस दौरान संभाजी महाराज पन्हालगड पर के हुए थे। रूके हंबीरराव मोहिते भी रायगड पर नहीं थे। मोरोपंत को त्र्यंबकेश्वर को भेजा गया था। अण्णजी दत्तों रायगड के (तल) नीचे बसे पाचाड़ में रूका था। किले पर राहुजी सोमनाथ यह ब्राह्मण अधिकारी था, वो भी इस षड्यंत्र में शामिल था। महाराज को किसी भी स्थिति में खत्म करने की योजना (षड्यंत्र) मोरोपंत, अण्णजी दत्तों, राहुजी सोमनाथ इन्होंने बनायी। रायगड की पूरी तरह नाकाबंदी की गई। किसी भी तरह की भनक नहीं लगनी चाहिए इसकी तीनों ने सावधानी बरती।

इस षड्यंत्र का संदेह न हो इसलिए मोरोपंत पिंगले और अण्णाजी दत्तो घटनास्थल से दूर रुके हुए थे। खून करने वाला व्यक्ति अपने कोई सबूत नहीं छुटना चाहिए। इसकी खबरदारी लेता है। इस समय महाराज के काफी महत्वपूर्ण माने जाने वाले व्यक्ति रायगढ़ पर नहीं थे। संभाजी महाराज पन्हालगड पर थे। संभाजी महाराज को शिवाजी महाराज ने पन्हालगड़ के सुभेदार पद पर नियुक्त किया था। सेनापति हंबीरराव मोहिते तलबीड में थे। तलबीड़ पन्हालगड से नजदीक परन्तु रायगढ़ से लगभग 250 किलोमीटर की दूरी पर है। शिवाजी महाराज के परिवार के सभी रिश्तेदार पाचाड में रुके थे। रायगड पर केवल राहुजी सोमनाथ था। वह क्रूर, स्वार्थी, षड्यंत्रकारी था, ऐसा स्पष्ट रुप से 'शिवभारत' में जिक्र मिलता है। (संदर्भ-वा॰सी॰बेंद्रे लिखित-श्री छ॰संभाजी महाराज) इस समय सोयराबाई पर भी काफी दबाव था परन्तु वे असहाय होने के कारण वे इस बात का प्रतिकार नहीं कर सकी। उस समय राजाराम महाराज की उम्र केवल मात्र दस वर्ष की थी।

3 अप्रैल की सुबह हुई। महाराज के इर्द-गिर्द ब्राह्मणों का घेरा था। राहुजी सोमनाथ ने किल के सभी दरवाजे बंद किये थे। किले के अन्दर की कोई खबर बाहर नहीं जानी चाहिए। इसकी सोमनाथ ने पूरी खबरदारी ली थी।

Scanned with CamScanner

शायद शिवाजी महाराज को इस षड्यंत्र का आंदेशा होने के कारण उन्होंने अपने रिश्तेदारों को खतों द्वारा बुलावा भेजा, परन्तु वे खत किसी को भी नहीं मिले। क्योंकि किले के सभी सुत्र राहुजी सोमनाथ के हाथों में थे। इसलिए रायगड पर ब्राह्मण मंत्रियों ने शिवाजी महाराज की हत्या का षड्यंत्र बुना था।

शिवाजी महाराज के ज्येष्ठ सुपुत्र संभाजी को भी इस षड्यंत्र की भनक नहीं लगनी चाहिए इसकी खबरदारी ली गई। सरसेनापति तथा शिवाजी महाराज के साले हंबीरराव मोहिते भी अँतिम संस्कार की विधि में मौजूद नहीं थे। पास में एक भी रिश्तेदार नहीं था, इसलिए सोयराबाई प्रतिकार नहीं कर पायी होंगी और यह हत्या सोयराबाई के हाथों हुई·ऐसी अफवा ब्राह्मणों ने फैलायी। सत्ता प्राप्ति के लिए सोयराबाई न ऐसा किया होगा। ऐसा बहुत लोगों को लगा। क्योंकि राजाराम को तुरन्त सभी ब्राह्मण मंत्रियों ने राजसिंहासन पर बिठाया। परन्तु सोयराबाई ने राजाराम को सिंहासन पर बिठाने का कोई आग्रह नहीं किया था।

राजाराम की उम्र केवल दस वर्ष की होने के कारण अपने ही तकनीक से कारोबार चलाने की योजना ब्राह्मण मंत्रियों ने बनायी थी। शिवाजी महाराज की हत्या के पश्चात संभाजी की भी हत्या की जाए और तत्पश्चात राजाराम को भी हत्या कर समूचे सत्ता अपने कब्जे में लेने का ब्राह्मण मंत्रियों ने दांवपेच बनाया था और इसलिए वे संभाजी महाराज का कैद करने के लिए गये थे। परन्तु हंबीरराव मोहिते इनकी दुरदृष्टि के कारण यह अनर्थ टल गया। हंबीरराव मोहिते राजाराम के सगे मामा थे, इसलिए वे हमें पूरी तरह सहायता करेंगे ऐसी ब्राह्मणों की धारणा थी, परन्तु हंबीरराव मोहिते की राज्य के प्रति निष्ठा होने के कारण दगाबाज ब्राह्मण मंत्रियों को ही गिरफ्तार किया गया।

जिस समय महाराज की मृत्यु हुई उस समय उनकी उम्र केवल मात्र 50 साल की थी। महाराज को कोई बड़ी बिमारी नही थी या वे किसी बड़ी बिमारी से ग्रसित नहीं थे। महाराज पूरी तरह स्वस्थ्य थे, ऐसा जिक्र ''कास्मादी गार्डा'' यह विदेशी इतिहासकार करता है। अपनी उम्र के 50 वे वर्ष महाराज की प्राकृतिक मृत्यु होना कतई संभव नहीं

शिवाजी महाराज का समाज परिवर्तन का कार्य, रायगड के ब्राह्मण मँत्रियों का आंतरिक विरोध, 3 अप्रैल का रायगड का संदेहास्पद वातावरण,

महाराज द्वारा भेजा गया परन्तु किसी को भी न मिला हुआ खत, महाराज का जल्दबाजी में किया गया अंतिम संस्कार, यह खबर किसी को भी पता न चल पायें इसकी अण्णजी दत्तों, राहुजी सोमनाथ, मोरोपंत पिंगले द्वारा ली गई खबरदारी, पराक्रमी, विद्वान, चरित्रवान और ज्येष्ठ पुत्र संभाजी की बजाए दस साल के बालक राजाराम को राजगद्दी पर बिठाने की ब्राह्मण मंत्रियों की भूमिका और संभाजी के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने की बजाए उन्हें गिरफ्तार करने के लिए जाने वाले अण्णाजी दत्तों, मोरोपंत आदि सभी बातों से यही साबित होता है कि शिवाजी महाराज की प्राकृतिक रुप से मृत्यु नहीं हुई, बल्कि उनकी हत्या की गई।

संभाजी को गिरफ्तार (खत्म) करने के लिए निकले मोरोपंत, अण्णाजी दत्तों, प्रल्हादपंत इन मंत्रियों को हंबारराव मोहिते इन्होंने रास्ते में ही गिरफ्तार किया। संभाजी महाराज का रायगड पर आगमन हुआ। उन्होंने सभी माताओं की सांत्वना की। इस समय सोयराबाई द्वारा शिवाजी महाराज को जहर देने की अफवा काफी जोरों पर थी। शायद इस बात का सोयराबाई को भी एहसास नहीं होगा, परन्तु सोयराबाई निर्दोष थी, इसे साबित करने के लिए काफी सबूत उपलब्ध हैं। संभाजी महाराज 24 अगस्त 1680 को कहते हैं, ''सोयराबाई स्फटीक की तरह निर्मल मन की माता है।'' इसका मतलब सोयराबाई निर्दोष तो थी ही, संभाजी की नज़र में उनका उतना ही सम्मान था। (संदर्भ: वा॰सी॰बेंद्रे लिखित-छ॰संभाजी, पृष्ठ-221) सोयराबाई-संभाजी माता-पुत्र के बीच बहुत अच्छे संबंध थे। संभाजी ने अपने छोटे भाई राजाराम को अपनी जान से भी ज्यादा चाहा। संभाजी ने ही राजाराम की तीन शादियाँ करवाई। (ताराबाई-मोहिते, राजसबाई-घाडगे, अंबिकाबाई-खानविलकर) इसका मतलब और सोयराबाई के बीच सत्ता को लेकर कोई मतभेद नहीं था और न उन्हें सत्ताभिलाषा थी। इसलिए सोयराबाई ने शिवाजी महाराज को ज़हर नहीं दिया। सोयराबाई महाराज के हत्या के षड्यंत्र में बिल्कुल शमिल नहीं थी। महाराज की हत्या प्रल्हाद निराजी, मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तो इन ब्राह्मणों मंत्रियों ने की, यह निर्विवाद रूप से सत्य है। ये सभी मंत्री हत्या के षड्यंत्र के सुत्रधार है। हत्या का प्रत्यक्ष अमल राहुजी सोमनाथ ने किया।

अब हम शिवाजी महाराज की मृत्यु के संबंध में देशी एवं विदेशी

Scanned with CamScanner

संदर्भ साधनों का विचार करेंगे। निम्नलिखित संदर्भ साधनों की चिकित्सा करने से पूर्व उन साधनों का काल एवं कर्ता इनके बारे में विचार करना निहायत जरूरी है। मराठी एवं संस्कृत संदर्भ साहित्य के लेखक ब्राह्मण होने कारण सत्य की खोज करते समय काफी दिक्कतें आती है। फिर भी अपराधबोध का एहसास संदर्भ साधनों में मुख्य रूप से दिखायी पड़ने से महाराज की हत्या की गुत्थी सुलझने में काफी सहायता हुई है। सबसे पहले हम गैर-मराठी संदर्भ साधनों को देखेंगे।

अंग्रेजों का खत : ''शिवाजी महाराज की मृत्यु खून के बहाव की बिमारी (रक्तातिसार) से हुई। (शिवाजी महाराजांचा मृत्यू रक्तातिसाराने झाला.)

परशीयन दस्तावेज : ''शिवाजी महाराज घोड़े से नीचे उतरे और अति उष्णता के कारण उन्हें दो बार खून की उलटियाँ हुई। इस कारण उनकी मृत्यु हुई।''(शिवाजी हे घोड्यावरुन उतरले त्यांना अतिउष्णातेमुळे दोन वळा रक्ताच्या उलट्या झाल्या. त्यामुळे त्यांचा मृत्यू झाला.)

भीमसेन सक्सेना : (औरंगजेब की अधिकारी): ''शिवाजी महाराज बिमार पड़े। कुछ दिन की बिमारी के बाद उनकी मृत्यु हुई।'' (शिवाजीराजे आजारी पडले काही दिवसाच्या आजारांनतर ते मृत्यु पावले.)

खाफीखान : (मुगल साम्राज्य का इतिहास): ''शिवाजी महाराज जालना पर चल कर गये, इसी वर्ष वे बिमार हुए और उनकी मृत्यु हुई।'' (शिवाजी राजांनी जालन्यावर स्वारी केली याचवर्षी ते आजारी पडून मृत्यु पावले.)

निकोलाओ मनुची : (ऐसे थे मुगल !): शिवाजी महाराज हमेशा राज्य का दौरा करते थे, ज्यादा श्रम के कारण थकावट और खून की उलटियाँ होने से उनकी मृत्यु हुई।'' (शिवाजीराजे नेहमी मोहिमेश्वर फिरत या दगदगीने थकून आणि रक्ताच्या उलट्या होऊन त्यांना मरण आले.)

दाघ रजिस्टर : (डच दस्तावेज) : ''शिवाजी महाराज की दूसरी पत्नी ने महाराज पर जहर का प्रयोग किया होगा। (शिवाजीराजांच्या दुसऱ्या बायको ने राजावर विष प्रयोग केलास असावा.) (दाघ रजिस्टर-1680, पृष्ठ-724.29, संदर्भ-परकियांच्या दृष्टि)

उपरोक्त सभी संदर्भ साधन खबर या अफवाएँ सुनकर ही महाराज

Scanned with CamScanner

की मृत्यु के संबंध में लिखते हैं। उपरोक्त साधनों के लेखको में से कोई भी रायगड पर या उसके आसपास नहीं था। इसलिए इन लेखको के संदर्भ साधन संदेहास्पद, अविश्वसनीय हैं। शिवाजी महाराज ने राजाराम का विवाह 15 मार्च 1680 को प्रतापराव गुजर की सुपुत्री जानकीबाई के साथ करवा दिया शादी के अठारह दिनों बाद ही शिवाजी महाराज की हत्या हुई। क्योंकि 18 दिन में यही महाराज का बिमार पड़ना और बिमारी अंतिम चरण तक पहुँचना कतई संभव नहीं है।

उपरोक्त साधनों में से आलमगिरीकार मुस्तेद खान, मनुची और अंग्रेज शिवाजी महाराज की मृत्यु खून की उलटी होने के कारण होने की पुष्टि करते हैं। परन्तु खून की उलटी क्यों हुई? यह उन्हें पता नहीं है। जगह देने के कारण ही उन्हें उलटियाँ हुई। भीमसेन सक्सेना, खाफीखान शिवाजी महाराज बिमारी के कारण मरने की बात कहते है परन्तु वे बिमार क्यों हुए? यह उन्हें पता नहीं है। इस संबंध में वे वे पक्का नहीं कह सकते। दाघ रजिस्टर में जहर के प्रयोग का जिक्र है, परन्तु इसके लेखके ने भी अफवाहों पर सही यकिन किया है और ब्राह्मण मंत्रियों ने ही महाराज पर जहर का प्रयोग किया, इसकी बजाए उन्होंने महाराज की पत्नी का जिक्र किया है। सोयराबाई की अफवाह थी कि हकीकत यही है कि ब्राह्मण मंत्रियों ने ही महराज को जहर देकर मारा हैं, यह दाघ रजिस्टर के आधार पर सिद्ध होता है।

अब मराठी संस्कृत संदर्भ साधनों का अध्ययन करते हैं। इन साधनों में समकालीन साधन और उत्तरकालीन साधनों की चिकित्सा करते हैं।

91 कलमी बखर : महाराज को नवज्जर की व्यथा हुई और महाराज कैलासवासी हो गये। (राजांना नवज्जवराची व्यथा झाली आणि राजे स्वामीस कैलासवास झाला)

शिवदिग्विजय : सोयराबाई द्वारा महाराज को जहर का प्रयोग हुआ। (सोयराबाईडून राजांना विषप्रयोग झाला)

चिटणीस बखर : सोयराबाई पर ही आरोप करती है।

शिवभारत : (अपूर्ण काव्य

जेधे शकावली : चैत्र शुध्द पुनम शनीचर (3 अप्रैल 1680) दिन के दूसरे प्रहर रायगड पर शिवाजी महाराज की मृत्यु हुई । हंबीरराव मोहिते मोरापंत

Scanned with CamScanner

पेशवा,अण्णजी दत्तो, और प्रल्हादपंत को गिरफ्तार कर पन्हालगड पर संभाजी महाराज के पास लेकर गये। (चैत्र शुद्ध पौर्णिमा शनीवारी दिवासा दोन प्रहरी रायगडावर शिवाजीराजांचे निधन झाले. हंबीररावा मोहिते यांनी मोरोपंत पेशवे अण्णाजीपंत आणि प्रल्हादपंतांना कैद करुन पन्हाळगसडावर संभाजी राजांकडे नेले.)

शिवापुर शकावली : चैत्र पुनम को शिवाजी महाराज चल बसे। (चैत्र पौर्णिमेस शिवाजी राजे समाप्त झाले.)

चिटणीस बखर और शिव दिग्विजय सन् 1818 की होने के कारण समकालीन नहीं है, परन्तु उसमें सोयराबाई द्वारा ज़हर दिये जाने का जिक्र किया गया है। इसका मतलब राहुजी सोमनाथ ने ज़हर का प्रयोग किया था। ब्राह्मण मंत्रियों ने ही ज़हर देकर शिवाजी महाराज की हत्या की परन्तु सब तरफ यही अफवा फैलायी गई की हत्या सोयराबाई ने की है। यही कारण है कि सोयराबाई द्वारा ज़हर का प्रयोग करने की बात देशी एवं विदेशी लेखको ने की है। क्योंकि उन तक अफवा ही पहुँची थी, हकीकत उन तक पहुँची ही नहीं।

शिवभारतकार कविंद्र परमानंद इनकी अचानक अकाली मृत्यु होने की वजह से कारतलबखान का उमरखिण्ड में हुआ युध्द, यहीं तक उसमें जिक्र मिलता है।

जेधे शकावली : यह शकावली अर्थात 'डेली डायरी' (रोज़नामा) होने के कारण उसमें स्पष्टीकरण नहीं है। इसलिए केवल निधन हुआ इतना ही जिक्र जेधे शकावली में है। परन्तु बाद में तुरन्त हंबीरराव मोहिते इन्होंने मोरोपंत, अण्णाजी दत्ते एवं प्रल्हादपंत इन्हें कैद करने का जिक्र आया है। उन्होंने खून किया इसलिए उन्हें कैद किया, ऐसा इसका स्पष्ट अर्थ निकलता है। अर्थात जेधे शकावली भी मोरोपंत, अण्णाजी दत्तो, प्रल्हादपंत एवं राहुजी सोमनाथ इन्होंने ही हत्या की, यह साबित करती है।

शिवापुर शकावली में भी महाराज समाप्त हुए ऐसा जिक्र मिलता है परन्तु वे समाप्त कैसे हुए इसका जिक्र करना टाल दिया गया है।

अब आखरी एवं महत्वपूर्ण साधन यानी सभासद बखर।

इस बखर का रचियता कृष्णाजी अनंत सभासद, इन्होंने स्व्यं राज्य के

Scanned with CamScanner

कारोबार में हिस्सा लिया था। इसलिए इस बखर का अतिरंजीत एवं श्रद्धालू हिस्सा छोड़ दिया जाए तो बहुत-सी सच्चाई (वस्तुनिष्ठता) है। सभासद छ०शिवाजी महाराज की मृत्यु के संबंध में कुछ इस प्रकार वर्णन करते हैं-

''मग काही दिवसांनी राजास व्यथा ज्वराची झाली. राजा पुण्यश्लोक कालज्ञान जाणे. विचार पाहता आयुष्याची मर्यादा झाली हे कळून जवळीळ कारकूनव हुजरे लोक होते. त्यामध्ये सभ्य लोक बसोलावून आण्ले बोलिले की तुम्ही चुकूर होऊ नका. हा तो मृत्यूलोकच आहे. यामागे किती उत्पन्न झाले किती गेले आता तुम्ही निर्मळ सुखरूप बुद्धीने असणे. आता अवघे बाहेर बसा. आपण श्रींचे स्मरण करितो म्हणोन अवधियांस बाहेर बैसवले. आणि राजियांनी श्री भागिरथीचे उदक आणून स्नान केले. आणि योगाभ्यास करुन आत्मा ब्रह्मंडांस नेउन दशद्वारे फोडून प्राण प्रयाण केले. शालिवाहन शके 1602 रौद्रमान संवत्सरे चैत्र शुद्ध पौर्णिमा, शनीवार दोन प्रहरी काळ रायगडी झाला. त्यानंतर शिवदूर विमान घेऊन आले. आणि राजे विमानी बसून कैलासास गेले. हे जड शरीर मृत्युलोकी त्याग केला. राजाचे देहावसन त्या दिवशी पृथ्वीकंप झहांला. गगनी धुमकेतू उदेला उल्कापात आकाशाहून आला. रात्रि जोड इंद्रधनुष्य निधाली. अष्टदिशा दिगदाह पोऊन गेला. श्रीशंभू महादेवी तळयाचे उदक रक्तांबर आले. पाण्यातील मच्छ बाहेर पडून अमासवाणी उदक झाले.ऐसी अरिष्टे झाली. मग राजेयांचे कलेवर चंदनकाष्टेवर व बेलकाष्टे आणून दग्ध केले. स्त्रिया राज्यापालख्या कारकून हुजरी सर्व लोकांनी सांगितल की, धाकटा पुत्र राजाराम यांनी क्रिया करावी. सर्वासनी खेद केला राजाराम यांनी अत्यंत शोक केला. त्यानंतर उत्तरकार्य कनिष्ठांनी करावे असे सिद्ध केले. वडिल पुत्र संभाजीराजे वेळेसा नाहीत. याजकरिता धाकट्याने क्रिया केली असे राजांचे चरित्र आख्यान उत्पन्न काळापासून देहावसनापर्यंत जाहले.''

अर्थात ''फिर कुछ दिन पश्चात महाराज को ज्वर (बुखर) चढ़ गया। महाराज को लगा कि अब मेरा अंतिम नजदीक आ गया है। तब उन्होंने अपने प्रशासन में काम करने वाले सभ्य लोगों को बुलावा भेजा और कहने लगे कि आप चिंता न करे, यह तो मृत्युलोक ही है। आप सब लोग सुख-चैन से अपना जीवन बसर करे। अब आप बाहर बैठे। मैं 'श्री' अर्थात ईश्वर का स्मरण करता हूँ ऐसा कहकर सबको बाहर बैठने के लिए कहा। महाराज ने स्नान किया।

भस्म धारण कर रुद्राक्ष धारण किया और योगाभ्यास कर आत्मा ब्राह्मण्ड में ले लाकर दशद्वार फोड़कर अपने प्राण त्याग दिये। शाली वाहन शके 1602 चैत्र शुद्ध पसुनम, शनीचर दूसरे प्रहर रायगड पर यह घटना हुई। उसके बाद शिवदूत विमान आया और महाराज उसमें बैठकर कैलास चले गये। अपना शरीर मृत्युलोक में त्याग दिया। जिस दिन महाराज की मृत्यु हुई दस दिन धरती कम्प हो गया, पूरी धरती दहल उठी,......बड़ा पुत्र संभाजी समय पर उपस्थित न होने ...... कारण छोटे पुत्र राजाराम ने अंतिम सस्कार की उत्तरक्रिया सम्पन्न की।''

जिंची में राजाराम के साथ रहते समय सभासाद ने 'बखर' लिखी है। सभासद राजाराम के प्रशासन में काम करने की वजह से सोयराबाई पर जो आरोप हुआ था उसका सभासाद ने अपनी बखर में कोई जिक्र नहीं किया है। साथ ही सभासद स्वयं ब्राह्मण होने के कारण उन्होंने सत्य को टालने का प्रयास किया है। सभासद ईश्वरप्रिय होने के क़ारण प्रस्तुत चरित्र में कहीं जगहों पर अतिरंजित एवं चमत्कारित वर्णन सभासद द्वारा किया गया है। जब अपराधबोध की भावना प्रखर होती है तब अतिरंजीत स्पष्टीकरण किया जाता है। मिसाल के तौर पर, संत तुकाराम महाराज की हत्या ब्राह्मणों ने की, इस बात को छुपाने के लिए ब्राह्मणों ने तुकाराम महाराज सदेह (देह समेत) वैकुण्ठ को गये, ऐसा लिखकर रखा है। ठीक वैसा हो ती का शिवाजी महाराज के बारे में भी अमल में लाया गया है। सभासद द्वारा शिवाजी महाराज के चरित्र का जो वर्णन किया गया है, उसे समझना बहुत जरूरी है।

शिवाजी महाराज को 'ज्वर '(बुखार) हुआ, ऐसा सभासद बताते हैं। ज्वर होने के बावजूद भी महाराज ने योगसाधना की, यह कतई संभव नहीं है। महाराज ने अपने जीवन में कभी भी योग साधना नहीं की। फिर 3 अप्रैल 1680, इस दिन ही महाराज ने आत्म ब्राह्मण्ड को लगाकर तथा दशद्वार फोड़कर प्राणत्याग करना, इस प्रकार का झुठ लिखना, इससे साबित होता है महाराज की हत्या हुई है। योग साधना के माध्यम से शरीर और मन का संतुलन रहता है, इसमें कोई दो राय नहीं है। परन्तु योग साधना से मृत्यु, अमरत्व, सिद्धी प्राप्त होती है यह सब ढकोसली बातें है। शिवाजी महाराज महल में बैठकर या जंगल में बैठकर योगसाधना करने वाले भोंदू बाबा नहीं थे। परिवार,

Scanned with CamScanner

स्वराज,समाज को तांक पर रखकर आत्मा ब्राह्मण्ड को लगाने का देशवि-
ायक उद्योग शिवाजी महाराज ने नहीं किया। बल्कि हाथ में तलवार लेकर
सामान्यजनों (रयत) का राज निर्माण करने के नियोजन के लिए अपने जीवन
के प्रत्येक क्षण का सही इस्तेमाल किया और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि
योग साधना यह काई एक दिन में प्राप्त होने वाली साधना नहीं है।

सभासद कहते हैं महाराज ने सभी सभ्य व्यक्तियों को बाहर बैठने के लिए कहा। इसका मतलब खून हुआ। उस समय महाराज के पास एक भी सभ्य या नजदीकी रिश्तेदार नहीं था। महारानी सोयराबाई रानीमहल में ही थी, शिवाजी महाराज का घर यानि 10 बाय 10 की खोली नहीं है। सिपाही, अधिकारी, मंत्री, सरदार और महारानी इनके लिए स्वतंत्र कार्यालय एवं स्वतंत्र निवास की व्यवस्था रायगड पर है। सोयराबाई स्फटीक की तरह निर्मल मन कीमाता है ऐसा अभिप्राय संभाजी महाराज ने शिवाजी महाराज की मृत्यु के पाँच माह बाद जान दिया है। इसका मतलब सोयराबई निर्दोष अर्थात सभ्य है और सभासद के मतानुसार सोयराबाई (हत्या के समय) सभ्य होने के कारण महाराज के पास नहीं थी। अन्य सभी रिश्तेदार रायगसड के नीचे पाचाड में थे। इस अवसर का लाभ लेते हुए अण्णाजी दत्तो, मोरोपंत पिंगले इन्होंने राहुजी सोमनाथ के जरिए महाराज को जहर देकर उनकी हत्या की। हत्या के बारे में संदेह निर्माण नही होना चाहिए इसलिए विभिन्न अफवाहें फैलायी गई।

शिवाजी महाराज विमान में बैठकर कैलास गये, ऐसा सभासद कहते हैं और तुरन्त अगले परिच्छेद में महाराज की चिता को राजाराम ने अग्नि दी, ऐसा भी लिखते है। विमान में बैठकर कैलास जाने के बाद फिर से अतिम संस्कार करने की क्या जरूरत है? यही कारण है कि ब्राह्मणों ने बहुजन समाज के मन में संदेह निर्माण न हो इसलिए बहुत पहले भारीदेह-सुक्ष्मदेह, आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक यह कल्पनाएँ विकसित की। शिवाजी महाराज विमान में बैठकर कैलास गये ऐसा सभासद के अलावा कोई नहीं बताता, इसका मतलब तुकाराम महाराज की तरह ही शिवाजी महाराज की हत्या कर विमान की कहानी चरित्र में घुसायी गई है। परिवर्तन का करने वाले बहुजन समाज के महापुरूषों को इसी प्रकार खत्म किया गया। इस प्रकार राहुजी सोमनाथ ने

Scanned with CamScanner

महाराज को हत्या सकी। यदि महाराज की हत्या नहीं हुई होती तो महाराज ने दुनिया में समता, स्वतंत्रता, भाईचारा प्रस्थापित किया होता। ऐसे विश्वविख्यात राजा की हत्या कर ब्राह्मणों ने केवल शिवाजी महाराज ही नहीं बल्कि समूचि दुनिया का नुकसान किया है।

शिवाजी महाराज की हत्या के कारण रायगड पर पूर्णतः तनावपूर्ण एवं डर का वातावरण था। यह खबर बाहर न जा पाये इसकी पूरी खबरदारी ली गई। यदि महाराज की हत्या होने की खबर लोगों को पता चलातीतो देश में एक भी ब्राह्मण उस जमाने में भी बहुजन समाज ने जीवित नहीं रखा होता, परन्तु ब्राह्मणों ने लोगों की दिशाभूल की महाराज की मृत्यु घुटने की बिमारी के कारण हुई ऐसी अफवा फैलायी गई। यहीं खबर दूर-दूर तक फैली। दुनिया के इतिहास में इसके पहले और आज भी घुटने की बिमारी किसी को हुई हो, ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलती। इसका मतलब ब्राह्मणों के दांव-पेंच बदलते हैं, उद्देश्य कभी नहीं बदलता। महाराज की हत्या सोयराबाई ने की ऐसा प्रचार ब्राह्मणों ने शुरू किया।

महाराज की मृत्यु अॅन्थ्रेक्स से हुई, ऐसा गलत प्रचार आज भी निनाद बेडे कर जैसे शिवाजी महाराज के दुश्मन करते हैं। (इण्डियन एक्सप्रेस, नवम्बर 2001) इसका मतलब शिवाजी महाराज की हत्या करने वाले हत्यारे निर्दोष छुटने चाहिए इसके लिए ब्राह्मणों ने कई अफवाहें फैलायी और आज भी फैला रहे हैं। लोगों को सही हत्यारों का पता नहीं चलना चाहिए इसके लिए लोगों का ध्यान आकर्षित कर उनका ध्यान बाँटना और हम कैसे बेगूनाह हैं यह बात लोगों के दिमाग में भरने के लिए ब्राह्मणी प्रचार आज भी अलग-अलग बातें फैला रहा है। महाराज की हत्या करते ही ब्राह्मणों ने राजाराम को राजसिंहासन पर बिठाया क्योंकि राजाराम बहुत कम उम्र के थे। राजाराम को नामधारी राजा बनाकर सत्ता के सभी सुत्र अपने हाथ में लेना और मौका मिलते ही राजाराम का भी काँटा निकालने का ब्राह्मण मंत्रियों का दांव था। संभाजी महाराज चतुर, चाणक्ष, पराक्रमी एवं शूरवीर थे, इसलिए मोरोपंत पिंगले, अण्णजी दत्तों ने संभाजी महाराज को कैद करने के लिए पन्हालगड की ओर प्रयाण किया था परन्तु रास्ते में हीर हंबीरराव मोहिते इन्होंने उन्हें गिरफ्तार किया और रायगड पर संभाजी महाराज का अभिषेक किया। संभाजी महाराज

Scanned with CamScanner

के हाथों में सत्ता सूत्र आते ही संभाजी की भी हत्या करने का ब्राह्मणों ने चार बार प्रयास किया परन्तु संभाजी महाराज ने उन्हें माफ कर दिया। जब चौथी बार हत्या का प्रयास हुआ तब संभाजी महाराज ने सभी ब्राह्मण मंत्रियों को मौत के घाट उतारकर शिवाजी महाराज की हत्या का बदला लिया।

महारानी पुतलाबाई सती या खून?

शिवाजी महाराज की हत्या के बाद उनकी अंतिम क्रियाविधि जल्दबाजी में निपटी गई। महाराज की हत्या के पश्चात् एक भी पत्नी सती नहीं गई। क्योंकि महाराज ने सतीप्रथा बंद की थी। किन्तु आगे चलकर पुतलाबाई सती क्यों गई? क्योंकि महाराज की हत्या के पश्चात ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ा और उन्होंने शिवाजी महाराज के समाज सुधार के कार्य को कलंकित करने के लिए पुतलाबाई सती जायें, इसके लिए महाराज की मृत्यु के 85 दिन बाद वे सती गई। इसका मतलब महाराज द्वारा की गई सामाजिक क्रान्ति को उनके घर में ही कालिख पोतने का ब्राह्मणों ने प्रयास किया।

भारत में चली सती प्रथा का पुरजोर विरोध करने वाले शिवाजी महाराज यह पहले व्यक्ति हैं। शिवाजी महाराज ने शाहूजी महाराज की अचानक मृत्यु के बाद सती जाने वाली खूद की माँ जिजाऊ माँ साहब के सती जाने का विरोध कर इस दुष्ट परंपरा को तिलांजली दी। ऐसे राजा की महारानी पुतलाबाई के सती जाने के पीछे की कारण मिमांसा स्पष्ट होना जरूरी हैं।

पुतलाबाई महाराज की हत्या के ठीक 85 दिन बाद सती गई है, इसका मतलब पुतलाबाई को सती जाने के लिए उकसाया गया और इसके लिए ब्राह्मणों ने धर्म को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया। परन्तु सती जाना यह सुसंस्कृत होने का लक्षण नहीं हैं, बल्कि अमानुषता है। यह खुल्लम-खुल्ला हत्या है। पति के मरने के बाद सती जाने की अनिष्ठ प्रथा रूढ़ हुई, परन्तु पत्नी के मरने के बाद एक भी आदमी सती नहीं गया। इसका क्या कारण है? आदमी को कोई भी सौभाग्य सुवर्णालंकार नहीं होता, किन्तु महिलाओं को सौभाग्य अलंकार होता है।

पति की मृत्यु के बाद पत्नी ने ऊँचे वस्त्र परिधान कर सोने के आभूषण पहनकर पति की चिता के पास जाना चाहिए। चिता के पास जाने पर ब्राह्मण पुरोहित विधिवत रूप से उस महिला को चिता पर बिठाते थे, किन्तु

Scanned with CamScanner

सती जाने से पूर्व उस महिला के सभी आभूषण ब्राह्मण पुरोहित को निकालकर देना बंधनकारक था और बाद में चिता को अग्नि दी जाती थी। वह महिला चिता से बाहर न आने पाये इसलिए हाथ में लम्बी-लम्बी काठियाँ लेकर उसे ढकेलने के लिए आदमी चिता के इर्द-गिर्द खड़े रहते थे। उसके चिल्लाने का आवाज न आने पायें इसलिए ऊँची आवाज में बाजा बजाया जाता था और यह कृत्य धर्म एवं सस्कृति के नाम पर किया जाता था। यह सब किसलिए? उस सती जाने वाली महिला ने बदन पर पहने सोने के आभूषण ब्राह्मणों को मिलने चाहिए, इसलिए ब्राह्मणों ने सतीप्रथा शुरू की। दौलत की खातिर ईश्वर धर्म के नाम पर खुल्लम-खुल्ला खून करने की घिनौनी परंपरा ब्राह्मणों ने शुरू की थी, पुतलाबाई इस प्रथा की बली चढ़ी।

पुतलाबाई से सोना-दौलत हथियाने के लिए संस्कृति के नाम पर ब्राह्मणों ने पुतलाबाई को बली चढ़ाया। बहुजन महिलाओं की तरह ब्राह्मण महिलाओं को भी बली चढ़ाया गया। वर्ण-व्यवस्था में भारत की किसी भी महिला को स्थान नहीं था। ब्राह्मण विदेशी हैं, वे केवल पुरूष ही भारत में आये। ब्राह्मण महिलाएँ बहुजन समाज की होने के कारण ब्राह्मणों ने उन महिलाओं का भी उत्पीड़न किया। यही कारण है। पुना की विधवा ब्राह्मण महिलाओं को जोशी, देशपांडे, अभ्यंकर की बजाए राष्ट्रपिता जोतिबा फुले अपने लगे और उन्होंने जोतिबा फुले के पास आश्रय लिया।

शिवाजी महाराज की ज्येष्ठ महारानी सईबाई की 5 दिसंबर 1659 को बिमारी के कारण मृत्यु हुई। शिवाजी महाराज की हत्या के बाद केवल पुतलाबाई सती गई, पुतलाबाई के अलावा कोई सती नहीं गयी। इस समय ब्राह्मणों ने दबाव तंत्र अपनाया यह सभी घटनाएँ ब्राह्मणों की गैर-मौजूदगी में की। (बड़े-बड़े घरों की महिलाओं के भोलेपन का गलत फायदा उठाकर ब्राह्मणों उन्हें विभिन्न प्रकार के विधि करने के लिए उकसाते हैं। महिलाएँ पति के पीछे चुपचाप यज्ञ-याग, अभिषेक, सत्यानारायण कर ब्राह्मणों को ढ़ेर सारा धन देती हैं।) देव-धर्म के नाम पर दुष्ट वैदिकों ने पुतलाबाई जैसी आदर्श महारानी का खून किया। पुतलाबाई 27 जून 1680 को सती नहीं गई बल्कि सती जाने के नाम पर वैदिकों ने पैसे के लिए पुतलाबाई का खून किया। पुतलाबाई की कबर पर जानबुझकर कुत्ता रखा गया।

Scanned with CamScanner

रामदास संत नहीं, स्वराज में पलनेवाला केंचुआ

शिवाजी महाराज का सबसे खतरनाक दुश्मन यानि रामदास। उसे शिवाजी महाराज का गुरू बनाने का अनैतिहासिक प्रयास जातिवादी इतिहासकारों ने किया। सच्चाई यह है कि शिवाजी महाराज और रामदास की कभी मुलाकात ही नहीं हुई। इसलिए रामदास शिवाजी महाराज का गुरू नहीं था, यह साबित होता है। परन्तु रामदास शिवाजी महाराज का दुश्मन था यह बात बहुत सारे लोगों को पता ही नहीं है।

रामदास यह आदिलशहा और औरंगजेब का जासूस था। रामदास अफजलखान के मित्र बाजी घोरपड़े इसके आश्रय में था। एक ओर शिवाजी महाराज किला सर करते हैं, किले बँधवाते हैं, दूसरी ओर रामदास अंधश्रद्धा फैलाने का काम कर रहा था। पुरोहित भटों को जीने के लिए रामदास ने मन्दिर बनावायें। इसलिए रामदास ने शिवाजी महाराज की बजाए 'राम' नाम का जयघोष किया। महाराज किलो बँधवा रहे थे। जिसक पास किला, उसका राज, ऐसा वो समय था, परन्तु रामदास मन्दिर बाँधने में व्यस्त था। क्योंकि जहाँ मन्दिर वहाँ ब्राह्मणों का राज। महाराज एक विज्ञानवादी राजा थे। महाराज के इस क्रान्तिकारी कार्य को विरोध करने का काम रामदास ने किया।

रामदास खूद की शादी के समय 'सावधान' कहते ही शादी के बोहले पर से भाग गया। भागने से पूर्व वो बोहले पर दुल्हे के रूप में खड़ा था। अर्थात उसने लड़की पसंद की थी। शादी तय हुई थी। बाराती आ गये थे, दुल्हन उसके सामने खड़ी थी। मंगलगाथा शुरू हुई। मंगलगाथा पुरी होने को थी, और आखिरी शब्द 'सावधान' कहते हीरामदास बोहले पर से दुम दबाकर भाग गया। यह एक तो मुर्खता का या फिर सामाज विघातक लक्षण है। क्योंकि उस जमाने में बदन को हल्दी लगी और शादी टुटती है तो लड़कियों को आजीवन अविवाहित रहना पड़ता था। उस जमाने में दुल्हन के भविष्य की जरा भी चिंता न करते हुए शादी के मंडप से भाग जाने वाला रामदास शिवाजी महाराज का गुरू कतई नहीं हो सकता। सच कहा जाए तो वो समाजद्रोही जरूर हो सकता है क्योंकि उस दुल्हन लड़की की जगह पर हमारी बहन या लड़की होती तो हमें क्या लगता?

शिवाजी महाराज के जीवन में आये किसी भी महत्वपूर्ण एवं रोमांचकारी

Scanned with CamScanner

क्षण में रामदास ने महाराज को परोक्ष या अपरोक्ष से मदद करने का इतिहास में कहीं पर भी जिक्र नहीं मिलता। अफजलखान पर हमला, आगरा कैद, राज्याभिषक इसमें से किसी भी समय रामदास शिवाजी महाराज की सहायता करने के लिए नहीं आया था। समकालीन जेधे शकावली, सभासद बखर, शिवभारत या अन्य किसी भी ग्रंथ में रामदास के नाम का जिक्र नहीं है। रामदास के नाम का जिक्र नहीं है।

देवी ब्राह्मणी सत्ता करी । तो एक मुर्ख ॥68॥ (दासबोध-2/1/68)

अर्थात, जो ब्राह्मणों पर राज करता है वो मुर्ख होता है, ऐसी उसकीराय है अर्थात गैर-ब्राह्मणों ने केवल सेवा ही करना चाहिए ऐसा रामदास का आग्रह शिवाजी महाराज राज्याभिषेक कर राजा बने इसलिए ब्राह्मणों को भी दण्डित करने का अधिकार शिवाजी महाराज को प्राप्त हुआ। इससे रामदास अस्वस्थ्य हुआ और महाराज को मुर्ख कहने तक उसकी मजाल हुई। वो कहता है-

नीच प्राणी गुरूत्व पावला । तेथे आचाराची बुडाला
वेदशास्त्र ब्राह्मणाला। कोण पुसे ॥ (दासबोध-14/7/29)

बहुजन समाज में शिक्षा का प्रचार होने से रामदास को काफी दुःख हुआ अध्ययन केवल ब्राह्मणों ने ही करना चाहिए ऐसा उसका आग्रह था। उसका कहना है कि शूद्रों ने पढ़ना शुरू किया इसलिए समाज में अनाचार बढ़ा। आचार डूब गया ऐसा वो शिकायत करता है। बहुजन समाज द्वारा शिक्षा हासिल करने से वेदशास्त्र में निपून ब्राह्मणों को कोई पूछता तक नहीं, इसका उसे बुरा लगता है। इसका मतलब वो जातिवादी तो थी ही, साथ ही वो वर्ण व्यवस्था का कट्टर समर्थक तथा कर्मठ ब्राह्मणवादी भी था। इसलिए शूद्रों द्वारा शिक्षा हासिल करने पर उसके पेट में दर्द होने लगा। इसलिए वो आगे कहताहै-

राज्य नेले म्लेंच्छ क्षेत्री । गुरूत्व नेले कुपात्री ॥
आपण अरत्री ना परत्री काहीच नाही ॥ (दासबोध-14/7/36)

अर्थात, राज मुसलमानों एवं क्षत्रियों के पास गया। शिवाजी महाराज का गुरूत्व संत तुकाराम महाराज की तरफ गया और हमारे ब्राह्मणों के हाथ में कुछ भी नहीं बचा इसलिए वो चिल्ला रहा था। यह संत होने का लक्षण कतई नहीं है। संतो के कार्यो को जाति, पंत, प्रान्त, भाषा, देश और धर्म का कोई

Scanned with CamScanner

बंधन नहीं होता। संत सभी जाति के कल्याण के लिए जीते हैं, परन्तु रामदास केवल ब्राह्मणों के लिए ही लड़ रहा था, इसलिए रामदास यह संत नहीं बल्कि स्वराज में पलने वाला एक (Worm) केंचुआ था, वो ब्राह्मणों के उद्धार के लिए और बहुजनों के पतन के लिए कैसे जी रहा था इसके सबूत 'दासबोध' में ही मिलते हैं।

गुरू तो सकळासी ब्राह्मण । जरी तो झाला क्रियाहीन

रामदास कहता है, ब्राह्मण चाहे क्रियाहिन, निष्क्रिय हीं क्यों न हो, सभी जाति-धर्म के लोंगो ने ब्राह्मण को ही गुरू बनाना चाहिए। अर्थात ब्राह्मणों वर्चस्व बरकार रहे और बगैर श्रम किये ही ब्राह्मणों को धन मिलता रहे यह उसकी इच्छा थी अध्यापक ब्राह्मणों के अलावा कोई नहीं होना चाहिए यह उसकी इच्छा थी।

सकळांशी पूज्य ब्राह्मण। हे मुख्य वेदाज्ञा प्रमाण ।

ब्राह्मण वेद मुर्तिमंत । ब्राह्मण तोचि भगवंत

ब्राह्मणों को सभी ने ईश्वर मानना चाहिए ऐसा वेद बताते हैं। ब्राह्मण यही वेद और ईश्वर हैं, ऐसे रामदास कहता है अर्थात सभी ने ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए यह रामदास का आग्रह था।

लक्षभोजनी ब्राह्मण । आन जातीस पसे कोण ।।

लक्षभोजन यह तो ब्राह्मणों का ही अधिकार है। अन्य जातियों को पूछने का कोई मतलब नहीं है ऐसी उसकी राय है। अर्थात ब्राह्मणों को मुफ्त में भोजन देना चाहिए ऐसा वो कहता है।

असो ब्राह्मण सुरवर वंदिती । तेथे मानव बापुडे किती

अब तो रामदास बहुजन समाज को डर ही बता रहा है कि जहाँ भगवान ही ब्राह्मणों को वंदन करता है वहाँ इन्सान की क्या औकात है।

जरी ब्राह्मण मुढ़मती । तरी तो जगद्वंद्य

अब तो रामदास ने कहर ही किया है, वो कहता है, ब्राह्मण चाहे मुर्ख ही क्यों न हो चलेगा, वो दुनिया के लिए वंदनीय होता है। (बाबासाहब डा॰अम्बेडकर द्वारा लिखित संविधान के कारण अच्छा हुआ अन्यथा सभी मुर्ख ब्राह्मण सभी पदों पर विराजमान होते।)

अंत्यज शब्दज्ञाता बरवा। परी तो नेऊन काय करावा

Scanned with CamScanner

ब्राह्मण संन्निष पूजावा। हे तो न घडे की ।

अंत्यज (दलित) शब्द उच्चरण के लिए ही अच्छा है, परन्तु वो ब्राह्मणों की बराबरी नहीं कर सकता, ऐसा कहकर रामदास ने जातिवादी होने की मर्यादा ही लांघी है।

अंतर एक तो खरे। परी सांगते घेऊ न येती महारे
पंडित आणि चाटे पोरे। एक कैसी। ।।31।।
मनुष्य आणि गधडे। राजहंस आणि कोंबडे
राजे आणि माकडे। एक कैसी । ।।4।।
भागीरथीचे जळ आप। मोरी संवदणी तो ही आप ।
कुश्चिळ उदक अल्प। सेवसेना। ।।5।।

ब्राह्मण और महार इनका आत्मा एक ही क्यों न हो फिर भी उनकी और ब्राह्मणों की बराबरी नहीं हो सकती। (यहाँ पर रामदास ने यमक जोड़ने के लिए 'महार' शब्द लिया है, परन्तु सभी जातियाँ नीच हैं और केवल ब्राह्मण ही श्रेष्ठ हैं ऐसा उसका पक्की राय है) ब्राह्मण छोड़ शेष सभी जातियों को वो गदहा, बंदर, मुर्गा, निर्लज्ज, गटार का पानी, आदि उपमा देता है वो ब्राह्मण को राजा, हंस, गंगाजल की उपमा देता है। ऐसे बहुजन विरोधी रामदास के 'दासबोध' पर सरकार द्वारा पाबंदी लगानी चाहिए। रामदास तथा रामदासी सम्प्रदाय के सम्पूर्ण वाङ्मय पर बहुजन समाज को बहिष्कार डालना होगा। दुनिया के सभी इन्सान समान हैं, दुनिया की सभी जातियाँ, धर्म, पंत, प्रान्त, भाषा, देश यह मानवनिर्मित हैं फिर भी जातिवाद फैलाने वाले रामदासी सम्प्रदाय पर 'एट्रासिटी एक्ट' के तहत केस दायर करनी चाहिए।

शिवाजी महाराज ने बाबा याकून, मौनी बाबा, संत तुकाराम महाराज इनकी सलाह लेने का कई जगहों पर जिक्र मिलता है। क्योंकि वे संत चरित्रसम्पन्न को उनके प्रति बहुत आदर था। शिवाजी महाराज रामदास की मूलाकात करने कभी भी नहीं गये। परन्तु रामदास के शिष्य कई बार शिवाजी महाराज के पास भीख मांगने के लिए आये थे। इस अवसर पर शिवाजी महाराज उन शिष्यों को पूछते हैं कि "कौन है यह रामदास?" इसका मतलब महाराज रामदास को नहीं पहचानते थे।

हर-हर महादेव यह शिवाजी महाराज का घोषवाक्य था, क्योंकि

Scanned with CamScanner

महादेव बहुजन समाज का आद्य क्रान्तिकारी था। महादेव भगवान नहीं है। वैदिकों ने महादेव का भी ब्राह्मणीकरण किया। रामदास की घोषणा "जय-जय रघुवीर समर्थ" ऐसी थी। रामदास और शिवाजी महाराज इनके घोषवाक्य में काफी अंतर था। रामदास हरे वस्त्र धारण करता था। रामदास को अच्छी उर्दू आती थी। रामदास ने औरंगजेब से कई बार मुलाकात की थी दोनों ने मिलकर खाना भी खाया था। इसका मतलब रामदास और औरंगजेब के नजदीकी संबंध थे। दिल्ली में रामदास ने औरंगजेब के साथ खाना खाया था, यह सच्चाई है।

शिवाजी महाराज को केशरी (भगवा) निशान एवं राजमुद्रा शहाजी महाराज ने दी थी। अर्थात गुरू के तौर पर रामदास की महाराज को कुछ भी मदद नहीं है। शिवाजी महराज की कई गुप्त योजनाएँ रामदास ने औरंगजेब-आदिलशहा को बतायी थी। बाजी घोरपडे को शिवाजी महाराज के खिलाफ भडकाया था। मराठों को महाराज के खिलाफ भड़काने का काम रामदास ने किया। ब्राह्मणों के लिए वो मरते दम तक प्रयासरत था इसमें कोई शक नहीं। परन्तु खुद की जाति के लिए कार्य करते समय बहुजन समाज को तथा शिवाजी महाराज को रामदास ने काफी तकलीफ दी। आखिरकार ब्राह्मणों के भविष्य के लिए उसने 'दासबोध' यह ग्रंथ लिखा। इतना तय है कि संत तुकाराम महाराज जैसे चरित्रसम्पन्न समाज सुधारक गुरू को खत्म करने के लिए ही वैदिकों ने रामदास को शिवचरित्र में घुसाया है। रामदास को शिवाजी महाराज का गुरू बताने के लिए ही ब्राह्मणों ने कई झूठे सबूत, दस्तावेज, स्थान, चित्र निर्माण किये।

आदिलशहा का नौकर दादू कोंडदेव कुलकर्णी

दादू कोंडदेव का सही नाम दादू कोडदेव कुलकर्णी है। दादू कुलकर्णी यह आदिलशहा का नौकर (मोकाशी) था। संत तुकाराम महाराज की प्रताड़ना करने वाले लोग दादू कुलकर्णी के समर्थक थे। अर्थात दादू कुलकर्णी यह शिवाजी महाराज का दुश्मन था। दुश्मन व्यक्ति को भी ब्रह्मणों ने शिवाजी महाराज का गुरू बनाया। दादू कुलकर्णी का शिवचरित्र से कोई संबंध नहीं है। दादू कुलकर्णी युद्ध विद्या में अकुशल था। शिवाजी महाराज को युद्ध विद्या का प्रशिक्षण शहाजी महाराज ने दिया। जिजाऊ माँ साहब ने उसका सराव (प्रैक्टीस)

Scanned with CamScanner

लिया। कान्होंजी जेधे, येसाजी केक, मुंढवा के गायकवाड, तुपे, मोझे, पायगेडे और शहाजी महाराज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। वीर बाजी पासलकर इन्होंने बालक शिवबा को पुना और आसपास के इलाके में महत्त्वपूर्ण सहायता की। ब्राह्मण गुरू के बगैर कोई भी नहीं बन सकता। यह लोगें के दिलो-दिमाग पर बिठाने के लिए ब्राह्मणों ने दादू कुलकर्णी का थोड़ा भी जिक्र नहीं है।

शिवाजी महाराज के गुरू संत तुकाराम महाराज का उत्पीड़न

संत तुकाराम महाराज शिवाजीमहाराज के वास्तविक गुरू हैं इसमें कोई दो राय नहीं है। परन्तु संत तुकाराम महाराज का गुरूत्व समाप्त करने के लिए रामदास को शिवचरित्र में घुसाया गया है। तुकाराम महाराज के प्रबोधन के कारण ही कई ही कई लोग प्रभावित हुए। शिवाजी महाराज ने संत तुकाराम के कई कीर्तन प्रत्यक्ष रूप से सुने थ। उनके प्रभावपूर्ण कीर्तन के कारण ब्राह्मणशाही को धक्का पहुँचा। इसलिए ब्राह्मणों ने तुकाराम महाराज को तकलीफ देना शुरू किया। मंबाजीभट, रामेश्वरभट ने उनकी बदनामी की। उनके अभंगों की गाथाएँ उन्होंने पानी में डूबायी। इतना ही नहीं तो तुकाराम को दण्ड देना चाहिए ऐसी मांग देहु के दो ब्राह्मणों ने आदिलशहा का (मोकाशी) नौका दादू, कुलकर्णी के पास की।

आखिरकार उनकी हत्या कर वे संदेह बैकुण्ठ को गये, ऐसा झूठा प्रचार ब्राह्मणों ने आरंभ किया। (महापुरूषों की हत्या होने मात्र से उनकी योग्यता समाप्त नहीं हो जाती। दुनिया में कई महापुरूषों की हत्याएँ हुई हैं, परन्तु जनता ने उन्हें नहीं नकारा।) राज्याभिषेक के समय भी ब्राह्मण शिवाजी महाराज के साथ गलत व्यवहार कर रहें थे। तुकाराम महाराज की हत्या के समय तो ब्राह्मणों की क्रूरता का कोई अंत ही नहीं रहा। छ॰शिवाजी-संत तुकाराम महाराज का आन्दोलन समाप्त करने के लिए ब्राह्मणों ने मुसलमानों के साथ समझौता किया था।

तुकाराम महाराज की मृत्यु के पश्चात पेशवाओं ने उनकी गाथा जलायी उनके अभंग गाने पर पाबंदी लगा दी गई। यदि कोई व्यक्ति अभंग गाता है तो पेशवाई (ब्राह्मणशाही) में उसे दंडित किया जाता था। आज भी ज्ञानेश्वर की पालखी के आगे संत तुकाराम महाराज की आरती कहने का विरोध किया जाता है। देहू और आलंदी इन गांवो के विकास का फर्क खुले

Scanned with CamScanner

रूप से देखा जा सकता है। आलंदी का उदात्तीकरण और देहू को अविकसीत रखने के पीछे किसकी साजिश है? महाराष्ट्र में यदि कोई नया मेहमान आता है तो उसे आलंदी में ले जाया जाता है किन्तु देहू को नहीं ले जाया जाता। अर्थात संत तुकाराम और शिवाजी महाराज का विरोध करने वाले एक ही हैं।

संत तुकाराम बनाम रामदास

संत तुकाराम महाराज ने 17 वीं सदी में समाज परिवर्तन का काफी बड़ा काम किया। तुकाराम महाराज के कार्य को देहू और आसपास के ब्राह्मणों ने जमकर विरोध किया। इसी काल में रामदास की विचारधारा एवं कार्यपद्धति का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि तुकाराम महाराज शोषित, वंचित, श्रमजीवि किसानों के हित के लिए लड़ रहे थे और रामदास मस्ती में चढ़े ऐदी, मग्रूर, वर्णाभिमानी ब्राह्मणों के लिए लड़ रहा था। तुकाराम महाराज यह छत्रपति शिवाजी महाराज के शुभाचिंतक, प्रेरक थे। दूसरी तरफ रामदास शिवाजी महाराज का कट्टर दुश्मन तथा आदिलशहा का हितैशी सहायक था। सारांश, तुकाराम महाराज बनाम रामदास ऐसी लड़ाई 17 वीं सदी में चली। इस लड़ाई को विस्तार से जानना होगा।

तुकाराम महाराज ने वर्ण व्यवस्था-विषमता के खिलाफ आवाज उठायी। समता प्रस्थापित करने के लिए उन्होंने अपने अभंगों की रचना की। वे कहते हैं-

मुंगी आणि राव। आम्हा सासरिखाची जीव ।।

चिटी और राजा चाहे एक ही समय मेरे पास क्यों न आयें, मेरे लिए तो दोनों समान है।

भेदाभेद भ्रम अमंगळ ।

विषमता का पालन करना गलत बात है, ऐसा तुकाराम महाराज बताते हैं। दूसरी तरफ रामदास कहता है-

अंतर एक तो खरे । परि संगतो येऊ न येती महारे ।
पंडित आणि चाटी पोरे । एक कैसी ।।३।।
मनुष्य आणि गधडे । राजहंस आणि कोंबडे ।
राजे आणि माकडे । एक कैसी ।।४।।
भागिरथीचे जळ आप । मोरी सवंदणी तो ही आप ।

कुश्चिळ जळ आप। सेववेना ॥

अर्थात, रामदास कहता है ब्राह्मण यानि विद्वान और बहुजन यानि गदहा, ब्राह्मण यानि राजहंस और बहुजन यानि मुर्गा, ब्राह्मण यानि राजा और बहुजन यानि बंदर, ब्राह्मण यानि गंगा जल और बहुजन यानि गटार का पानी। सारांश, रामदास की यह राय है कि ब्राह्मण श्रेष्ठ है और ब्राह्मण छोड़ शेष सभी (बहुजन) नालायक हैं ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का प्रचार करने वाले रामदास को टक्कर देने वाले विचार तुकाराम महाराज ने प्रतिपादित किए हैं। तुकाराम महाराज कहते हैं-

पंडित म्हणता थोर सुख । परि पाहता अवघा मुर्ख ॥

ब्राह्मण (पंडित) कहने के बाद हमें लगता है कि ब्राह्मण यह विद्वान, सज्जन होना चाहिए किन्तु जब आप ब्राह्मणों का अवलोकन करेंगे तब आपको पता चलेगा कि ब्राह्मण जितना मुर्ख दुनिया में दूसरा कोई नहीं है।

तुकाराम महाराज के अभंग यानि रामदास के वर्ण वर्चस्ववाद अहंभाव को करारा जबाव है।

रामदास कहता है-

जरी ब्राह्मण मूढमती। तरी तो जगद्वंद्य ॥

ब्राह्मण चाहे मुर्ख, अनपढ़ ही क्यों न हो, दुनिया ने उसे नमन करना चाहिए ऐसा रामदास का कहना है। दूसरी तरफ ऐसे लोगों के संबंध में तुकाराम महाराज कहते हैं-

अभक्त ब्राह्मण जळो त्याचे तोंड । काय त्याची रांड प्रसवली ॥

संत तुकाराम महाराज ने समता प्रस्थापित करने हेतू ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर प्रहार कर उसका खण्डन किया।

रामदास का स्पष्ट रूप से यह कहना था कि ब्राह्मण छोड़ कोई भी गुरू अध्यापक नहीं होना चाहिए। इस संबंध में रामदास लिखता है-

गुरू तो सकळाशी ब्राह्मण । जरी तो झाला क्रियाहीन ॥

ब्राह्मण चाहे निष्क्रिय ही क्यों न हो, उसे ही गुरू बनाना चाहिए। गैरब्राह्मण के गुरू-अध्याापक-शिक्षक-मार्गदर्शक होने के संबंध में रामदास कहता है-

नीच प्रणी गुरूत्व पावला । तेथे आचारची बुडाला ।

Scanned with CamScanner

वेदशास्त्र ब्राह्मणातला । कोण पुसे ॥ (दासबोध 14:7:29)

गैरब्राह्मणों द्वारा गुरू, अध्यापक, मार्गदर्शक होने के रामदास नीचता कहता है। ब्राह्मण अध्यापक, प्रोफेसर छोड़ अन्य किसी के भी पास मेरीट नहीं हो सकता। हमें नालायक ठहराने वाले रामदास के संबंध में कौन-सी भूमिका ली जाए यह तेली, माली, मराठा, धनगर, अनुसूचित जाति, जनजाति के अध्यापकों को तय करना होगा कि रामदास की किस प्रकार पूजा की जाए? रामदास के अहंभाव की मस्ती तुकाराम महाराज ने अपने अभंगों के माध्यम से उतरायी। संत तुकाराम महाराज कहते हैं।

एक रीति गुरू-गुरू । भोवता भारू शिष्यांचा ॥

पूस नाही पाय चार। मानसे परी कुत्री ती ॥

संत तुकाराम महाराज ब्राह्मणों की गुरू परंपरा को नाकरते हैं। बहुजन समाज के जिस व्यक्ति के पास मेरीट है वो गुरू, मार्गदर्शक हो सकता है। परंपरागत दृष्टि से ब्राह्मण ही गुरू होना चाहिए, ऐसा आग्रह धरने वाले लोगों को उपरोक्त अभंग के माध्यम से खड़सते हुए वे कहते हैं कि जो अपने आप को गुरू-गुरू कहते घूमते हैं और अपने इर्द-गिर्द शिष्यों का जमावड़ा रखते हैं ऐसे यानि, उन्हें एक पूछ और चार पैर ना भी हो, वे इन्सान की तरह ही क्यों न दिखते हो, फिर भी वे कुत्ते हैं, ऐसा कहकर तुकाराम महाराज ने ब्राह्मणी वर्चस्व का पर्दाफाश किया है।

संत तुकाराम महाराज एक प्रयासवादी व्यक्ति थे। 'असाध्य ते साध्य करिता सायास। कारण अभ्यास तुका म्हणे।' यह तुकाराम महाराज की भूमिका थी। लाचारी, मन्नत, भीख मांगना तुकाराम महाराज ने नकारा। भीख मांगने के संबंध में तुकाराम महाराज कहते हैं-

भिक्षापात्र अवलंबिणे । जळो जिणे लाजिरवाणे ॥

भीख मांगकर जीते हो, आपको शर्म नहीं आती? मेहनत करके अपना जीवन बसर करो, ऐसी सलाह तुकाराम महाराज देते है। उस जमाने में 'भीख मांगकर जिना यह लज्जास्पद बात है' ऐसा तुकाराम महाराज अधिकारिक तौर पर कहते हैं। दूसरी तरफ रामदास कहता है-

गोरक्षस वाणिज्य कृषि । त्याहून प्रतिष्ठा भिक्षेसी ॥

विसरो नये झोळीशी । सर्व काळे ॥

Scanned with CamScanner

रामदास ने ब्राह्मणों की मुफ्त में खाने की व्यवस्था की। धर्म के नाम पर दूसरों के श्रम पर ब्राह्मणों के जीने की व्यवस्था करने वाला रामदास यह ब्राह्मणों का अर्वाचीन ''मैनेजमेंट गुरू'' है।

संत तुकाराम महाराज मुफ्त में खाने के घोर विरोधी हैं। वे कहते है

जेथे किर्तन करावे । तेथे अन्न न सेवाये ।।

अर्थात जहाँ कीर्तन किया जाएगा, वहां अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। ऐसा तुकाराम महाराज की भूमिका थी और रामदास मुफ्त में खाने का समर्थक था। इसलिए ब्राह्मण यदि, मुफ्तखोर, दूसरों के श्रम पर जीने वाले भट-पुरोहित एवं वर्चस्ववादी बने और आज भी हैं। संत तुकाराम महाराज एक चरित्र सम्पन्न व्यक्ति थे। ''परनारी रखुमाई समान'' ऐसा तुकाराम महाराज बार-बार कहते हैं। धर्म के नाम पर व्यभिचार, दुराचार, भोंदुगिरी करने वाले धर्म के ठेकेदारों को तुकाराम महाराज कहते हैं-

ऐसे कैसे झाले भोदू । कर्म करोनी म्हणती साधू ।।
अंगा लावूनिया राख । डोळे झाकूनीकारिती पाप ।।
दावी वैराग्याची कळा । भोगी विषयांचा सोहळा ।।
तुका म्हणे सांगो किती । जळो तयाची संगती ।।

बदन को राख लगाकर साधू का भेष धारण कर लोगों को फँसाने वाले भोंदू बाबा से संबंध मत रखिए, ऐसा तुकाराम महाराज कहते हैं। दूसरी ओर रामदास कहता है-

जारकर्म केले जरी सद्गुरूंनी । मानावे शिष्यांनी कृष्णरुप ।।

रामदास यह शोषण का समर्थन करता है और संत तुकाराम महाराज ने शोषण के खिलाफ संघर्ष किया, इतना ही नहीं बल्कि शोषण करने वालों के साथ क्या करना चाहिए इस संबंध में बताते हुए वे कहते हैं-

तुका म्हणे गाढव । जेथे भेटेल तेथे ठोका ।।

धर्म के नाम लोगों का शोषण करने वाले गुरू जहाँ-जहाँ पर भी मिलंगे उन्हें वही पर पीटना चाहिए।

तुका म्हणे लंड । त्याचे हाणोनि फोडा तोंड ।।

ऐसे ब्राह्मणों का मूँह फोड़ना चाहिए, ऐसा तुकाराम महाराज कहते हैं। एक ओर रामदास दृष्ट ब्राह्मणों का समर्थन करता है, तो संत तुकाराम महाराज

Scanned with CamScanner

निर्मल, सत्य, मंगलमय, उदात्त, शोषणविरहीत, समता आधारित समाज रचना चाहते थे।

संत तुकाराम महाराज और रामदास इनकी बारिस की वर्षा होने पर क्या भूमिका थी, यह उनकी निम्नलिखित रचना से पता चलता है। रामदास कहता है=

उदंड झाले पाणी स्नान संध्या करावया ।।

रामदास कहता है, वर्ष काफी हुई है, स्नान कर लीजिए। दूसरी ओर संत तुकाराम महाराज कहते हैं।

जोडिले ते आता नसरे सरिता । जीव बळी देता हाता आलें ।

संचित सारूणि बांधिले धरणें । तुंबिले जीवन सासक्षेपें हे ।।

संत तुकाराम महाराज कहते हैं, 'बारिस में पड़ने वाले वर्षा के पानी को जल्द से जल्द बाँध लगाईए। उसके लिए आप अपनी जमा पूँजी खर्च करें, परन्तु पानी इकट्ठा करें।' तुकाराम महाराज श्रमजीवि, किसान के हित की दृष्टि से विचार करते हुए कह रहे हैं कि यदि आप जल्द से जल्द वर्षा का पानी अड़ाते हैं तो उस पानी का इस्तेमाल पीने के लिए, खेती के लिए एवं नहाने के लिए होगा। उसके लिए 'बाँध' बनाईए। वही दूसरी ओर रामदास किसानों के हित में सोचने की बजाए केवल संध्या स्नान की भूमिका प्रतिपादित करता है।

संत तुकाराम महाराज के 'कीर्तन' सुनकर शिवाजी महाराज और उनके मावला साथी प्ररित हुए। तुकाराम महाराज ने प्रयासवाद, समतावाद और विज्ञानवाद अपने कीर्तन के जरिये लोगों के सामने रखा। वे कहते है-

असाध्य ते साध्य करिता सायास । कारण अभ्यास तुका म्हणे ।।

दुनिया में सब कुछ संभव है, असंभव कुछ भी नहीं, केवल आप प्रयास करें।

भेदाभेद भ्रम अमंगळ ।

विषमता का पालन करना गलत है।

नवसे कन्या पुत्र होती । मग का करने लगे पती ।।

ईश्वर की कृपा से या मन्नत मांगने से आपको कुछ भी मिलने वाला नहीं है। यदि आप किसी लक्ष्य को पाना चाहते हैं तो आपको मेहनत करनी होगी।

Scanned with CamScanner

संत तुकाराम महाराज के किर्तन की वजह से समूचे 'मावल' मुल्क में चेतना निर्माण हुई। तुकाराम महाराज की कलम और विचारों से ही मराठा युवाओं को सही दिशा मिली। छत्रपति शिवाजी महाराज के 'स्वराज' के प्रति तुकाराम महाराज को असीम आस्था थी। दोनों एक-दूसरे की योग्यता से भलिभाँति वाकिफ थे। दोनों के मन में एक-दूसरे के प्रति नितांत आदर था। परन्तु तुकाराम महाराज ने अपने गुरु होने का कभी डंका नहीं पीटा और न ही उनके शिष्यों द्वारा वैसा वर्चस्ववादी प्रचार हुआ। शिवाजी महाराज द्वारा भेजी गई भेंट वस्तुएँ तुकाराम महारज ने सम्मानपूर्वक लौटा दी। शिवाजी महाराज संत तुकाराम महाराज का बहुत आदर करते थे, परन्तु चरणों पर सिर रखने जितने वे कम बुद्धि के भी नहीं थे। एक-दूसरे के मित्र-मार्गदशक होना चाहिए किन्तु गुलाम नहीं होना चाहिए, ऐसी तुकाराम महाराज की भूमिका थी। इस भूमिका के तहत ही शिवाजी महाराज का स्वराज निर्माण होना चाहिए। ऐसी तुकाराम महाराज की जिद्द थी। इसलिए उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज एवं मावलों के लिए अभंग लिखे उन अभंगों को ही सिपाहियों के अंभंग (पाईकीचे अभंग) ऐसा कहा जाता है। सरकारी गाथा में 1062 से लेकर 1072 ऐसे कुल दस अभंग हैं। इनमें तुकाराम महाराज कहते हैं से पता चलता है। रामदास कहता है-

उदंड झाले पाणी स्नान संध्या करावया ।।

रामदास कहता है, वर्ष काफी हुई है, स्नान कर लीजिए। दूसरी ओर संत तुकाराम महाराज कहते हैं।

आपणा राखोनी ठकावे आणिक। घ्यावे सकळीक हरुनिसा ।। (1062)

संत तुकाराम महाराज सिपाहियों को मंत्र देते हैं कि खूद की रक्षा कर दुश्मन को धूल चटाएँ और खूद की रक्षा कर दुश्मन का सब कुछ छीन ले। अगले अभंग में तुकाराम महाराज कहते हैं-

जब तक स्वामी एक निश्चित मुकाम तक नहीं पहुँच जाता तब तक सिपाही (पाईक) अपनी जगह नहीं छोड़ता। वैसे ही मजबूती से पैर जमाकर दुश्मन को उसका रास्ता बताता है। ऐसा विश्लेषण तुकाराम महाराज ने सिपाहियों का किया है। इसी वजह से तानी मालुसरे, वीर बाजी पालकर, येसाजी कंक, कान्होजी जेधे, बाजीप्रभ देशपांडे (सीकेपी) शिवाजी काशीद, जिवाजी महाले

Scanned with CamScanner

आदि शुर वीर सिपाही स्वराज में निर्माण हुए।

तात्पर्य, संत तुकाराम महाराज ने स्वराज के लिए प्रबोधन का कार्य किया, वही दूसरी तरफ रामदास दिलशहा की छत्रछाया में रहकर शिवाजी महाराज के खिलाफ साजिश कर रहा था। शिवाजी महाराज के आगे रामदास की दाल नहीं गली, इसलिए आखिरकार रामदास विजापूर के आदिलशहा को जाकर मिला और कहने लगा-

पायाचा मी दास। शाह अर्जी ऐकावी ॥
शिवाजीच्या राज्याची। धुळधाण व्हावी ॥
दासाचाहीर दास आसपुल्या। मी रामदासी ॥
दरबार आपूला आदिलशाही। हीच माझी कासी ॥

रामदास आदिलशहा से मिलने पर कहने लगा कि, ''मैं आपके चरणों का दास हूँ। शाह (आदिल) मेरी बिनती है, आप शिवाजी महाराज के राज को तहस-नहस कर दे। मैं आपके चरणों का दास अर्थात सेवकों का सेवा रामदास हूँ। आपकी आदिलशाही यही मेरी काशी है।''

उपरोक्त सबूत के आधार पर यह साबित होता है कि रामदास यह 'मुस्लिम राज' का हितैशी था और तुकाराम महाराज 'शिवराज' के चेतना स्थान थे। संत तुकाराम महाराज समतावादी थे और रामदास कर्मठ ब्राह्मणवादी था। तुकाराम महाराज श्रमजीवि, मेहनतकश किसानों के कल्याण के लिए लड़े और रामदास ने ऐदी, मुफ्तखोर, ढ़ोगी, विश्वासघाती और विकृत ब्राह्मणों के स्वार्थ के लिए काम किया। इसलिए अब पाठकों को ही यह तय करना है कि भट रामदास का अनुयायी कहलाना है या तुकाराम महाराज के अनुयायी के तौर पर जीना है?

संत तुकाराम महाराज निर्भय थे, हर समस्या को उन्होंने मात देकर अपना संसार चलाया। जब पहली बीबी का बिमारी के कारण देहान्त हुआ तब तुकाराम महाराज ने दूसरी शादी की। अपनी पत्नी, बच्चों को सम्मानपूर्वक संभाला। वे एक सफल संसारी थे। दूसरी तरफ रामदास मंगलगाथा शुरू होते ही शादी के मंडप से भाग खड़ा हुआ। शादी के मौके पर विवाह मंडप से भाग जाने वाला रामदास 'समर्थ' कैसे हो सकता है? हमारे देश में कई संत होकर गए। उनमें संत नामदेव, संत सावता महाराज, संत गोरोबा महाराज, संत

Scanned with CamScanner

कबीर, संत माणकोजी महाराज, संत नरसी मेहता आदि इनमें से एक भी संत को 'समर्थ' उपाधी लगाने की जरूरत महसूस नहीं हुई। फिर रामदास का ही 'समर्थ' ऐसा प्रचार क्यों किया जाता है? इस संबंध में ठीक के सोंचने की जरूरत है। जो व्यक्ति खुद का संसार ठीक से नहीं कर पाया, उसे 'संसार अच्छा करें' (संसार करावा नेटकर) ऐसा बताने का अधिकार नहीं है। संत तुकाराम महाराज और जैसे बोलता है ठीक वैसा ही करता है, वही व्यक्ति वंदन के काबिल है।

संत तुकाराम महाराज एक क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। "रात्रंदिन आम्हा युद्धाचा प्रसंग" ऐसा कहकर भट-ब्राह्मणों को चुनौती देन वाले तुकाराम महाराज एक योद्धा संत थे। ब्राह्मणों के खिलाफ संघर्ष करना यह मर्द का कम है और ब्राह्मणों को घबराना यह हिजड़ों का काम है। ब्राह्मणों के खिलाफ लड़ने वाले संत तुकाराम महाराज एक क्रान्तिकारी संत थे। किन्तु ब्राह्मणों ने उनका दुर्बल, निराश, कर्ज में डूबे हुए, इस प्रकार विकृत चरित्र चित्रण किया है तथा भगोड़ा, बेवकूफ रामदास मानो जैसे अभी-अभी ब्यूटीपार्लर से सज-धजकर आया है, ऐसा चित्रण किया है। इन बातों पर गभीरतापूर्वक सोंचते हुए रामदास मुक्त भटमुक्त, भयमुक्त होने का प्रयास करें।

नेताजी पालकर के धर्मान्तरण को विरोध करने वाले ब्राह्मण गंगाधर कुलकर्णी के धर्मान्तरण के समय खामोश क्यों?

नेताजी पालकर शिवाजी महाराज के निष्ठावान सेनापति थे। किन्तू उनका जबरन धर्मान्तरण किया गया। वे नेता पालकर से महमद कुलीखान हुए। औरंगजेब ने नेताजी पालकर को अफगानिस्तान भेजा। धर्मान्तरण के पश्चात नेताजी पालकर का नाम परिवर्तन जरूर हुआ किन्तु शिवाजी महाराज के प्रति उनकी निष्ठा में कोई बदलाव नहीं आया। वह निष्ठा कायम बनी रही। शिवाजी महाराज के पास लौटने के लिए नेताजी पालकर ने कई बार प्रयास किया किन्तु उन्हें पीठ पर घाव पड़ने तक पीटा गया लेकिन एक दिन नेताजी पालकर मौका देखकर शिवाजी महाराज के पास भागकर आ गए और उन्होंने शिवाजी महाराज को प्यार भरा आलींगण किया। उन्होंने अपने पूर्व धर्म में लौटने की इच्छा शिवाजी महाराज के पास जाहिर की। जब यह बात ब्राह्मणों को पता चली तब उन्होंने नेताजी पालकर के स्वधर्म में लौटने का जमकर

Scanned with CamScanner

विरोध किया। तब शिवाजी महाराज भट-ब्राह्मणों से कहने लगे कि निराश्रीतों को आश्रय देना यही धर्म है और उन्हें अपने से दूर करना यह अधर्म है। नेताजी पालकर को मैं पूर्व धर्म में लेने वाला हूँ।

चाहे धर्म के नाम पर विरोध ही क्यों न हो, आप और आपका धर्म अपने पास रखिए, ऐसा कड़क इशारा शिवाजी महाराज ने दिया महाराज ने कर्मठ ब्राह्मणों की कभी हांजी-हांजी नहीं की। संस्कृति के नाम पर की जाने वाली प्रताड़ना रोकने के लिए शिवाजी महाराज ने वैदिकों के विरोध को खाद न डालते हुए नेताजी पालकर को अपने पूर्व धर्म में वापस लिया।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि संभाजी महाराज के कार्यकाल में औरंगाबाद प्रान्त के कसबे हरसुल निवासी गंगाधर रंगनाथ कुलकर्णी नामक व्यक्ति ने धर्म परिवर्तन किया था। उसने स्वेच्छा से इस्लाम धर्म को कबुल किया था। जबरन उसका धर्मान्तरण नहीं किया गया था, परन्तु आगे चलकर गंगाधर रंगनाथ कुलकर्णी की अपने पूर्व धर्म में लौटने की इच्छा हुई।

गंगाधरभाई कुलकर्णी संभाजी महाराज के पास आया और उसने संभाजी महाराज के पास स्वधर्म में लौटने की इच्छा जाहिर की। (संदर्भ छ॰संभाजी स्मारक ग्रंथ,पृ॰183) परन्तु जिस प्रकार नेताजी पालकर द्वारा अपने पूर्व धर्म में लौटने का ब्राह्मणों द्वारा विरोध हुआ, वैसा गंगाधर कुलकर्णी को ब्राह्मणों ने विरोध नहीं किया। इस अवसर पर सभी ब्राह्मणों ने मौन धारण कर लिया था। जैसे नेताजी का जबरन धर्मान्तरण किया गया वैसा गंगाधर कुलकर्णी का धर्मान्तरण नहीं हुआ था फिर भी नेताजी पालकर एवं शिवाजी महाराज को ब्राह्मणों ने वैदीक धर्म के अनेक कारण देकर उनका जमकर विरोध किया। नेताजी के स्वधर्म में लौटने का विरोध करने वाले ब्राह्मणों की धर्म एवं संस्कृति गंगाधर कुलकर्णी के धर्मान्तरण के समय कहा गई?

नेताजी पालकर के धर्म परिवर्तन का ब्राह्मणों द्वारा वैदिक ग्रंथों का प्रमाण देकर जमकर विरोध किया गया, इसके पीछे नेताजी पालकर से धर्मान्तरण विधि के लिए धन ऐंठने का ब्राह्मणों का मकसद होना चाहिए। इसलिए नेताजी के धर्मान्तरण का सभी ब्राह्मणों ने जमकर विरोध किया इसका मतलब ग्रंथों का आधार लेकर विरोध करने के पीछे धर्म, संस्कृति और दर्शन (तत्व-ज्ञान) इसके प्रति ब्राह्मणों को श्रद्धा नहीं होती, बल्कि केवल धन-

Scanned with CamScanner

दौलत मिलनी चाहिए और वर्ण व्यवस्था बनी रहे इसलिए वे ग्रंथ का हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। इससे यही साबित होता है कि ब्राह्मणों का व्रत, कर्मकांड और ग्रंथों से कोई लेना-देना नहीं है। परन्तु ब्राह्मणों ने बहुजनों को पाप-पुण्य काडर बताकर अपनी अर्थ व्यवस्था प्रस्थापित की। धर्मान्तरण के समय ब्राह्मणों ने पैसा ऐंठने की चाहत क्यों नहीं रखी? इसका मतलब यही हुआ कि ब्राह्मणों का और ब्राह्मणों का धर्म एक नहीं है। साथ ही ब्राह्मण ईश्वर, धर्म एवं संस्कृति को नहीं मानते ब्राह्मण स्वयं भगवान को नहीं मानते बल्कि केवल भगवान को मानने का नाटक करते हैं। सुसंस्कृत होने का नाटक करते हैं। बहुजन समाज ईश्वर और धर्म के पीछे पड़े यही उनका मकसद होता है।

ईश्वर यह मूलतः ब्राह्मणों ने ही बहुजनों को गाड़ने के लिए निर्माण किया हुआ है। इसलिए ब्राह्मण भगवान के मन्दिर में बेशर्मी से पैसा ऐंठते हैं, झूठ बोलते हैं, भक्तों को डराते हैं, भगवान को चढ़ावे के रूप में अर्पण की सजाने वाली सभी चीजें एवं पैसा स्वयं हड़प लेते हैं, ऐसे समय पर भगवान खामोश क्यों बैठता है? इसका मतलब यह हुआ कि ब्राह्मण ईश्वरवादी नहीं है। भारतीय संस्कृति का वे पालन नहीं करते। परन्तु बहुजन समाज ने करना चाहिए इसलिए वे बहुजनों को ईश्वर और धर्म का डर बताते हैं। यही कारण है कि ब्राह्मणों ने नेताजी पालकर के धर्मान्तरण का विरोध किया किन्तु गंगाधर कुलकर्णी के धर्मान्तरण के समय उन्होंने चुप्पी साधी।

संभाजी महाराज को मुगलों के कब्जे में देनेवाला धोखेबाज कवी कुलेश

शिवाजी महाराज एवं संभाजी महाराज इन पिता-पुत्रों के बीच झगड़ा लगाने का काम मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तों इन्होंने काफी प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने संभाजी के खिलाफ झूठी अफवाएँ भी फैलायी। ''शिवाजी महाराज को संभाजी के प्रति प्यार नही है, वे राजाराम को अपना वारिस बनाने वाले है'' इस प्रकार की अफवाहें फैलाकर संभाजी को सफलता नहीं मिली। क्योंकि दोनों पिता-पूत्रों ने ब्राह्मणों को भलिभाँति पहचाना था। दिलेरखान की आक्रमकता को रोकने के लिए शिवाजी महाराज ने संभाजी महाराज को मुगलों के पास भेजा था। आगे जब यह बात दिलेरखान को पता चली तब शिवाजी महाराज ने संभाजी को तुरन्त रिहा कराया और संभाजी महाराज को

Scanned with CamScanner

पन्हालगसड़ का सुबेदार नियुक्त किया। कवी कुलेश नामक ब्राह्मण ने संभाजी के साथ दोस्ती बनायी। संभाजी और सभी मराठा सरदार इनके बीच झगड़ा लगाने का काम कवी कुलेशी ने किया। सम्पत्ति और पद की लालच में उसने संभाजी महाराज का आश्रय लिया।

अपने स्वकर्तुत्व से बड़े हुए नेता एवं राजाओं के पास ब्राह्मण आते हैं। गरीबों की वे कभी हांजी-हांजी नहीं करते, परन्तु नेता और राजाओं के पास वे अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए जरूरत रहते हैं। मगर दूसरे किसी ने यह ज्यादा धन देने की लालच दी तो वे अपने नेता से भी धोखेबाजी करते हैं। बिल्कुल ऐसी ही घटना संभाजी महाराज के जीवन में घटित हुई। औरंगजेब द्वारा कवि कुलेश को धन का लालच बताते ही उसने औरंगजेब को पूरी सहायता की और संभाजी महाराज के साथ धोखा किया। जिस कवि कुलेश को संभाजी महाराज ने (छंदोगामात्य) मुख्य प्रधान बनाया था, उत्तर भारत से आयें कवि कुलेश को अपनी जान से भी ज्यादा चाहा उसी कुलेश ने संभाजी महाराज की जान ली।

कुलेश पर संभाजी महाराज को पूरा यकिन था। उसी ने महाराज के साथ विश्वासघात किया और ब्राह्मणों द्वारा दौलत मिलते ही कुलेश ने संभाजी के साथ तुरन्त गद्दारी की। इसका कुलेश को थोड़ा भी बुरा नहीं लगा। इसका मतलब दया करने वालों के साथ निर्दयता का व्यवहार करना यह ब्राह्मणों का स्थायी भाव है।

रायगड पर हमला करने की औरंगजेब की योजना थी। किन्तु उसके लिए औरंगजेब के पास रायगड की जानकारी नहीं होने से उसे किले का 'मॉडेल' चाहिए था। वह 'मॉडेल' तैयार करने की जिम्मेवारी कुलेश ने उठायी। उसके बदले में औरंगजेब ने कुलेश को ढ़ेर सारा धन दिया। कुलेश ने यह काम अपने लड़के को सौंपा। इसका मतलब कुलेश संभाजी के साथ रहकरऔरंगजेब की सहायता कर रहा था। संभाजी महाराज के निर्मल और प्यारे मन का कुलेश ने गलत लाभ उठाया। कवि कुलेश मूलतः औरंगजेब का हितैशी था और संभाजी का दुश्मन। संभाजी महाराज को पकड़वाने की जिम्मेवारी कवि कुलेशी ने ली। औरंगजेब ने कवि कुलेश को ढेर सारा धन दिया महाराज रायगड पर जाने के लिए निकल, रास्ते में वे संगमेश्वर में रुके।

Scanned with CamScanner

तब संभाजी महाराज कवि कुलेश से कहने लगे कि, ''हमें जल्द से जल्द रायगड के लिए रवाना होना चाहिए, यहाँ पर धोखा होने की संभावना है।'' तब कुलेश महाराज से कहने लगा कि 'यहाँ पर कोई भी आने वाला नहीं है, और कुलेश अनुष्ठान करने बैठा। महाराज ने कुलेश को जल्द निकल चलने का आग्रह किया परन्तु कुलेश ने अनुष्ठान करने में जान-बुझकर देरी की।

संभाजी को कवि कुलेश द्वारा संगमेश्वर में रोके रखने की पकी खबर औरंगजेब को पता चली। औरंगजेब ने तुरन्त मुकर्रबखआन और इखलासखान को कोल्हापुर से संगमेश्वर भेजा। उन्होंने तुरन्त आकर कवि कुलेश और संभाजी को हिरासत में लिया किन्तु संभाजी महाराज उन्हें चकमा देकर भागने की फिराक में घोड़े पर सवार होकर भाग्ने के लिए निकले, तभी कुलेश पीछे से चिल्लाया कि 'महाराज मैं गिर गया !'' संभाजी कुलेश को बचाने के लिए पीछे पलटे तभी औरंगजेब के सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया। (संदर्भ-निकोलाओ मनुची लिखित 'असे होते मोगल', पृ॰ 288) जब संभाजी महासज को पकड़ा गया तब उन्होंने पूरी सावधानी बरती थी। वे किसी भी विधि में मशगुल नहीं थे। उलटा कुलश को निकल चलने का आग्रह धरते रहे। इसका मतलब संभाजी महाराज को दुरदृष्टि थी। परन्तु कुलेश ने अनुष्ठान का निमित्त कर महाराज को औरंगजेब के सिपाही आने तक रोक कर रखा।

संभाजी महाराज जैसे सीधे-साधे मन के राजा का कवि कुलेश ने इस प्रकार काँटा निकाला और संभाली महाराज के साले गणोजी शिर्के एवं नाणोजी शिर्के इन्हें बदनाम किया। कुलेश को निर्दोष साबित करने के लिए ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने, संभाजी महाराज को गणोजी शिर्के इन्होंने पकड़वाया ऐसा सफेद झूठ लिखा। राजनीति में चाहे कितना भी स्वार्थ क्यों न हो मगर कोई भी भाई अपनी बहन का सुहाग छिनने के बारे में कभी नहीं सोंच सकता। गणोजी और नागोजी ये दोनों येसुबसाई के भाई थे। उन्होंने ही संभाजी महाराज को पकड़वाया ऐसा गलत प्रचार ब्राह्मण लेखकों ने किया। क्रूर, स्वार्थी, झूठे कवि कुलेश को निर्दोष छोड़ने के लिए ब्राह्मणों ने गणोजी एवं गणोजी को बदनाम कर भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को कालीख पोती है। (कवि कुलेश की मुखबिरी के कारण औरंगजेब ने संभाजी महाराज को पकड़ा, ऐसा जिक्र ईश्वरदास नागर, रॉबर्ट आर्म, निकोलाओं मुनीच इन विदेशी लेखकों ने किया

Scanned with CamScanner

है। संदर्भ-छ॰संभाजी स्मारक ग्रंथ, पृ॰ 170, 171, 194, 195)

औरंगजेब ने संभाजी महाराज को मनुस्मृति संहिता के तहत खत्म किया

औरंगजेब ने संभाजी महाराज की तरह आज तक किसी की भी हत्या नहीं की थी। महाराज को एक धाव में खत्म करने की बजाए अलग-अलग दण्ड क्यों दिया? सबसे पहले महाराज की जिवा काँटी गई। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि संभाजी महाराज ने संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व हासिल किया था। उन्होंने चार ग्रंथों की रचना की थी, इसलिए सबसे पहले उनकी जीवा काँटने की ब्राह्मणों ने सलाह दी। तत्पश्चखत महाराज के कान, नाक, आँखें और चमड़ी निकाली गई। यह घिनौनी दण्ड मनुस्मृति संहिता के अनुसार दिया गया।

मतलब औरंगजेब के माध्यम से ब्राह्मणों ने संभाजी महाराज को यह दण्ड दिया। कवि कुलेश को भी औरंगजेब ने जिन्दा नहीं छोड़ा। क्योंकि अपनी जान से भी ज्यादा चाहने वाले संभाजी महाराज जैसे स्वाभिमानी, निर्मल, और चाहिते दोस्त के साथ यदि कुलेश गद्दारी कर सकता है तो वह हमारे साथ भी गद्दारी कर सकता है, इस बात को सोंचते हुए औरंगजेब ने कुलेश की भी जान ले ली। औरंगजेब ने अपने सगे भाई तथा चाहिते सरादर दिलेरखान, मिर्झाराजे जयसिंह इन वफादार सरदारों को भी खत्म किया। इसलिए मदद करने वाले कवि कुलेश को जिन्दा रखना औरंगजेब को संभव नहीं था। क्योंकि औरंगजेब ने कवि कुलेश को उसके काम की पूरी कीमत अदा की थी।

औरंगजेब ने संभाजी महाराज को धर्मद्वेष के कारण नहीं मारा बल्कि राजनीतिक संघर्ष की वजह से मारा। औरंगजेब ने संभाजी महाराज को केवल दो सवाल पूछे। पहला सवाल-'आपके खँजाने की चाबियाँ कहाँ हैं? और दूसरा-'हमारे सरदारों में आपकी मुखबिरी करने वाली सरदार कौन हैं? इसका मतलब औरंगजेब ने इसके बदले में औरंगजेब के सामने उसकी लड़की की मांग रखी। संभाजी महाराज की हत्या के पश्चात ब्राह्मणों ने जल्लोश के तौर पर 'गुढ़ी पाड़वा' शुरू किया।

'शिवशक' बंद 'फसलीशक' शुरु करने वाले पेशवा

विश्ववंदनीय छ॰शिवाजी महाराज की हत्या के बाद, छ॰ संभाजी महाराज राजाराम, ताराबाई और शाहू महाराज ने भूमिपुत्रों की रक्षा एवं

संवर्धन किया। सन् 1713 को शाहू महाराज ने बालाजी विश्वनाथ भट को कान्होजी आंग्रे अभियान पर जाने के लिए कहा। परन्तु 'मुझे सर्वाधिकार दिए बगैर मैं अभियान पर नहीं जाऊँगा' ऐसा उलटा जवाब बालाजी विश्वनाथ भट ने शाहू महाराज को दिया। शाहू महाराज को समस्या में उलझा हुआ देख बालाजी विश्वनाथ ने पेशवापद माँगा और इस प्रकार शिवाजी महाराज के माध्यम से बड़ी मेहनत से कमाया हुआ गरीबों का स्वराज (रक्तपिपासू) खून चूसने वाले अत्याचारी, जातिवादी, देशद्रोही एवं शिवाजीद्रोही पेशवाओं के हाथ में गया।

पेशवाओं के हाथ में सत्ता आते ही पेशवाओं ने, शिवाजी महाराज ने अपने राज्याभिषेक से प्रारंभ किया हुआ 'शिवशक' बंद किया। समूचे महाराष्ट्र का कारोबार 'शिवशक' के अनुसार चल रहा था, वह ''शिवशक' बन्द कर पेशवाओं ने उसकी जगह मुगल बादशहा का फसली शक शुरू कर शिवाजी महाराज के पद्चिन्हों को मिटाना आरंभ किया।

शिवाजी महाराज का समूचा कार्य मिटाने का सिलसिला पेशवाओं ने शुरु किया। पेशवओं के अन्याय की कोई समीा नहीं रही। वर्णभेद एवं जातिभेद की पेश्वाओं ने पूनर्स्थापना की। कमाल का कट्टरवाद शुरु किया। यह राष्ट्रपिता जातिबा फुले ने देखा। समूची दुनिया को जिस शिवाजी महाराज के कार्य के प्रति आदर है उन शिवाजी महाराज के राजसिंहासन पर अतिक्रमण करने वाले पेशवाओं ने शिवशक बंद कर मुगलों का फसली शक शुरू करने के पीछे, मुसलमानों का अनुनय करने का पेश्वाओं ने प्रयास किया। शिवाजी महाराज के प्रति घृणा भाव वह स्पष्ट रुप से दिखायी देता है। भारत समेत समूचे दुनिया के मुसलमानों को खुश करने के लिए पेशवाओं ने शिवाजी महाराज के स्वराज को मिट्टी में मिला दिया। जिजाऊ माँ साहब द्वारा बनाया गया भव्य 'लालमहाल' गिराकर उसकी जगह 'शिनीवारवाड़ा खड़ा किया गया।

'शिवशक' बंद कर 'फसलीशक' शुरु करने के पीछे पेशवाओं का एक दांव था। समूचे मुसलमानों का भारत पर राज होगा और उनकी कृपादृष्टि हमारे ऊपर (ब्राह्मणों पर) सदा बनी रहे इसलिए पेशवाओं ने शिवशक बंद कर फसलीशक शुरु किया, परन्तु अंग्रेजों ने बाजी मारी और भारत पर कब्जा जमाया। उस समय अंग्रेजों ने पेशवाओं को पराजित किया। पेशवाओं का

Scanned with CamScanner

फसलीशक शुरु करने के पीछे का दांव असफल साबित हुआ। उसके बाद ब्राह्मणों ने ग्रिगेरीयन कैलेंडर (जनवरी-दिसंबर) स्वीकार किया। क्योंकि यह पश्चिमी लोगों का कैलेण्डर है। मतलब अंग्रेजों की भारत में सत्ता आते ही समूची भाषा, कैलेण्डर, शिक्षा, नौकरी और अंग्रेजों की दोस्ती ब्राह्मणों ने स्वीकार की। इसका मतलब दौलत की खातिर शिवाजी महाराज के स्वराज को पेशवाओं ने सुरंग लगायी।

विदेश का सफर करना पाप है, ऐसा लोगों के दिलो-दिमाग में बिठाने वाले ब्राह्मणों ने ही लंदन मे जाकर अंग्रेजी शिक्षा हासिल की। बहुजन समाज को दुनिया का ज्ञान नहीं होना चाहिए। इसलिए ब्राह्मणों ने 'सिंधूबंदी' शुरू की। अंग्रजों का विरोध करने के पीछे ब्राह्मणों का बहुत बड़ा स्वार्थ था। सावरकर ने लंदन में अपनी पढ़ाई पूरी की। वासुदेव बलवंत फडके, मंगल पांडे ये लोग भी अंग्रेजों की नौकरी करते थे। ब्राह्मण खूद के बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाते हैं और फिर भी अंग्रेजी को विरोध करते हैं। क्योंकि यदि बहुजन समाज अंग्रेजी भाषा ज्ञात कर लेता है तो बहुजन समाज के लड़के ब्राह्मणों के प्रतिस्पर्धी बनेंगे इसलिए ब्राह्मण अंग्रेजी भाषा का विरोध करते हैं ब्राह्मणों का मराठी भाषा के प्रति दिखने वाला प्रेम केवल मात्र एक नौटंकी है। दुनिया की दौंड़ में यदि टिकना है तो अंग्रेजी भाषा ज्ञात करनी ही होगी। क्योंकि अंग्रेजी दुनिया की पहली सबसे आसान भाषा है। अंग्रेजी यह ज्ञान, सम्पर्क एवं वैश्विक भाषा है।

शिवजी जयंती बन्द करने के लिए तिलक द्वारा गणेशोत्सव की शुरूआत

पेशवाओं ने रायगड स्थित शिवाजी महाराज का दफ्तरखाना जलाया। रानीमहल गिराया, राज दरबार तोड़ा, शिवाजी महाराज की समाधी तहस-नहस की, शिवाजी महाराज द्वारा मुस्लिम सिपाहियों के लिए बनायी गई मस्जिद गिराई, परन्तु किया, मगर समासधी मिल ही नही रही थी। तीन दिन तक फुलेजी ने समाधी के आसपास लगे पेड़-पौधे काँटकर वहाँ की गन्दगी साफ कर समाधी ढुँढ़ निकाली। तात्याराव ने समाधी को पानी से साफ किया, महाराज की समाधी पर तात्याराव ने बड़े ही आदरभाव से अभिवादन कर समाधी पर फुल चढ़ाए।

तात्या (जोतिबा फुले) द्वारा शिवाजी महाराज की समाधी पर फूल

चढ़ाए जाने की बात ग्रामजोशी को पता चलते ही जोशी आगबबूला हुआ। वो समाधी के पास आया और समाधी पर चढ़ाए गए फुलों को ठोकर मारते हुए फुलेजी से कहने लगा कि 'अरे कुणबट ! उस शूद्र शिवाजी की तुम पूजा कर रहे हो ! क्या वो राजा था? (अरे कुणबटा ! त्या शूद्र शिवाजीची मू पूजा करतोस काय? तो काय राजा होता होय !'' ग्रामजोशी की यह बातें सुनकर फुलेजी को बहुत दुःख हुआ। उसके बाद फुलेजी ने शिवाजी महाराज की जीवनी पर बढ़िया 'पोवाडा' लिखा। सन 1870 से शिवजयंती मनाना प्रारंभ किया।

पूना समेत महाराष्ट्र में राष्ट्रपिता जोतिबा फुलेजी ने बड़े ही धूमधाम से शिवजयंती मनाना प्रारंभ किया। पेशवाओं को इस बात का बहुत गुस्सा आया। परन्तु वे शिवजयंती का परोक्ष रुप से विरोध नहीं कर सकते थे। क्योंकि राष्ट्रपिता जोतिबा फुले द्वारा 24 सितंबर 1873 को शुरु किए गए सत्यशोधक समाज ने महाराष्ट्र में बड़े पेमाने पर जागृति निर्माण की।

शिवजयंती को परोक्ष रूप से विरोध करना संभव नहीं था, इसलिए पेशवाओं ने विकल्प चुना। वो विकल्प था गणेश उत्सव ! गणपति यह पेशवाओं का भगवान है। बहुजन समाज को गणपति से कोई लेना-देना नहीं है, परन्तु पेशवा-कैवारी बालगंगाधर तिलक ने शिवजयंती को रोकने के लिए पेशवाओं के नीजि गणपति का सार्वजनिक उत्सव किया अर्थात तिलक ने शिवजयंती को समाप्त करने के लिए ही 1893 को गणेश उत्सव शुरू किया।

लाला लाजपत राय ने 'सिवोजी' नामक उर्दू में शिवचरित्र लिखने के कारण महाराज को पंजाब-सिंध के लोग समझने लगा। रविन्द्रनाथ टैगोर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इनके शिवाजी महाराज आराध्य दैवत थे। कर्मवीर भाऊराव पाटील ने एंक बार कहा था कि 'समय आने पर मैं अपने जन्मदाता पिता का नाम बदल दूँगा। किन्तु कॉलेज को दिया हुआ शिवाजी महाराज का नाम मैं कभी नहीं बदलूँगा। वे भाऊराव पाटील जैन थे। उनके कारण शिवाजी महाराज की 'रयत को शिक्षा का लाभ मिला। कर्मवीर डा॰मामासाहब जगदाले, डा॰पंजाबराव देशमुख, राजर्षि शाहू महाराज, क्रान्ति सिंह नाना पाटिल, संत गाडगे महाराज, प्रबोधनकार केशव सीताराम ठाकरे, आदि समाज सुधारकों की शिवाजी महाराज के प्रति गहरी निष्ठा थी। भारतीय संविधान के जनक

Scanned with CamScanner

डा॰बाबासाहब अम्बेडकर इनका शिवचरित्र पर गहन अध्ययन था। उन्होंने 'शूद्र पूर्व में कौन थे?' इस किताब में शिवाजी महाराज के संबंध में काफी विस्तार से जानकारी दी है।

शिवाजी महाराज के त्रिशताब्दी उत्सव के अवसर पर बदलापूर में आयोजित समारंभ की अध्यक्षता डा॰अम्बेडकर ने की थी। इस अवसर पर उन्होंने शिवाजी महाराज के जीवन पर अभ्यासपूवर्ण एवं प्रभावी भाषण दिया। उससे शिवाजी महाराज का अपरिचित रूप लोगों को पता चला। शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक को ब्राह्मणों द्वारा किए गए विरोध का डा॰अम्बेडकर ने बदला लिया। डा॰अम्बेडकर ने बहुजन समाज को राजा होने की आजादी दी।

आप शूद्र है इसलिए आप मुख्यमंत्री नहीं बन सकते, ऐसा आज कोई भी ब्राह्मण नहीं कह सकता। यह अधिकार बहुजन समाज को बाबासाहब डा॰अम्बेडकर ने बहाल किया। राष्ट्रपिता जोतिबा फुलेजी न शिवजयंती शुरू की। अर्थात फुले-अम्बेडकर इन गुरू-शिष्यों को शिवाजी महाराज के प्रति सार्थ अभिमान था। उनका महाराज पर नितांत प्रेम था। मगर वह अंधा प्रेम नहीं था।

शिवाजी महाराज को आधार बनाकर फुले-अम्बेडकर ने समाज में धार्मिक एवं जातिय उन्माद नहीं फैलाया और न ही शिवाजी महाराज के माध्यम से उन्होंने बहुजन समाज का वैदिकीकरण किया। फुले-अम्बेडकर ने शिवाजी महाराज के वास्तव इतिहास से देश को अवगत कराया। डा॰ बसाबासाहब अम्बेडकर अपने लेटर हैड पर 'जय शिवराय' लिखते थे।

साहित्य रत्न महान देशभक्त और समाज सुधारक अण्णाभाऊ साठे इन्होंने गणपति को वंदनीय पारंपारिक गण बदला। गण का प्रारंभ शिव छत्रपति को वंदना कर शुरू किया। अण्णाभाऊ साठे ने शिवाजी महाराज पर 'महाराष्ट्राची परंपरा' इस शिर्षक के तहत 'पोवाड़ा' लिखा। जब अण्णाभाऊ साठे रशिया में गए तब वहाँ पर शिवचरित्र पर रशियन भाषा में लिखने वाले प्रो॰चोलिशेव अण्णाभाऊ को मिले। अण्णाभाऊ ने उन्हें शिवाजी महाराज के संबंध में दुर्लभ जानकारी बतायी। इसका मतलब अण्णाभाउ के कारण ही रशियन जनता को शिवाजी महाराज के कार्य की जानकारी हुई। शिवाजी महाराज का कार्य

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में बहुजन समाज के विचारकों का काफी महत्वपूर्ण योगदान है।

शिवाजी महाराज को सीमित करने वाले अत्रे-महाजन

आजादी मिलने के बाद शिवाजी महाराज का जीवन एवं कार्य राज्य स्तर पर एवं जाति स्तर पर रखने के लिए ब्राह्मण नेताओं ने सोच-समझकर प्रयास किया। संयुक्त महाराष्ट्र का जब आन्दोलन शुरू था तब प्र०के०अत्रे इन्होंने अन्य राज्यों पर टिप्पणी करते समय शिवाजी महाराज का इस्तेमाल किया। 'अन्य राज्यों को केवल भूगोल है मगर महाराष्ट्र को भूगोल के साथ-साथ इतिहास भी है', ऐसा टोला मारते हुए शिवाजी महाराज का नाम लिया। उसके कारण शिवाजी महाराज की प्रतिमा सीमित हुई। राजनीति में शिवाजी महाराज का इस्तेमाल शुरू हुआ।

राजनीतिक पार्टियों शिवाजी महाराज के नाम पर अपनी पार्टी मजबूत करने लगे। किन्तु प्रबोधनकार ठाकरे द्वारा प्रतीपादित शिवाजी महाराज लोगों को बताया ही नहीं गया। प्रबोधनकार केशव सीताराम ठाकरे यह एक महान इतिहास संशोधक एवं समाज सुधारक थे। उन्होंने महाराज के वास्तव इतिहास से लोगों को अवगत कराया। प्रबोधनकार ठाकरे कहते हैं, ''शिवाजी महाराज 33 करोड़ देवी-देवताओं से ज्यादा महान है।'' अपने दिमाग से दैववाद को बाहर निकालकर ही शिवाजी महाराज का अध्ययन करना होगा।

शिवाजी महाराज का प्रभाव कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक है। पंजाब के लाला लाजपतराय, रविन्द्रनाथ टैगोर, मद्रास के पेरियार रामास्वामी, रामचंद्रन, इग्लैण्ड के ग्रैंट डफ, रशिया के प्रो०चेलिशेव, इटली के निकालाओं मनुची, पुर्तगाल के कास्मा दि गार्डा, बुंदलखण्ड के राजा छत्रसाल, मुगलों का खफीखान, पंजाब के भगत सिंह, इन्दौर के होलकर, तंजावर, जिंजी, ग्वालियर यहाँ की जनता को शिवाजी महाराज के प्रति नितांत आदर है।

17 वीं सदी में भी भारत की समूची जनता का शिवाजी महाराज पर प्यार था। इसलिए शिवाजी महाराज सन् 1666 में जब आगरा गए थे तब महाराज को देखने के लिए वहाँ के लोग रास्ते के दोनों तरफ कतार में खड़े थे। बहुत सारे लोग ऊँची मंजिलों पर खड़े रहकर महाराज को देख रहे थे। सन् 1676 को शिवाजी महाराज जब हैदराबाद गए तब हैदराबाद के बादशहा

शिवाजी महाराज का स्वागत करने के लिए स्वयं शहर की सीमा पर आये थे। बादशहा ने शिवाजी महाराज की हैदराबाद शहर में भव्य रैली निकाली और एक माह तक शिवाजी महाराज की मेहमान नवाजी की। इसका मतलब 17 वीं सदी में आवा जाही का कोई साधन न होते हुए भी शिवाजी महाराज का सम्पूर्ण भारत पर प्रभाव था।

वियतनामा को शिवाजी महाराज के प्रति वेहद गर्व है। आज भी दुनिया में शिवाजी महाराज के कई समर्थक हैं, फिर भी प्रमोद महाराज कहते थें कि 'शिवाजी महाराज का (क्षेत्र) राज केवल चार जिलों तक ही सीमित था ! 'इसकामतलब महाराज की "रासष्ट्रपुरूष" और "विश्ववंद्य" यह वास्तविक पहचान महाराज को खटकती है। दो कवड़ी की कीमत वाले महाजन खूद को क्या समझते थे? शिवाजी महाराज की श्रेष्ठता को नकारने वाले महाजन ही शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है।

अन्ने, महाजन की शिवाजी महाराज के प्रति भूमिका उनकी टिप्पणी से स्पष्ट होती है। शिवाजी महाराज के कार्य कर्तुत्व का प्रभाव उन्हें सल रहा है, यही उनकी टिप्पणी से सिद्ध होता है। शिवाजी महाराज केवल प्रदेश-दर-प्रदेश जीतकर खूद को सम्राट कहलाने वाले राजा नहीं थे। महाराज ने जिन प्रदेशों पर कब्जा किया वहाँ की राज व्यवस्था बढ़िया की, उसकी अंतर्गत नीति, न्याय, राजस्व, महिला नीति, धार्मिक नीति आदि बातों के संबंध में शिवाजी महाराज ने उत्तम नियोजन किया। इसलिए महाराज की हत्या के पश्चात और संभाजी महाराज की मृत्यु के बाद भी महाराज की जनता ने दुश्मन के खिलाफ लड़ने में अपनी जान की बाजी लगा दी। इसका मतलब शिवाजी महाराज ने अपने प्रदेश की आवाम में आत्म विश्वास निर्माण किया था। महाराज के जाने के बाद निरंतर 27 साल तक औरंगजेब अपनी राजधानी से दूर महाराष्ट्र में रहा परन्तु औरंगजेब शिवाजी महाराज के स्वराज (रयतराज) पर विजय हासिल नहीं कर सका।

उसी में औरंगजेब की मृत्यु हुई परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। काबूल से लेकर कोलकता तक जिसकी सल्तनत थी वह औरंगजेब सह्याद्री को नहीं जीत पाया। औरंगजेब का अनियंत्रित एवं अन्यायपूर्ण राज शिवाजी महाराज के सल्तनत की तुलना बड़ा था, किन्तु वह सब नष्ट हो गया। उसी

Scanned with CamScanner

प्रकार अनियंत्रित राज करने वाले प्रमोद महाजन के दिमाग में शिवाजी महाराज को कम आँकने का विचार आता था। यह महाजन का औरंगजेबी प्रतिबिम्ब था।

एक ओर ग्रैंट डफ कहते हैं कि ' महाराज केवल शूर लड़ाकू ही नहीं थे बल्कि सामाजिक और आर्थिक मामलों का उत्तम ज्ञान रखने वाले राजनीतिज्ञ थे। उनकी चाणाक्ष योजकता के कारण ही हतबल हुए बहुजन सत्ताधीश बन पाए। मतलब आजादी से पूर्व भी ग्रैंट डफ जैसे अंग्रेज अधिकारियों को शिवाजी महाराज की महानता का अनुभव हुआ और आजादी के बाद पचास साल बाद महाजन को शिवाजी महाराज की महानता खटक रही थी।

शिवाजी महाराज का छः भाषाओं पर प्रभुत्व था। मराठी, हिन्दी, उर्दू,कन्नड, संस्कृत और तेलगू आदि भाषाएँ महाराज को ज्ञात थी। अंग्रेजी संभाषण के लिए महाराज ने नारायण शेणवी नामक अनुवादक को अपने पास रखा था। अंग्रेजी भाषा के प्रति महाराज को काफी आस्था थी। अंग्रेजी का महाराज ने कभी द्वेष नहीं किया। अंग्रेजी का विरोध करने वाले लोग महाराज के दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है। क्योंकि बहुजन समाज को अंगेजी भाषा का ज्ञान नहीं होना चाहिए, यदि उन्हें ज्ञान होता है तो वे हमारे प्रतिस्पर्धा बनेंगे इस बात का ब्राह्मणों को डर है। इसलिए शिवाजी महाराज का नाम लेकर समाज में अंग्रेजी भाषा के प्रति द्वेष भावना फैलाने वाले षड्यंत्रकारी लोग ही शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है।

शिवाजी महाराज का कर्तुत्व अमान्य करने वाले तिलक-सावरकर

आखिर सवाल यह खड़ा होता है कि ब्राह्मण नेता, लेखक शिवाजी महाराज का नाम क्यों लेते हैं? उन धूर्त नेताओं को उनके वैदिक धर्म के प्रचार के लिए शिवाजी महाराज का हथियार के तौर पर इस्तेमाल करना होता है। इसलिए वे मजबूरन शिवाजी महाराज का नाम लेते है। क्योंकि शिवाजी महाराज भारत के निर्विवाद एवं 'आराध्य दैवत' हैं इसलिए ब्राह्मण शिवाजी महाराज का नाम लेते है। ''गुलामी से मुक्त करने वाले धूरंधरा वीर'' इनका वृतांत यानि 'छः स्वर्ण पृष्ठ' (सहा सोनेरी पान) इस शिर्षक के तहत वि॰दा॰ सावरकर ने किताब लिखी है, उसमें पुष्पमित्र से लेकर राघोबादादा इनका जिक्र है। किन्तु शिवाजी महाराज के विश्वविख्यात कार्य-कर्तुत्व को स्वर्ण

पृष्ठ मानने से सावरकर ने साफ इन्कार किया है।

'विज्ञानवाद' की माला जपने वाले सावरकर कहते हैं कि 'शिवाजी महाराज ईश्वरी कृपा से राजा बने !' मतलब विज्ञानवाद की माला जपने वाले सावरकर शिवाजी महाराज के संबंध में दैवयोगी कैसी हुए? महाराज के कर्तुत्व को इन्कार करने वाले सावरकर 'मनुस्मृति' जैसा क्रूर ग्रन्थ निर्माण करने वाले पुष्पमित्र को स्वर्ण पृष्ठ मानते हैं, शिवराज एवं बहुजन समाज का सत्यानाश करने वाले राधोबादादा को स्वर्ण पृष्ठ मानते हैं।

शिवाजी महाराज जैसे विश्ववंद्य राजा की महानता को जान-बुझकर इन्कार कर जन्म से ब्राह्मण रहे और बहुजनों की प्रताड़ना करने वाले पुष्पमित्र और राधोबादादा का विश्लेषण करते समय सावरकर अपना हिन्दुत्व (ब्राह्मणवाद) लोगों पर थोंपना चाहते थे, इसलिए उन्होंने शिवाजी महाराज का नाम लिया। बाबासाहब डा॰अम्बेडकर ने समूचे मानव जाति के कल्याण के लिए जब हिन्दू धर्म में विद्यमान गलत रूढ़ी-परंपराएँ, प्रथाएँ एवं ब्राह्मणों पर प्रहार किया और जब धर्मान्तरण किया, तब सावरकर ने डा॰अम्बेडकर पर काफी टिका-टिप्पणी की। इसका मतलब सावरकर के अन्दर छूपे हुए कर्मठ ब्राह्मण आखिर तक जिन्दा था।

सावरकर ने रत्नागिरी में निचली जातियों के लिए पतीत पावन मन्दिर बनवाया। परन्तु उन्होंने निचली जाति के लिए पाठशाला शुरू नहीं की। निचली जाति के बच्चों को मन्दिर से ज्यादा पाठशाला की जरूरत थी, मन्दिर से उनकी समस्याएँ हल होने वाली नहीं थी। निचली जाति के लोगों ने पढ़ाई करने की बजाए केवल ईश्वर के नाम की माला जपनी चाहिए। इसलिए सावरकर ने मन्दिर बनवाएँ। इसका मतलब सावरकर एक ढ़ोगी समाज सुधारक थे।

अंग्रेजों को 'माफीनामा' लिखकर देने वाले सावरकर राष्ट्रभक्त कैसे हो सकते हैं? स्वयं इंग्लैण्ड में पढ़ाई पूरी कर मातृभूमि प्रेम का दिखावा करने वाले सावरकर भाषाशुद्धि अभियान चला रहे थे, किन्तु अंग्रेजी पढ़ते थे। छत्रपति संभाजी महाराज जैसे चरित्रसम्पन्न राष्ट्रभक्त एवं लेखक रहे राजपूत्र को नादान, निष्क्रिय, शराब और शबाब का चाहेता कहने वाले सावरकर ने देश के लिए क्या किया? सावरकर ने मार्सेनिस के समुन्दर के किनारे पर केवल दस मिनट रास्ता तय किया किन्तु नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत की आजादी

Scanned with CamScanner

के लिए जर्मनी से लेकर जापान तक पूरे ४४ दिन पनडुब्बी में सफर किया। इसका मतलब सावरकर स्वतंत्रतावीर कदापि नहीं हो सकता। ज्यादा से ज्यादा वो महाकाय समुन्दर में चलने वाले भव्य जहाज के शौचालय से कूदकर भागने वाला महान शौचालयवीर जरुर हो सकता है। क्रान्ति सिंह नाना पाटील इनकी तुफान सेना के कार्यकर्ताओं के नाम सावरकर ने अंग्रेजी को बताये थे।

बाल गंगाधर तिलक बहुजन समाज के जानी दुश्मन थे। 'वेदोक्त' मसले में उन्होंने राजर्षि शाहू महाराज का जमकर विरोध किया था। 1917 में अथनी में हुई एक सभा को संबोधित करते हुए तिलक ने कहा था कि 'राजनीति यह ब्राह्मणों का काम है, यह ऐरे-गेरे (साधारणतः) लोगों का काम नहीं है। विधानसभा में चुनकर आकर कुणबटों (कुर्मियों) को क्या हल चलाना है? तेली, तंबोली, वाणियों को क्या तराजू तोलना है? दर्जियों को क्या कपड़े सिलाने है?'

इसका मतलब तिलक को बहुजनों का स्वराज नहीं चाहिए था। सन् 1917 को मुम्बई में हुई अस्पृश्यता निर्मूलन परिषद के समय तिलक ने अस्पृश्यता निर्मूलन कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करने से भी इन्कार कर दिया था। मतलब तिलक तेली-तंबोली-कुर्मियों के नेता नहीं थे। (संदर्भ वसंत राजस लिखित-'आंबेडकर चळवळीचे मारेकरी') तिलक, बहुजन समाज ने केवल सेवा ही करनी चाहिए और ब्राह्मणों ने ऊँचे पद एवं राजनीति का उपभोग लेना चाहिए, इस विचार के थे। पेशवाई (ब्राह्मणशाही) की पुनर्स्थापना के लिए तिलक रात-दिन प्रयासरत थे। तिलक जब बिमार थे और मुर्च्छित अवस्था में थे तबस बिपिनचंद्र पाल उन्हें मिलने गये। पाल उन्हें कहने लगे कि, 'जल्द ही देश को आजादी मिलेगी !' ऐसा सुनते ही तिलक उत्सुक होकर कहने लगे कि,'स्वामीजी ! क्या वास्तव में पेशवाई आएँगी? मतलब तिलक पेशवाई की पुनस्थापना चाहते थे। तिलक वर्ण व्यवस्था के समर्थक एवं बहुजन समाज के दुश्मन थे। तिलक हिन्दू-मुस्लिम फँसाद के जनक हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज को अभिप्रेत समाज परिवर्तन के पूर्णतः विरोध में तिलक-सावरकर की नीति थी, इसलिए तिलक-सावरकर महाराष्ट्र के दुश्मन साबित होते हैं। मोहनदास करमचन्द गांधी इन्होंने अपने समूचे जीवन में शिवाजी महाराज का कभी नाम तक नहीं लिया, इसकी बजाए

Scanned with CamScanner

गांधीजी ने सत्यशोधक आन्दोलन समाप्त किया।

शिवद्रोही प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

छत्रपति शिवाजी महाराज के आगे असंख्य विचारक नतमस्तक होते हैं, परन्तु भारत के दिवंगत प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू इन्होंने शिवाजी महाराज के कई बार टिका की। जिन्होंने देश को अस्थिरता की खायी में ढकेला और जो कई बार अपनी राह भटक गए थे, वे पंडित नेहरू शिवाजी महाराज को कहते हैं कि 'शिवाजी राह से भटका (वाट चुकलेला देशभक्त) हुआ देशभक्त हैं।'

शिवाजी महाराज जैसे चरित्रसम्पन्न राजा को राह से भटका हुआ राजा संबोधना यानि शुद्ध रुप से देशद्रोह है। शिवाजी महाराज ने सभी ब्राह्मण ग्रंथों को लात मारकर राजपद ग्रहण किया और वर्ण व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ायी इसलिए जवाहरलाल नेहरु यह ब्राह्मण पंडित शिवाजी महाराज को राह से भटका हुआ देशभक्त कहता है। मुम्बई स्थित गेट-वे ऑफ इण्डिया के सन्मुख शिवाजी महाराज की अश्वारुढ़ प्रतिमा खड़ी करने के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यशवंतराव चव्हाण का काफी विरोध किया था, परन्तु यशवंतराव चव्हाण ने डटकर प्रतिमा खड़ी की।

शिवचरित्र को काँटा हुआ जहरीला नाग-बाबा पुरंदरे

पुरंदरे यानि शिवचरित्र और शिवचरित्र यानि पुरंदरे ऐसा समीकरण ही बना था। इसके पीछे बहुजनों का अज्ञान और ब्राह्मणी व्यवस्था की धूर्तता है।

आज तक शिवचरित्र का किसी ने नहीं किया होगा उतना सत्यानाश बाबा पुरंदरे ने किया है। पुरंदरे वास्तव में पेशवा इतिहास के लेखक थे। परन्तु उन्हें पर जन मान्यता नहीं मिली इसलिए वे शिवचरित्र की ओर झुके। राष्ट्रपिता जोतिबा फुले और कृष्णाजी अर्जुन केलुस्कर द्वारा लिखित शिवाजी महाराज का वास्तविक चरित्र समाप्त्त करने के लिए पुरंदरे ने शिवाजी महाराज के जरिये दैववाद, अंधश्रद्धा, मुस्लिमद्वेष, विषमता प्रस्थापित करने का प्रयास किया। रामदास, दादू कोडदेव इनका उदात्तीकरण और बहुजनों में फुट डालने का शिवचरित्र के माध्यम से प्रयास किया। शिवाजी महाराज के जीवन की सच्ची घटनाओं का अनुल्लेख तथा नाट्यमय घटनाओं का उदात्तीकरण कर पुरंदरे ने सावरकर बन रही फिल्म की निर्मिंत के लिए 80 लाख रुपये दिए।

Scanned with CamScanner

(दै॰सावरकर की फिल्म बनाने के लिए शिवाजी महाराज का पैसा इस्तेमाल करने वाले पुरंदरे शिवप्रेमी न होकर शिवद्रोही हैं। पुरंदरे का जन्म नागपंचमी के दिन हुआ है, ऐसे पुरंदरे यानि शिवचरित्र को कांटा हुआ जहरीला नाग है। इसलिए आज बहुजनों के असंख्य सच्चे वक्ता, लेखक, नाटककार, कादंबरीकार, फिल्म निर्माता होने चाहिए।

शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाले बेडेकर-प्रधान

धूर्त ब॰मो॰पुरंदरे इन्होंने अपने वारिस के तौर पर निनाद बेडेकर के नाम की घोषणा की है। बेडेकर ने श्रीकांत प्रधान इस चित्रकार के माध्यम से चार हाथ धारण किए हुए शिवाजी महाराज की तस्वीर बनायी है। उसे 'शिवभारत' का आधार दिया गया, किन्तु बेडेकर जी, 'शिवभारत' यह एक काव्य है। काव्य में अतिरंजकता,कवी कल्पना होती है। रंजकता और कल्पनकर्ता को इतिहास में कोई स्थान नहीं होता। 'शिवभारत' कार कवीन्द्र परमानंद यह एक ईश्वर भक्त श्रद्धालु व्यक्ति थे, परमानंद यह कोई समीक्षक, इतिहासकार या शोधकर्ता नहीं थे।

शिवाजी महाराज की चार हाथ वाली प्रतिमा बनाकर शिवाजी महाराज को विष्णु का अवतार घोषित कर महाराज का कर्तुत्व समाप्त करने का षड्यंत्र बेडेकर ने किया था। महाराज एक कर्तुत्वसम्पन्न महापुरूष थे। उनकी यह प्रतिमा नष्ट करने के लिए ही बेडेकर-प्रधान प्रयासरत हैं। शिवाजी महाराज भगवान थे इसलिए वे अपना स्वराज स्थापित कर सके, अन्यथा उन्हें यह कर पाना संभव नहीं था, यह बात लोगों के दिलो-दिमाग में बिठाकर तमाम बहुजनों के प्रेरणास्थान समाप्त करने की वैदिकों की साजिश है इसलिए शिवाजी महाराज का दैवतीकरण करने का ब्राह्मण प्रयास करते है।

शिवाजी महाराज को यदि भगवान बना दिया जाए तो शिवाजी महाराज समाप्त हो जाएंगे, ऐसा बेडेकर-प्रधान का दांव था। क्योंकि आज समूचे देश में समाज प्रबोधन की वजह से बहुत बड़ी क्रान्ति हो रही है। मराठा सेवा संघ, संभाजी ब्रिगेड, जिजाऊ ब्रिगेड, बामसेफ, यशवंत सेना, बहुजन टिच्र्स एसोशियेशन, मराठा महासंघ आदि गैर-राजनीतिक संगठनों के कारण फुले-शाहू-अम्बेडकर की विचारधारा जनमानस में प्रस्थापित हो रही है। ब्राह्मणों ने बहुजन समाज को गुलाम बनाने के लिए भगवान निर्माण किया है, यह बात

Scanned with CamScanner

अबस बहुजनों की समझ में आने लगी है। इस कारण भगवान को नकारने का सिलसिला देश में तेली से बढ़ने लगा है। यह बात ब्राह्मण भी भलिभाँति जानते हैं। यही कारण है कि बेडेकर-प्रधान शिवाजी महाराज को भगवान बनाने में लगे हुए हैं। जब समूचा बहुजन समाज ईश्वर को अमान्य करेगा तब वह भगवान बने शिवाजी महाराज को भी स्वीकार नहीं करेगा। इसका मतलब बहुजनों की ऊँगलियाँ बहुजनों की आँखों में घुसाने का यह तरीका हैं।

बहुजनों के जरिये शिवाजी महाराज को समाप्त करने की साजिश करने वाले बेडेकर-प्रधान तथा अभिव्यक्ति स्वतंत्रता के नाम पर बेडेकर-प्रधान का समर्थन करने वाले शिवाजी महाराज के सभी दुश्मनों को सरकार ने कठोर दण्ड देकर शिवाजी महाराज की बदनामी को रोकना चाहिए। इस बात को मद्देनजर रखते हुए ही पुना के विचारक शांताराम कुंजीर, प्रवीण गायकवाड, विकास टिंगरे, श्रीमति लीलाताई धुले, श्रीमति लिनाताई रणपिसे, डा॰प्रकाश हसनालकर, सुशिर पाटील इन्होंने बेडेकर-प्रधान की इस साजिश का पर्दाफास किया ।श्रीकांत प्रधान और निनाद बेडकर को माफी मांगनी पड़ी। इसका मतलब अब लोग झूठा इतिहास सहने वाले नहीं है। इसकी यह बढ़िया मिसाल है। पुरंदरे-बेडेकर ! आपने इतिहास की कौन-सी डिग्री हासिल की है? यह जाहिर करें।

य॰दि॰फडके द्वारा शिवाजी महाराज तथा महिलाओं की बदनामी

मुम्बई के 'मराठा मन्दिर' द्वारा प्रकाशित 'शिवचरित्र' के पहले खण्ड में फडके माटे, कंटक, कुलकर्णी इन्होंने शिवाजी महाराज तथा महिलाओं के संबंध में कुछ बदनामी कारक बातें लिखी है। इस प्रकार का इतिहास दूसरे देश में या दूसरे धर्म में लिखा होता तो सरकार ने ऐसे लेखको को फाँसी पर चढ़ाया होता। बहुजनों के पैसों का इस्तेमाल कर बहुजनों पर ब्राह्मणी व्यवस्था थोंपने का प्रयास य॰दि॰फडके द्वारा किया गया है। ब्राह्मणों को अभिप्रेत इतिहास इन महानुभावों ने लिखा है। पहले खण्ड में काफी गंभीर प्रकार की गलतियाँ हैं। मुखपृष्ठ पर छपा हुआ चित्र मीर मोहम्मद इनके द्वारा बनाया गया है।

मीर मोहम्मद समाकालीन हैं, इसमे कोई दो राय नहीं। महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित निकोलाओं मनुची इनके, ''असे होते मोगल'' (ऐसे थे मुगल !) इस ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से जिक्र आया है। परन्तु इस पहले खण्ड में

Scanned with CamScanner

सुरत अभियान के समय डच चित्रकार द्वारा बनाया गया और वह रॉवर्ट आर्म (1782) इनके 'फ्रैग्मेंटस्' इस ग्रन्थ में लिखा गया ऐसा सफेद झूठ य॰दि॰फडके लिखते हैं। डच चित्रकार का नाम भी नहीं दिया गया। सुरत अभियान के समय शिवाजी महाराज काफी व्यस्त थे, इसलिए उस समय चित्र निकालना संभव नहीं है। ऐसा भी कहा गया है।

डच चित्रकार ने शिवाजी महाराज का चित्र बनाया, ऐसी आख्यायिका है, ऐसा भी फडके कहते हैं। इसका मतलब फडके आख्यायिका स्वीकार करते हैं और मीर मोहम्मद द्वारा बनाया गया वास्तविक चित्र अमान्य करते हैं। फडके मूलतः कट्टर मुस्लिम विरोधी एवं जातिवादी हैं। यह इतिहासकार होने का लक्षण कतई नहीं है। फडके अनका ज़ातिवाद अगले सभी खंडो की दृष्टि से खतरनाक है, इसलिए यह इतिहास की किताब कतई नहीं हो सकती। 'चिटणी बखर' की तरह ही शिवचरित्र साधन में 'फडके बखर' का भी समावेश हुआ है, मगर इस पर पैसा मराठा मन्दिर का खर्च हुआ है।

शिवचरित्र के इस पहले खण्ड के पन्ना सं॰3 पर लक्ष्मीकांत बबलादी इनकी प्रस्तावना में बबलादी शिवाजी महाराज की महानता के लिए रामदास का अभिप्राय देते हैं। मगर सवाल खड़ा होता है कि शिवाजी महाराज की महानता के लिए रामदास का अभिप्राय देने की क्या जरूरत है? इसका मतलब फडके एण्ड कम्पनी द्वारा रामदास को बड़ा बनाने का प्रयास किया गया है।

शिवाजी महाराज की चतुराई एवं पराक्रम को 'गीता' की कैची में बंदिस्त करने का प्रयास पृष्ठ क्र॰3 पर किया गया है। पृष्ट क्र॰5 पर शिवाजी महाराज 53साल की आयु तक जीवित थे, ऐसा बबलादी कहते हैं। इसका मतलब शिवाजी महाराज की 19 फरवरी 1630 यह वास्तविक जन्मतिथि फडके एण्ड कम्पनी को मंजूर नहीं है। पृष्ठ क्र॰क 8 पर फडके कहते हैं, "शिवकाल यह मेरी विशेष पढ़ाई या संशोधन का विषय कभी नहीं था, और न आज है।" ऐसे अज्ञानी फडके शिवचरित्र लिखेंगे, यह वास्तव में बहुजन समाज के साथ 21 वीं सदी में बहुत बड़ी धोखेबाजी है। पृष्ठ क्र॰12 एवं 13 पर फडके शिवाजी महाराज के संबंध में अनादरपूर्वक (एकेरी भाषा) लिखते हैं। फडकेजी ! शिवाजी महाराज का पूरे सम्मान के साथ जिक्र करेंगे तो क्या

Scanned with CamScanner

बिगड़ेगा? शिवचरित्र का ब्राह्मणों द्वारा किया गया पक्षपाति लेखन जब बहुजन समाज के शोधकर्ताओं के ध्यान में तब बहुजन शोधकर्ताओं ने शिवाजी महाराज का वास्तविक चरित्र लेखन किया। इसे फडके ब्राह्मण-ब्राह्मोत्तर जातिवाद कहते हैं। सत्यलेखन करना यह जातिवाद नहीं है।, यह बात फडकेजी को ध्यान में रखनी होगी। ज्ञानदेव-तुकाराम की बजाए नामदेव-तुकाराम ऐसा जयघोष करना यह जातिवाद है, ऐसा भी फडके कहते है, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि वारकरी सम्प्रदाय की नींव संत नामदेव ने रखी, यह वारकरी सम्प्रदाय का इतिहास है। 19 फरवरी 1630 यह शिवजयंती की तारीख किसी भी राजनीतिक पार्टी द्वारा घोषित नहीं की, बल्कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा गठित तज्ज्ञ इतिहासकारो की सिफारिशों के अनुसार घोषित की गई है, परन्तु फडके ने, जयंती की तारीख राजनीतिक पार्टी ने घोषित की, ऐसा लिख कर राजनीतिक पार्टियों का आपस में विवाद निर्माण करने का प्रयास किया है। 'जेधे शकावली' का संदर्भ साधन में जिक्र तक नहीं है।

समकालीन मुनची द्वारा लिखित 'हिस्टरी ऑफ मोगल' इस साधन का भी जिक्र नहीं है, किन्तु 'चिटणीस बखर' का संस्करण रहे रॉबर्ट आर्म (1803) इनका जिक्र है। निकालाओं मनुची इनकी किताब तथा 'जेधे शकावली' के माध्यम से शिवाजी महाराज का वास्तविक दर्शन होता है। एक ही खंड में शिवचरित्र लिखना संभव और महत्वपूर्ण होते हुए भी छः खंडों में ग्यारहवीं सदी से इतिहास लिखने की कोई जरूरत नहीं है। इस संबंध में लेखक ने स्वयं शरद पावार इनसे दिल्ली में मुलाकात कर बातें समझाने का प्रयास किया, तब शरद पवार फडके एण्ड कम्पनी पर गुस्सा हुए, किन्तु गुस्सा करने का कोई मतलब नहीं है। वास्तविक चरित्र लिखना होगा।

अ०भा०मराठा महासंघ के पश्चिम महाराष्ट्र अध्यक्ष प्रवीण गायकवाड, अध्यक्ष शांताराम कुंजीर,पुना शहर महिला आघाडी अध्यक्ष लीनाताई रणपिसे तथा समूचि महिला कार्यकर्ताओं द्वारा इसके खिलाफ आन्दोलन छेड़ने के कारण ही फडकेजी का यह षड्यंत्र लोगों के समझ में आया। शिवचरित्र का कालखंड केवल 17 वीं सदी (1600-1700) है फिर भी शरद पवार एवं मराठा मन्दिर (मुंबई) के ट्रस्टीयों की आँखों में धूल झोककर फडके द्वारा शिवाजी महाराज तथा मराठा महिलाओं की भयानक बदनामी की गई है। इस

Scanned with CamScanner

बदनामी के लिए फडके जितने जिम्मेवार हैं, उतने ही शरद पवार भी जिम्मेवार हैं।

'शिवचरित्र' यह कोई कॉन्टैक्ट देकर लिखने का विषय नहीं है। उसके लिए प्रेम, श्रद्धा, गंभीरता की जरूरत है। मराठा मन्दिर को डा॰जयसिंगराव पवार, इतिहासाचार्य मा॰म॰देशमूख, गोविन्द पानसरे, प्रो॰अशोक राणा, प्रो॰बाहेकर क्यों नहीं दिखें? शिवचरित्र के संबंध में हमेशा विवाद बना रहे, यह ब्राह्मण लेखकों की हमेशा मंशा रही है। क्योंकि यदि विवाद बरकरार रहता है। तो बहुजन समाज क्रिया-प्रतिक्रिया के चक्कर में फँसा रहेगा। अर्थात बहुजन समाज की पूरी ताकत विवाद में ही खत्म होनी चाहिए, इसलिए ब्राह्मण हमेशा शिवचरित्र में भ्रांति पैदा करते हैं।

शिवाजी महाराज का पुतला चोरी कैसे हुआ?

पुणे महानगर निगम के माध्यम से अमेरिका के सैन हॉजे शहर में शिवाजी महाराज का अश्रवारूढ़ पुतला बिठाने के लिए दिया गया था। इस पुतले की किमत लगभग पचास लाख रूपये थी। यह पुतला 'सैन हॉजे-पुणे मैत्री करार समिति के अध्यक्ष सुनील केलकर इनके घर पर रखा गया। यह पुतला तकरीबन एक साल तक केलकरजी के घर पर पड़ा रहा। एक दिन यह पुतला चवोरी हो गया और कुछ दिन पश्चात एक तालाब के किनारे पर पड़ा हुआ मिला। पुतले की काफी टूट-फूट हुई थी। पचास लाख रूपये की कीमत वाला आश्वारूढ़ पुतला केलकरजी के घर से कैसे चोरी हुआ? चोरों को पुतले से क्या लाभ होने वाला था? चोर वास्तव में कौन थे? गागाभट्टी पुरंदरे, बेडेकर, महाजन वृत्ति संभालने का काम केलकर अमेरिकन में रहकर करते हैं। अभी वह पुतला दुरूस्त कर उसे सैन हॉजे शहर में लगाया गया है। (संदर्भ: साप्ता॰चित्रलेखा, दि॰ 21/4/2003)

विदेशी लेखकों द्वारा शिवाजी महाराज की बदनामी करने का प्रयास

जिन बहुजन महापुरूषों ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था के खिलाफ आन्दोलन चलाया उनकी बदनामी करने का काम ब्राह्मणों ने किया। कृष्ण, बुद्ध, संत तुकाराम महाराज, राष्ट्रपिता जातिबा फुले, राजर्षि महाराज, बाबासाहब डा॰अम्बेडकर इन महापुरूषों के साथ-साथ शिवाजी महाराज की बदनामी करने का काम ब्राह्मणों ने किया। ब्राह्मणों की साजिश बहुजनों की समझ में

Scanned with CamScanner

आने से ब्राह्मणों ने अब अपने दांव-पेंच में परिवर्तन किया है। अब ब्राह्मणों द्वारा यूरोप, अमेरिका आदि देशों के लोगों को आगे कर हमारे महापुरूषों की बदनामी करने का सिलसिला शुरू किया है।

हाल ही में अमेरिका में रहने वाले जेम्स विलियम लेन इनकी 'शिवाजी द हिन्दू किंग इन इस्लामिक इण्डिया' नामक किताब ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित कर दुनिया भर में उसे वितरित किया गया है। यह किताब निहायत निचले दर्जे की बदनामी भरी किताब है। लेखक अमेरिकन क्यों न हो मगर उसे पुणे के भांडारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीटच्युट' ने सहायता की है। वा॰ल॰मंजूल, सुनीता नेने, एस॰एस॰बूलकर, सुचेता परांजपे, वाय॰बी॰दामले, भास्कर चंदावरकर, मीना चंदावरकर, ए॰आर॰कुलकर्णी, जयंत लेले, दिलीप चित्रे इन्होंने लेन को किताब लिखने में मदद की है।

इसका मतलब इस ब्राह्मण कम्पू ने योजनाबद्ध तरीके से अमेरिकन लेखक के जरिए शिवाजी महाराज का निराधार एवं बदनामी भरा चरित्र लिखवाया है। दुनिया के किसी भी धर्म का इन्सान अपने महापुरूष की बदनामी नहीं सहता। शिवाजी महाराज की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बदनामी होने के बावजूद बहुजन खामोश क्यों? क्योंकि उन्हें स्वामी समर्थ, हरिनाम सप्ताह, गणेश उत्सव, पंढरपुर की यात्रा आदि देवी-देवताओं के चक्कर में फँसाकर रखा गया है। इसलिए उन्हें अपने महापुरूषों की बदनामी का एहसास नहीं है। काल्पनिक देवी-देवताओं की अवमानना होने पर चिड़नेवाले युवा शिवाजी महाराज की बदनामी होने पर भी खामोशी क्यों? इसलिए मूलनिवासी बहुजनों अभी जागों, पढ़ो, लिखों !

संत तुकाराम महाराज, शहाजी महाराज, जिजाऊ माँ साहब, संभाजी महाराज, राष्ट्रपिता जोतिबा फुले, राजर्षि शाहू महाराज, बाबासाहब डा॰अम्बेडकर इनसे प्रेरणा लेकर मराठा धार्मिक दृष्टि से शिवधर्म के रूप में आजाद हो रहे हैं, इसलिए इन महापुरूषों की बदनामी करने का अभियान ब्राह्मणों ने अपने हाथ में लिया है।

जेम्स लेन के जरिए, शिवाजी महाराज की बदनामी का योजनाबद्ध षड्यंत्र

जेम्स लेन यह एक क्लर्क है। जेम्स लेन का इस्तेमाल किया गया है। जेम्स लेन यह कोई संशोधक या इतिहासकार नहीं है। क्योंकि यदि लेन संशोध

Scanned with CamScanner

क या इतिहासकर होता तो उसने शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाला घिनौनी जोक अपनी किताब में छापा ही नहीं होता। जेम्स लेन को बढ़िया ढंग से इस्तेमाल कर निहायत योजनाबद्ध तरीके से शिवाजी महाराज की बदनामी की गई है।

लेन द्वारा जो बदनामी भरी बातें लिखी गई है। वह एक जोक (विनोद) के तौर पर लिखी हुई हैं और वह जोक महाराष्ट्रायीन लोग बड़े ही विनोद से और मजाक में बताते हैं, ऐसा वो लिखता है। शिवाजी की माँ हम सभी को अपनी माँ समान लगती है, माँ पर विनोद तैयार करना यह भारतीय महाराष्ट्रीयन लोगों की संस्कृति नहीं है। लेन द्वारा लिखा गया जोक अमेरिकन दिमाग की ऊपज नहीं है और न ही वजह लेन के दिमाग की ऊपज है। लेन यह मूलतः विदेशी व्यक्ति है, फिर उसे यह गंदा, घिनौना औरा एक आदर्श माता की बदनामी तथा महाराज की बदनामी करने वाला जोक किसने बताया? मूलतः यह जोक तैयार किसने किया?

लेन अपनी किताब में लिखता है कि सुनीता नेने और दिलीप चित्रे इन्होंने उसे पुणे में लाया। भांडारकर संस्था के ग्रंथपाल वा॰ल॰मंजूल इन्होंने शिवचरित्र लिखने की प्रेरणा दी। अ॰रा॰कुलकर्णी, वाय॰बे॰एवं रेखा दामले, मीना एवं भस्कर चंदावरकर, श्रीकांत बहुलकर, जयंयत लेले, नरेन्द्र वागले, माधव भंडारे, शहिर योगेश कुलकर्णी, बिंदूमाधव जोशी इन्होंने लेन को मदद की।

भांडारकर संस्थसा के ग्रन्थपाल और लेन के साथी वा॰ल॰मंजूल इन्होंने 'भारतीय विद्या के विदेशी विचारक' (भारतीय विद्येची विद्वान) नामक किताब लिखी है। इस किताब को रा॰चिं॰ढेरे इन्होंने प्रस्तावना लिखी है। कै॰वि॰दा॰ऋृषि न्यास (पुणे) इस संस्था द्वारा उपरोक्त किताब प्रकाशित करने हेतु पाँच हजार रूपये अनुदान राशि दी गई है। वा॰ल॰मंजूल लिखित यह किताब श्रीमति सविता जोशी इनके 'उत्कर्ष प्रकाशन' इस प्रकाशन संस्था द्वारा सन् 2001 में प्रकाशित की गई है। इस किताब के पृष्ठ क्र॰47 पर ''शिव छत्रपति भक्त प्रा॰जेम्स लेन'' नामक अध्याय है। इस किताब में भांडारकर संस्था के ग्रन्थपाल वा॰ल॰मंजूल लिखते हैं, ''लेन संस्कृत साधनों में उलझ गए थे। शिव राज्याभिषेक प्रयोग, परमानंद का शिवभारत, पुरूषोत्तम पंडित

Scanned with CamScanner

इनका शिवकाव्य आदि विषयों का उनके पाठ्यक्रम में समावेश था। तौलनिक अध्ययन के लिए उन्होंने शिवाजी महाराज पर मराठी शहीरों द्वारा लिखे गए मराठी 'पोवाडे' इकट्ठा किए। कै॰शाहिर हिंगे, शाहीर योगेश, शाहीर मावले इनके साथ ग्राहकपेठ निवासी बिंदूमाधव जोशी इन्होंने दोस्ती करवा दी। इतना ही नहीं तो पुणे के कई शाहीरों (पुरंदरे समेत) के साथ बिंदूमाधव जोशी ने दोस्ती करवा दी'', ऐसा मंजूल लिखते हैं। लेन 1986 से किताब प्रकाशित होने तक कई बार भारत में रहा। इस दौरान लेन की सहायता करने वाले बिंदूमाधव जोशी, मंजूल, चित्रे दामले हैं। मंजूल लिखते हैं, ''गजाजन जहागीरदार द्वारा दिग्दर्शित दुरदर्शन धारावाहिक 'स्वामी' में काम करने वाले जेम्स लेन को शुटिंग के लिए चौदह घंटे देने पड़े। परन्तु उसकी बहुत कम कीमत अदा करने के कारण हमें बड़ा दुःख हुआ। पुणे में उनके (लेन के) कई मित्र हैं। कई परिवारों के लिए वे उनके परिवार के 'सदस्य' के रूप में हैं। जुलाई शुरू होने पर सारे दोस्त उनके आने की राह देखते थे।'' लेन की राह देखने वाले और उनसे दोस्ती रखने वाले ब्राह्मण समुदाय के लोग हैं।, यह बात मंजूल द्वारा लिखित किताब के आधार पर साबित होती है। बिंदूमाधव जोशी ने शाहीर योगेश, मावले और कै॰हिंगे इनसे दोस्ती करवा दी। इसका मतलब बिंदुमाधव जोशी की लेन के साथ दोस्ती के बगैर लेन की अन्य लोगों से दोस्ती करवाना संभव नहीं है, यही इससे स्पष्ट होता है।

लेन की सहायता करने वाले, उनका हौसला बढ़ाने वाले सभी ब्राह्मण है यह कोई योग नहीं है, बल्कि शिवाजी महाराज की बदनामी की साजिश मात्र है। जिजाऊ माँ साहब जैसी आदर्श माँ की अवमानपना कर आज के बहुजनों को नालायक साबित करने का यह षड्यंत्र है। ब्राह्मण छोड़ अन्य कोई बुद्धिमान, पराक्रमी हो ही नहीं सकता, यह बात लोगों के दिमाग में बिठाकर आज के बहुजन मराठा मावलों को वास्तविक सत्ता से अर्थात न्यायपालिका, कार्यपालिका, प्रचार माध्यम, सांस्कृतिक सत्ता, राजसत्ता से हटाने की यह साजिश है। इसके लिए जेम्स लेन का वा॰ल॰मंजूल, बिंदूमाधव जोशी, दामले, चित्रे इनके द्वारा बढ़िया इस्तेमाल किया गया है। लेन की किताब जून 2003 में प्रकाशित हुई। 7 सितंबर 2003 को 'दैनिक सामना' की रविवार पुरवणी में लेन की किताब पर तारीफ भरा परीक्षण अनंत देशपांडे इन्होंने लिखा। उपरोक्त

Scanned with CamScanner

परीक्षण में देशपांडे कहते हैं, ''एक अच्छे संदर्भ ग्रन्थ के रूप में भी इस किताब का इस्तेमाल हो सकता है।'' जिस किताब में शिवाजी महाराज की बदनामी की गई है, जिस किताब के कारण शिव भक्तों में रोष है। जिस किताब पर महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाया गया है, उस किताब का संदर्भ ग्रंथ के तौर पर इस्तेमाल हो सकता है, ऐसा लिखने वाले देशपांडे के मन की कौन-सा पाप है, यह बात छुपी नहीं रहती। सारांश शिवाजी महाराज की बदनामी की साजिश रचने वाले ब्राह्मण हैं और इनमें से ज्यादातर आर०एस०एस० के प्रचारक हैं।

ब०मो०पुरंदरे इनके द्वारा सन् 2003 को सोलापुर के जनता बैंक व्याख्यानमाला में जेम्स लेन की काफी तारीफ की गई है। उपरोक्त सभी नाम देखें तो शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाले जोक ब्राह्मणों द्वारा तैयार किया गया है, यह पाठकों की समझ में जरूर आया होगा। किन्तु शिवाजी महाराज की बदनामी करने की यह साजिश कोई एक दिन की नहीं है या एक साल की नहीं है बल्कि इसके लिए ब्राह्मणों ने कई साल तक विकृत रूप से काम किया है। शिवाजी महाराज के पिता शहाजी महाराज रहते हुए भी उन्हें, कथा, कादंबरी, फिल्म, धारावाहिक, पाठ्यक्रमों, शिल्पों में गैरमौजूद बताना और दादोजी कोंडदेव, रामदास ये लोग शिवाजी महाराज के गुरू न होते हुए भी उन्हें निरंतर शिवाजी महाराज-जिजाऊ इनके साथ बताना और उसे समांतर बदनामी भरा जोक तैयार करने का काम ब्राह्मण चरित्रकारों ने किया है। उसकी कुछ प्रतिनिधिक मिसाले देखनी होगी।

ब०मो०पुरंदरे यानि शिवचरित्र और शिवचरित्र यानि पुरंदरे ऐसा ही कुछ चित्र देश-विदेश में दिखायी देता है। ऐसे पुरंदरे द्वारा लिखित, ''राजा शिवछत्रपति'' इस किताब के पृष्ठ क्र० 126 परपुरंदरे लिखते हैं, ''शिवबा पर जितनी शहाजी महाराज की नहीं थी, उतनी पंत (दादोजी कांडदेव) की जान थी। उनका, माँ साहब (जिजाऊ) और शिवबा का गोत्र एक ही था।'' शहाजी महाराज का प्रभाव नहीं था और गोत्र एक ही था, ऐसा लिखने के पीछे पुरंदरे के दिल में क्या पाप छुपा हुआ है, यह जेम्स लेन द्वारा लिखा गया है।

जेम्स लेन द्वारा बदनामीपूर्ण बातें लिखने के पश्चात् वो लिखता है कि सच इस बात से साबित होता है कि शहाजी महाराज का शिवाजी महाराज पर

Scanned with CamScanner

प्रभाव नहीं था, ऐसा कथाकार बताते हैं। ऐसे कथाकार कौन? इस सवाल का जबाव है ब॰मो॰पुरंदरे। शहाजी महाराज को निरंतर गैरमौजूद बताना और दादोजी कोंडदेव को शिवाजी महाराज, जिजाऊ माँ साहब इनके साथ बताने का निहायत घिनौना काम पुरंदरे ने जीवन भर किया है। जो दादोजी कोंडदेव शिवाजी महाराज का गुरू न रहते हुए भी उसे जिजाऊ माँ साहब और शिवाजी महाराज इनके साथ बताने के पीछे पुरंदरे के मन में कौन–सा पाप छुपा हुआ था, यह जेम्स लेन की किताब से दिखायी देता है।

ऐतिहासिक सच्चाई तो यह है, कि दादोजी कोड़देव और रामदास शिवाजी महाराज के गुरू, मार्गदर्शक या अध्यापक होने का कोई सबूत उपलब्ध नहीं है।

मासा पाणी खेळे गुरू कोण असे, त्याचा पवाडा गातो शिवाजीचा ॥3॥

(संदर्भ: म॰फुले लिखित 'छ॰ शिवाजी महाराज इनका पोवाडा)

राष्ट्रपिता जोतिबा फुले द्वारा लिखित शिवाजी महाराज के 'पोवाडा' में राष्ट्रपिता जोतिबा फुले कहते हैं कि मछली पानी में तैरना सिखती है, उसे कोई गुरू नहीं होता। मछली के लिए कहीं पर भी तैरने का प्रशिक्षण केन्द्र नहीं होता, फिर भी मछली आसानी से पानी में तैरती है। ठीक उसी प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज के पुरखे रणभूमि में लड़ते हैं। उनके दादाजी मालोजी महाराज, मातृदादा लखुजी महाराज, पिता शहाजी रणभूमि में लड़ने वाले थे, तलवारबाजी करने वाले थे। उनकी माता जिजाऊ माँ साहब भी युद्ध विद्या में माहिर थी। ऐसे शिवाजी महाराज को किसी भट ब्राह्मण द्वारा युद्ध विद्या पढ़ाने की कोई जरूरत नहीं थी।

सारांश, शिवाजी महाराज को युद्ध विद्या एवं राजनीति की महारत उनकी सत्वशिल माता जिजाऊ माँ साहब और क्रान्तिकारी पिता शहाजी महाराज इनके माध्यम से ही हासिल हुई', ऐसा राष्ट्रपिता जोतिबा फुले अपने 'पोवाडा' में निःसंदेह रूप लिखते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज को राजमुद्रा और भगवा ध्वज शहाजी महाराज ने ही दिया था।

ब्राह्मणों की घिनौनी सोच के संबंध में चंद्रशेखर शिकरे द्वारा लिखित 'प्रतिइतिहास' इस किताब की कप्रस्तावना में डा॰आ॰ह॰ससालुंखे लिखते हैं, ''सामान्य अध्यापक हो या उन्नत स्तर पानेवाला गुरू हो, वो अपने छात्रों के

अथवा शिष्यों के विचारों को दिशा प्रदान करने का काम करता है। उसकी जीवन शैली को आकार प्रदान करता है। उसके मन की ही नहीं बल्कि अंतर्मनप को भी तराशने का काम करता है। संक्षिप्त में, गुरू का अपने शिष्य पर काफी प्रभाव होता है। इस प्रभाव के महत्व को पहचानकर ही ब्राह्मणों ने गुरू बनने का अधिकार केवल ब्राह्मणों के लिए आरक्षित रखा था। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज की जीवनशैली को नियंत्रित कर उस पर वर्चस्व बनायें रखने सें अमर्याद शक्ति ब्राह्मणों के हाथों में केन्द्रित हुई। दूसरी ओर धर्म, नीति, दर्शन जीवन मूल्य इस संबंध में समाज को कुछ बताने का कोई भी अधिकार अन्य लोगों को नहीं है, ऐसी विघातक मिसाल भारत में निर्माण हुई। स्वाभाविक रूप से बहुजन समाज के व्यक्ति चाहे कितने भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, फिर भी उनकी उस प्रतिभा को इस्तेमाल नहीं कर सकते, ऐसी एक हद(फ्रेम) तैयार हुई। ऐसा रहते हुए भी बहुजन समाज में असाधारण सृजनशिलता है। वैदिकों द्वारा निर्माण की गई सभी संकुचित हदों को लाँघकर और बहुजनों की प्रतिभा के इर्द-गिर्द लगाएं गए सभी तार तोड़कर यही सृजनशिलता पून: बढ़ी है और उसके स्वरूप के आगे वैदिक संस्कृति के अविवेकी नियम फीके साबित हुए है।

बहुजन समाज में दैदिप्यमान कर्तुत्व की छाप छोड़ने वाले व्यक्ति बार-बार निर्माण हुए हैं। वैदिकों के मन में उनके प्रति जलन निर्माण हो ऐसे महान व्यक्ति बहुजन समाज में बार-बार पैदा हुए हैं। उनकी लोकप्रियता को देखकर वैदिकों के दिल चूर-चूर हो जाते हैं तो दूसरी तरफ इस लोकप्रियता का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करने की धूर्त अभिलाषा भी उनमें जागृत होती है। ऐसे समय पर गुरू बनने का एकाधिकार ब्राह्मणों के पास होने का नियम उनके काम आता है, बहुजनों में जो भी व्यक्ति बड़े बने, उन सब के गुरू ब्राह्मणों होने के कारण ही बड़े बने, ऐसा कहकर वे बहुजनों के कर्तुत्व का श्रेय स्वयं लेते हैं। इसके माध्यम से एक तरफ जहाँ वे अपनी श्रेष्ठता की भावना का प्रदर्शन करते हैं, वहीं दूसरी तरफ समाज पर अपना वर्चस्व भी बरकरार रखते हैं।

......कहने का तात्पर्य, वैदिक संस्कृति द्वारा गुरूत्व का अधिकार कुछ चुनिंदा लोगों के पास आरक्षित रखने के बावजूद भी वास्तव में गुरूत्व को

शोभा देने वाले व्यक्तित्व का विकास हो ऐसे वातावरण का अणू-रेणू भी वैदिक व्यवस्था में अस्तित्व में नहीं था, तो फिर शिवाजी महाराज जैसा कोई अर्थो में गगनभेदी व्यक्तित्व गुरू बन सकेगा, ऐसा व्यक्ति वैदिक संस्कृति में कैसे पैदा होने वाला था? जो आड़ में ही नहीं था, वो भला पोहरे में कैसे आएगा?

शिवाजी महाराज की ब्राह्मणों द्वारा की गई बदनामी के संबंध में मराठा सेवा संघ के संस्थापक अध्यक्ष एवं इतिहास के सुक्ष्म अभ्यासक एड॰पुरूषोत्तम खेडेकर लिखते हैं, ''ब्राह्मणों की कमजोरियाँ ब्राह्मण पुरूषों को पता होती है, इन कमजोरियों के बारे में ऊपर उसे यकीन नहीं रहता। आत्माविश्वास गँवाने वाला ब्राह्मण पुरूष विकृत रूप धारण करता है और इस विकृति के कारण ही वो घिनौना कृत्य करता है। अर्थात ज्यादातार ब्राह्मण पुरूषों की नामर्दनगी ही अन्य लोगों की बदनामी करना शुरू करता है। सर्वोच्च सफलता का श्रेय लेने का वो प्रयास करता है।''

शिवचरित्र के महत्वपूर्ण संदर्भ साधन जेधे शकाली, शिवभारत, राधामाधव विलाससचंपू, पर्णालपर्वत, गृहणाख्यान, बुधभुषण आदि वस्तुनिष्ट संदर्भ ग्रंथों में दादोजी कांडदेव और रामदास इनके नाम का थोड़ा भी जिक्र नहीं है। परन्तु शिवाजी महाराज के कर्तुत्व का श्रेय ब्राह्मणों को मिले इसके लिए ब्राह्मण चरित्रकारों ने दादोजी कोंडदेव और को शिवाजी महाराज के गुरू के तौर पर प्रचार के पीछे क्या मकसद था, यह जेम्स लेन प्रकरण के माध्यम से स्पष्ट हुआ है।

महाराष्ट्र सरकार द्वारा क्रीड़ा मार्गदर्शक के लिए ''दादोजी कोंडदेव क्रीड़ा पुरस्कार'' प्रदान किया जाता है। इस संबंध में 'इन्फरमेशन राईट एक्ट' के तहत 8 सितंबर 2006 को महाराष्ट्र सरकार के 'क्रीड़ा एवं युवा सेवा संचालनालय' इस विभाग को पूछा गया कि 'दादोजी कोडदेव शिवाजी महाराज के गुरू होने का आपके पास कौन-सा ऐतिहासिक सबूत है? यह पुरस्कार कब से शुरू किया गया? और अब तक यह पुरस्कार किसे प्रदान किया गया?

यह पुरस्कार 1988 से शुरू किया गया है, और उसके साथ पुरस्कार प्राप्त लोगों की सूचि भी दी गई है। इसका मतलब दादोजी कोंडदेव, शिवाजी महाराज का गुरू होने का कोई भी सबूत सरकार के पास नहीं है फिर भी यह

Scanned with CamScanner

पुरस्कार दिया जाता है। इसके पीछे सरकार को हाथ में लेकर योजनाबद्ध तरीके से शिवाजी महाराज की बदनामी की साजिश की गई, यही साबित होता है।

कक्षा चौथी के ''शिवछत्रपति'' इस किताब में दादोजी कोंडदेव को शिवाजी महाराज का मार्गदर्शक गुरू होने की बात पढ़ाई जाती है। जेम्स लेनने कक्षा चौथी की 'शिवछत्रपति' किताब का भी संदर्भ के तौर पर इस्तेमाल किया है। 'शिवछत्रपति' किताब प्रकाशित करने वाले सरकार के 'महाराष्ट्र राज्य पाठ्य-पुस्तक निर्मिती एवं पाठ्यक्रम संशोधन मंडल(पुणे)' अर्थात ''बालभारती'' को 'इन्फरमेशन राईट एक्ट' के तहत 20 जून 2006 को एक खत के जरीए 'कक्षा चौथी की 'शिवछत्रपति' किताब तैयार करने के लिए कौन से संदर्भ साधनों का इस्तेमाल किया गया है? यह किताब किसने लिखी है? इस किताब की पांडुलिपी की झेरॉक्स कांपी उपलब्ध करायी जाए' ऐसी अर्जी की गई तब 'बालभारती' ने 18 जूलाई 2006 को जबाव भेजा कि ''यह जानकारी गोपनीय होने की वजह से तथा जानकारी खुली करने से सार्वजनिक हित में बाधा निर्माण होने की संभावना है इसलिए आपके द्वारा पूछी गई जानकारी बता पाना मुश्किल है।''

'बालभारती' द्वारा चालाकी भरा जबाव दिया गया। कोई भी ऐतिहासिक सबूत न होते हुए भी दादोजी कोंडदेव को शिवाजी महाराज के गुरू के तौर पर प्रचारित करने के पीछे बालभारती का क्या मकसद था, यह बात जेम्स लेन प्रकरण के माध्यम से सामने आयी है। बालभारती और भांडारकर इन्स्टीटयूट एक-दूसरे के बगल में ही है। सरकारी किताब होने के कारण उसमें लिखी बातें सच होगी, ऐसी लोगों की धारणा बनती है, परन्तु सरकार द्वारा प्रकाशित किताबों कितनी झूठी और बदनामी की साजिश में शामिल है, यह दिखायी देता है। स्कूल बहुजन समाज के लोगों द्वारा शुरू किये गए किन्तू उन स्कूलों में पाठ्यक्रम निर्धारित करने वाली सरकारी संस्थाएँ ब्राह्मणों के कब्जे में हैं, इसलिए ज्यादातर झूठा इतिहास पाठ्यक्रम में दिखायी देता है।

पुणे नगर निगम के माध्यम से 'लाल महल' में एक समूह शिल्प खड़ा किया गया है। आज जो लाल महल दिखायी देता है, वह शिवाजी महाराज का वास्तविक लाल महल नहीं है। पेशवा शिवाजी महाराज के नौकर

थे। नौकर रहे पेशवाओं का 'शनिवारवाड़ा' बड़ा और राजा रहे शिवाजी महाराज का लाल महल छोटा, यह कैसे संभव है? सद्विवेक बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति आज का लाल महल शिवाजी महाराज का वास्तविक लाल महल है, यह कदापि स्वीकार नहीं कर सकता शनिवारवाड़ा यही मूलतः लाल महल है।

इसका मतलब आज का लाल महल अनैतिकहासिक और उसमें खड़ा किया गया समूहशिल्प भी अनैतिहासिक है। इस समूहशिल्प में जिजाऊ माँ साहब, बाल शिवाजी की बगल में दादोजी कोंडदेव इनका पुतला खड़ा किया गया है। कोई भी तीसरा व्यक्ति (जेम्स लेन जैसा) यह समूह शिल्प देखें तो 'माँ पिताजी और लड़का लगेगा ऐसा यह समूहशिल्प है। यह समूह शिल्प एक विदेशी व्यक्ति को बताने के लिए कुछ लोगों ने लाया था, ऐसी अभी चर्चा की जाती है। मतलब जेम्स लेन को श्रीकांत बहुलकर, वा०ल०मंजूल, जोशी, जयंत लेले आदि लेन के साथियों ने शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाला जोक बताकर वह जोक सही लगे इसके लिए उसे लाल महल में खड़ा किया गया समूहशिल्प बताया गया।

लाल महल में खड़े किए गए समूह शिल्प के संबंध में इन्फरमेशन राईट एक्ट के तहत पुणे नगर निगम को 14 मार्च 2006 को एक खत द्वारा पूछा गया कि ''यह समूह शिल्प किसकी सलाह से और कब खड़ा किया गया?'' तब पुणे नगर निगम ने 23 मार्च 2006 को जवाब भेजा कि निनाद बेडेकर इनकी सलाह से यह समूहशिल्प खड़ा किया गया है। उस समय रत्नाकर कुलकर्णी पुणे निगम के कमीशन थे और सुहास कुलकर्णी स्थायी समिति के चेयरमैन थे।

प्रत्यक्ष रूप से सन् 1988 को लाल महल का पुनर्निर्माण हुआ उस समय यह समूहशिल्प नहीं था। 9 नवम्बर 1994 को निनाद बेडेकर द्वारा लाल महल में शिवाजी महाराज, जिजाऊ माँ साहब और दादोजी कोडदेव इनका समहशिल्प खड़ा किया जाए ऐसा सूचित किया गया और 20 जून 2000 को इस समूह शिल्प का उद्घाटन किया गया।

हम शिवाजी महाराज की बदनामी की साजिश कर रहें हैं इस बात की किसी को भी भनक नहीं लगनी चाहिए इसलिए शिल्प बिठाने हेतु दिवंगत राजमाता छ०सुमित्रराजे भोसले इनसे लिखित अनुमति निनाद बेडेकर और

Scanned with CamScanner

कम्पू ने ली और इस समूहशिल्प का उद्घाटन प्रदीप रावत, गोपीनाथ मुंडे, सुरेश कलमाडी, गिरीश बापट, सुहास कुलकर्णी, पुणे नगर निगम के पदाधिकारी इनकी मौजूदगी में हुआ तथा इस कार्यक्रम के लिए कोल्हापूर के छ॰शाहू महाराज इन्हें भी आमंत्रित किया गया। छत्रपति के भोलेपन का फायदा लेकर बेडेकर-पुरंदरे इन्होंने शिवचरित्र का किस प्रकार सत्यानाश किया, यह उपरोक्त बातों से साबित होता है।

शिवाजी महाराज के पिता शहाजी महाराज इन्हें निरंतर गैर मौजूद बताकर दादोजी कोंडदेव को शिवाजी महाराज के साथ बताकर बदनामी करने की साजिश की गई है। जेम्स लेन के साथी ब्राह्मण हैं। तिलक विद्यापीठ के श्रीकांत बहुलकर, यह तो लेन के सह लेखक है। विकृतीभरे शिल्प, कादंबरी लिखने वाले बेडेकर-पुरंदरे ब्राह्मण हैं, इससे सिद्ध होता है कि लेन के माध्यम से ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज की बदनामी की है यह बात अब शिवभक्तों की समझ में आयी है, इसलिए ''दादोजी कोंडदेव पुरस्कार' बंद किया जाए, पाठ्यक्रम से दादोजी कोंडदेव को हटाया जाए, लालमहल स्थित दादोजी कोंडदेव कापुतला हटाया जाए यह मांगें, अब जोर पकड़ने लगी है। पुणे स्थित संभाजी ब्रिगेड, शिवसंग्राम, मराठा महासंघ, राष्ट्रसेवा समूह, मराठा विकास संघ आदि 85 संगठनों ने लालमहल स्थित शिवाजी महाराज के साथ खड़ा किया गया दादोजी कांडदेव कासपुतला हटाया जाए ऐसी मांग की है। उसके लिए उपरोक्त संगठनों के तत्वाधान में 24 अप्रैल 2006 को पुणे में 'दादो कोंडदेव कौन थे?' इस विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी। उसके लिए दोनों पक्ष रखने के लिए महाराष्ट्र के कुछ विचारकों को आमंत्रित किया गया था।

इसमें डा॰जयसिहराव पवार ,डा॰वसंत मोरे,हरी नरके और ब॰मो॰पुरंदरे, निनद बेडेकर तथा पांडुरंग बसालकवडे इन्हें निमंत्रित किया गया था। इनमें से पुरंदरे, बेडेकर, बालकवडे आये ही नहीं। उस अवसर परा इतिहास संशोधक डा॰जयसिंहराव पवार,डा॰वसंतराव मोरे औराहरि नरके इन्होंने सबूतों के आधार पर साबित किया कि दादोजी कोडदेव यह शिवाजी महराज के गुरु अध्यापक स्थित दादोजी कोंडदेव का पुतला हटाने हेतु अभिप्राय मांगा तब महाराष्ट्र सरकार के 'सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक कार्य एवं विशेष सहायता

Scanned with CamScanner

विभाग' द्वारा 9 मई 2006 के अनुसार पुणे नगर निगम को सूचित किया गया कि '' सरकार के पास कोई भी ऐतिहासिक सबूत उपलब्ध न होने से इस पर अभिप्राय देना संभव नहीं है।'' इसलिए नगर निगम को लालमहल में खड़ा किया हुआ दादोजी कोडदेव का पुतला निकालना होगा।

सारांश, दादोजी कोडदेव गुरू होने का या शिवाजी महाराज के हाथ में हल देने का कोई भी सबूत उपलब्ध न होते हुए भी निनाद बेडेकर ने पुणे नगर निगम की आँख में धूल झोंककर शिवाजी महाराज की बदनामी करने के उद्देश्य से यह समूह शिल्प खड़ा किया है, यह साबित होता है।

जेम्स लेन के जरिए बदनामी करने के लिए ब्राह्मणों ने कैसे साजिश की यह पाठकों की समझ में आया होगा। बदनामीकारक जोक जेन को सही लगना चाहिए और लेन द्वारा लिखी हुई बदनामीकारक विकृत बातें में शिवभक्तों को सही लगनी चाहिए इसके लिए पुरंदरे, बेडेकर, बहुलकर इन्होंने शासन-प्रशासन को फँसाकर किया हुआ यह शिवद्रोह है। लेन की किताब का पार्श्वभूमि पर शिव प्रेमी संगठन और सरकार से निवेदन है कि जेम्स लेन की किताब पर पाबंदी लगाने के साथ ही कुछ महत्वपूणर्प बातें जल्द से जल्द करनी होगी, जिसमे–

1) 'दादोजी कोंडदेव पुरस्कार' इस पुरस्कार का नाम जल्द से जल्द बदलना होगा।

2) क्रमिक पाठ्यक्रम से दादोजी कोंडदेव, रामदास यह हिस्स निकालना होगा।

3) लालमहल स्थित शिवाजी महराज के साथ खड़ा दादोजी कोंडदेव कास पुतला हटाकर उसकी जगह शहाजी महाराज तथा शिवाजी महाराज के साथियों (मावलों) के पुतले खड़े करने होंगे, यही सच्चा शिवप्रेम होगा।

4) शिवाजी महाराज की बदनामी करने वालीर एक संगठित टोली कार्यरत है, यह बात उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होती है। छ॰शिवाजी महाराज की बदनामी करने की साजिश करने वालों को सरकार ने कठोर दण्ड यदेना चाहिए।

इस पार्श्वभूमि पर अब हमें अपना इतिहास लिखना होगा। धर्मशास्त्र के थोर अभ्यासक डा॰आ॰ह॰सालुंख लिखते हैं, ''शोषकों से अपनी मूक्ति की

Scanned with CamScanner

(कल्याण की) अपेक्षा करना यह उसकी होशियारी नहीं बल्कि हमारी मूर्खता है।" इसलिए हमारे पास लेखक, वक्ता, शाहीर, संशोधक निर्माण होने चाहिए अन्यथा पुरंदरे-बेडेकर हमारे इतिहास लिखकर उसे किस प्रकार कलंकित करते हैं, यह हमने देखा ही है।

ब्राह्मण सामने आकर कभी नहीं लड़ते। शिवाजी महाराज की बदनामी करने के लिए उन्होंने जैम्स लेन का इस्तेमाल किया तथा हिन्दू-मुस्लिम विवाद बरकार रखने के लिए असगर अली इंजीनियर तथा मराठा-ओबीसी-दलित संघर्ष बढ़ाने हेतु एड॰संघराज रूपवते इनका इस्तेमाल किया।

शिवाजी महाराज ने स्वराज स्थापित करने की प्रेरणा रायरेश्वर के मन्दिर में नहीं ली।

शिवाजी महाराज ने स्वराज स्थापना करने की प्रेरण रायरेश्रवर के मन्दिर में नहीं ली। समकालीन वास्तविक दस्तवेजों में इस बात का कहीं पर भी जिक्र नहीं है। (संदर्भ: जेधे शकावली, सभासद बखर, शिवभारत) शिवाजी महाराज प्रयासवादी थे। स्वराज स्थापना करने का विचार शिवाजी महाराज ने अपने दोस्तों को प्रभावी रुप से बताने के कारण तथा महाराज का गरीब जनता के प्रति नितांत प्रेम देखकर मावले प्रभावित हुए और सभी ने एक दिल से स्वराज स्थापना करने का फैसला लिया। अच्छा कार्य करने वालों को मन्दिर की आवश्यकता नहीं होती। महत्वाकांक्षी और आत्मविश्वास रखने वाले महापुरूष ईश्वर भोले नहीं होते। शिवाजी महाराज महत्त्वाकंक्षी थे। रायरेश्रर के मन्दिर में जाकर प्रतिज्ञा लेनेवाले दुर्बल मनोवृत्ति के एवं परावलंबी नहीं थे, यह शिवाजी महाराज का वास्तविक इतिहास है। फिर भी रायरेश्रर के मन्दिर में जाकर प्रतिज्ञा ली ऐसा प्रचार क्यों किया गया? बहुजन समाज को कर्मकांड में फँसाए रखने हेतु ब्राह्मणों ने 'ईश्वर' संकल्पना निर्माण की। भगवान, धर्म के लिए बहुजन युवाओं ने हाथ में तलवार लेकर फँसाद करना चाहिए, बहुजनों ने अंग्रेजी, कम्प्यूटर का ज्ञान नहीं लेना चाहिए, ब्राह्मणों के लड़के एम॰पी॰एस॰सी॰ और यू॰पी॰एस॰सी॰ के जरिए कलेक्टर, सेक्रेटरी, कमीशनर, न्यायाधीश, संपादक, डाक्टर, वकील, इंजीनियर बनकर विदेश में जाये तथा बहुजनों के लड़के ने मन्दिर के लिए दंगा, आन्दोलन और रैली निकालकर जेल में जाये। इसलिए बहुजनों में ईश्वर और मन्दिर प्रेम निर्माण करने के

Scanned with CamScanner

मकसद से शिवाजी महाराज ने रायरेश्वर के मन्दिर में स्वराज करने की प्रेरणा ली, ऐसा झूठा इतिहास लिखा गया।

33 करोड़ भगवान निर्माण करने से मूलनिवासी बहुजन इन निर्जीव कल्पित ईश्वर की प्राप्ति के लिए रात-दिन आराधना करने लगे। यह संपादन करने हेतु ईश्वर की आराधना की वृत्ति वृद्धिगत हुई और भारतीय मूलनिवासी बहुजनों की क्रियाशिलता धीरे-धीरे कम हुई और यही विदेशी ब्राह्मणों को अभिप्रेत था। भगवान आया वहाँ मन्दिर आया, मन्दिर में पुरोहित आया, पुरोहित के लिए दक्षिणा आयी। बहुजन समाज के सभी लोग पुरोहितों के आगे नतमस्तक होने लगे। ईश्वर और मन्दिर के माध्यम से बहुजनों को गुलाम बनाने का षड्यंत्र ब्राह्मणों ने किया। इसका मतलब मन्दिरों का निर्माण बहुजनों के उद्धार के लिए नहीं बल्कि ब्राह्मणों के उद्धार के लिए हुआ है। मन्दिर के कारण बहुजनों की पेट की समस्या हल होने वाली नहीं है, बल्कि ब्राह्मणों के पेट की समस्या हल होने वाली है। भोले भाविक भक्तों से ब्राह्मणों को करोड़ो रूपये मिलते हैं। इसलिए मन्दिर निर्माण का तथा मन्दिर का महत्व लोगों को समझाने का ब्राह्मण प्रयास करते हैं। स्कूल, लायब्रेरी, कम्प्यूटर सेंटर, स्वच्छतागृह, स्नानगृह बनवाने हेतु ब्राह्मण बहुजनों को प्रेरणा नहीं देते। डैम बनाने की बजाए डैम की ऊँचाई बढ़ाने का विरोध करते हैं, किन्तु मन्दिर के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चंदा इकट्टा करते हैं। क्योंकि एक ही समय पर बहुजनों का पतन हो और ब्राह्मणों को मिठा निवाला मिले, यह ब्राह्मणों का जहरीला मकसद है।

जिस देश में 33 करोड़ भगवान हैं उस देश पर विदेशी लोगों ने आक्रमण क्यों किया? एक करोड़ भगवान बार्डर पर जाकर क्यों नहीं रूके? यदि एक भगवान 3 व्यक्तियों को दत्तक लेता है, तो आज भारत के सभी प्रश्न हल हो सकते हैं। बहुजनों को गुलाम बनाने के लिए विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने भगवान निर्माण किया। भगवान कम पड़े इसलिए घर छोड़कर जाने वाले, गंजा फूँकने वाले गजानन, स्वामी समर्थ इन्हें भी भगवान बनाया गया। गजानन और समर्थ इन्होंने कोई स्कूल शुरू नहीं किए, डैम नहीं बनाए, रास्ते नहीं बनाए और ना ही महिलाओं को शिक्षा दी।

ऐसी वस्तुस्थिति रहते हुए यह षड्यंत्र बहुजन समाज के ध्यान में न आए इसलिए बहुजनों के आराध्य नेता शिवाजी महाराज के माध्यम से ही

Scanned with CamScanner

उनके समूचे जीवन का दैवतीकरण करना, यही मकसद रायरेश्वर मन्दिर की प्रतिज्ञा के पीछे है। शिवाजी महाराज जैसे राजा रायरेश्वर के मन्दिर में प्रतिज्ञा लेने हेतु गये तभी उन्हें सफलता मिली इसलिए हम रात-दिन मन्दिर में जाकर प्रतिज्ञा करते हैं, तो हमें भी सफलता मिलेगी, यह बात लोगों के दिलों-दिमाग में बिठाने के लिए ही ब्राह्मण लेखक, कादंबरीकार इन्होंने शिवाजी महाराज ने स्वराज स्थापना करने की प्रतिज्ञा रायरेश्वर के मन्दिर में जन्म लिया ऐसा झूठा इतिहास लिखा।

यह झूठा इतिहास लिखने वाले लोग ही शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है।

शिवाजी महाराज प्रयासवादी थे, मन्दिर में बैठने से यश संपादन नहीं होता। दस दिन तक नंगे पैर चलने से सफलता नहीं मिलती। नंगे पैर घुमने से पैर में काँटे चुभते है, पत्थरों से पैरों में जख्म होती है, पैर में तकलीफ शुरू होती है, उसका गलत परिणाम आँखों पर होता है। शरीर में पीड़ा होती है। शरीर को पीड़ा देना यह घातक कृत्य है। शरीर यदि स्वस्थ्य रहेगा तो ही मनुष्य अच्छी तरह से काम कर सकता है। शरीर को पीड़ा पहुँचाना मुर्खता है। बदन में आना मुर्खता है। बदन में भगवान आने से सफलता नहीं मिलती। सफलता हासिल करने के लिए रात-दिन प्रयास करना पड़ता है। कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। साल भर सरस्वती की पूजा करने पर भी बोर्ड के इम्तेहान देने के लिए सरस्वती आने वाली नहीं है।

बहुजनों के लिए सावित्रीबाई फुले इन्होंने पाठशालाएँ शुरू की। सरस्वती का शिक्षा से कोई संबंध नहीं है। इसलिए सरस्वती की बजाए सावित्रीबाई फुले की पूजा होनी चाहिए। वर्ल्ड बैंक में कभी भी महालक्ष्मी की पूजा नहीं होती फिर भी वर्ल्ड बैंक पूरी दुनिया को कर्जा देती है। हम हर साल महालक्ष्मी की पूजा करते है फिर भी हमारा देश कर्ज के बोझ तले क्यों डूबा हुआ है? जापान में नौकरानी का काम करने वाली महिला ईश्वर पूजा, सत्यनारायण नहीं करती फिर भी वो चार चक्के की गाड़ी में घूमती है, वैसी कार हमारे देश के मंत्रियों को भी नसीब नहीं होती। पढ़ाई करने की बजाए, गणपति की पूजा करते रहने से समस्याएँ हल नहीं होती, उसके लिए खूद को प्रयास करना पड़ता है। शिवाजी महाराज ने यह बातें अच्छी तरह से पहचानी थी, इसलिए शिवाजी

Scanned with CamScanner

महाराज को सफलता मिली।

शिवाजी महाराज यदि घंटों तक मन्दिर में बैठकर आराधना करते हुए बैठे होते तो स्वराज की स्थापना नहीं हुई होती। महाराज प्रयासवादी थे। जिनके मस्तिष्क, दंड, मन और हड्डियों में दम होता है, वे लोग भगवान का आधार नहीं होते। जो डरपोक, दुर्बल, परावलंबी होते हैं, वे ही लोग ईश्वर की उपासना करते हैं और ब्राह्मणों की गुलामी स्वीकार करते हैं। ईश्वर मानना यानि ब्राह्मण की गुलामी स्वीकार करने के बराबर है। इस दुनिया में चार्वाक, गौतम बुद्ध, महात्मा फुले, संत गाडगे महाराज, बाबासाहब अम्बेडकर, संत तुकाराम महाराज, डा॰पंजाबराव देशमुख, पेरियार रामास्वामी आदि महापुरूषों ने भगवान को नहीं माना फिर भी उनका बसाल भी बाँका नहीं हुआ। उलटा वे गुलामी से आजाद हुए और इसलिए इन महापुरूषों को सफलता मिली और उन्होंने समाज को भी ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त किया।

शिवाजी महाराज ने पुर्तगाली तलवार खरीदी की

शिवाजी महाराज को भवानी माता ने तलवार नहीं दी। शिवाजी महाराज ने वह तलवार गोवलेकर सावंत इनसे 300 होन (1050 रुपये) देकर खरीदी की है। वह तलवासर पुर्तगाल में तैयार हुई थी। (अडवाणी अब कहने लगे है: संदर्भ दै॰सकाळ, दि॰ 20/6/2002)मतलब बढ़िया दर्जे की चीज विदेशी में ही क्यों न बनी हो फिर भी वह यदि अपने लिए फायदेमंद है तो उसे खरीदा जाए, यह शिवाजी महाराज की नीति थी। स्वदेशी और विदेशी ऐसा भेज उन्होंने कभी नहीं किया। इसलिए 350 साल पूर्व उन्होंने पुर्तगाली तलवार खरीदी थी। तलवार महाराज का साधन था, साध्य नहीं। तलवार को जितना महत्व है उतना ही शिवाजी महाराज का पराक्रम, निर्भययता और चतुराई को है। शिवाजी महाराज को यदि तलवार नहीं भी मिली होती फिर भी महाराज रूके नहीं होते। महत्वकांक्षी लोग साधनों के अभाव में कभी रूकते नहीं। शिवाजी महाराज के पूर्व भी इस देश में कई तलवारधारी राजा-महाराजा होकर गए। फिर भी वे भूमिपूत्रों का राज निर्माण क्यों नहीं कर सके? इसका कारण है वैज्ञानिक दृष्टिकोण कास अभाव। इसलिए शिवाजी महाराज ने तलवार जैसे कई साधनों का इस्तेमाल कर मूलनिवासी बहुजनों का स्वराज निर्माण किया।

अब सवाल यह खड़ा होता है कि तलवार का 'भवानी' यह नाम

देवता स्वरूप है। यह नाम कैसे पड़ा होगा? इस दुनिया में कई प्रकार के नाम हैं, परन्तु नाम और उस व्यक्ति का जीवन इसमें कई प्रकार की विसंगतियाँ होती है। 'श्रीमंत' नाम धारण करने वाले लोग धनवान होंगे ही, ऐसा नहीं है। 'आदित्य' नाम रहने वाले व्यक्ति का क्या कहीं पर प्रकाश पड़ता है? अभय नामक व्यक्ति डरपोक होते हैं। 'यशवंत' को कई बार पराजय स्वीकार करनी पड़ती है तथा 'अमर' नाम वाले व्यक्ति का भी मृत्यु होता है। उसी प्रकार तलवार का नाम 'भवानी' ही क्यों न हो फिर भी भवानी का और तलवार का आपस में कोई संबंध नहीं है।

देवी ने तलवार देने के कारण ही शिवाजी महाराज को सफलता मिली अन्यथा उन्हें सफलता नहीं मिली होती, ऐसा समाज में प्रचार किया जाए तो समाज शिवाजी महाराज की बजाए देवी की उपासना करेगा और देश में शिवाजी महाराज का महत्व कम होकर देवी की यात्रा को जाने वाले भक्तों की संख्या में इजाफा होगा। शिवाजी महाराज को स्वराज स्थापन करने की प्रेरणा देने वाली जिजाऊ माँ साहब के सिंदखेड राजा इस मातृतीर्थ की बजाए देवी के शक्तिपीठ जहाँ है, बहुजन समाज ने जाना चाहिए इसलिए शिवाजी महाराज को देवी ने तलवार दी, ऐसा प्रचार किया गया।

शिवाजी महाराज को वास्तविक प्रेरणा उनकी आदर्श माता जिजाऊ माँ साहब इनकी थी, हर जानलेवा प्रसंग पर जिजामाता शिवाजी महाराज के साथ खंबीर रूप से खड़ी थी। महिला शक्ति को कम आँकने के लिए जिजाऊ माँ साहब के कार्य को अनदेखा किया जा रहा है।

बहुजन समाज को दैववादी बनाने के मकसद से ही उन्हें ईश्वर के जाल में फँसाया गया है। बहुजनों को यदि भगवान पर प्यार करना सिखाया जाए तो वे अपने आप रात-दिन पढ़ाई करने की बजाए भगवान का उत्सव मनाएँगे। चंदा इकट्टा करेंगे और अपना किमती समय बर्बाद कर पांच सौ किलोमीटर नंगे पाँव, शराब पीकर ज्योति लाने हेतु जाएंगे और उनका समय तथा पैसा खर्चा होगा। ऐसी जहरीली साजिश ब्राह्मणों ने रची है।

इस जहरीले साजिश का इतना विपरीत परिणाम हुआ है कि वह सच बताते समय कुछ लोगों को खटकने की बहुत ज्यादा संभावना है। परन्तु आप से निवेदन है कि आप इन बातों पर शान्ति से सोंचे। श्रद्धा जरूर होनी चाहिए,

Scanned with CamScanner

किन्तु वह निर्जिव, कल्पित देवताओं पर नहीं होनी चाहिए। श्रद्धा रखनी ही है तो वह अपने माता-पिता के प्रति रखी जाए (तूला म्हाणे माय बापे। अवघी देवाचीच रुपे) जीवन मनुष्यों पर सभी सजीवों पर पेड़-पौधों पर यदि श्रद्धा रखी जाए तो काफी लाभ होगा। जिनके कारण हमें हक और अधिकार, शिक्षा प्राप्त हुई उनके प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। क्या गणपति, दत्त, गजानन, स्वामी समर्थ, सरस्वती, महालक्ष्मी संतोषी माँ इन्होंने हमारे लिए स्कूल शुरू किए? क्या इन्होंने बहुजनों को हक और अधिकार बहाल किए? श्रम और पढ़ाई पर श्रद्धा रखी जाए तो गरीबी दूर हो सकती है।

शिवाजी महाराज की श्रम और जिन्दा व्यक्ति के व्यक्ति के प्रति श्रद्धा थी। इसलिए उन्होंने जहाँ पर भी पसीना बहाया वहाँ सभी जाति-धर्म के लोगों ने शिवाजी महाराज के लिए अपना खून बहाया। शिवाजी महाराज ने अपने कर्तुत्व के कारण विजय हासिल की, किसी भगवान के आशीर्वाद से नहीं। शिवाजी महाराज कभी भी पंढरपुर की यात्रा को नहीं गये। विट्ठल के लिए हर साल दस लाखभक्त महिना भर पैदल चलकर पंढरपुर जाते है। एक तरफ विकसित देश चाँद, मंगल और गुरू पर जारहे हैं, कम्प्यूटर के बल पर दुनिया में बहुत बड़ी क्रान्ति हुई है किन्तु ब्राह्मणों के माध्यम से अध्यात्म के नाम पर बहुजनों को हक और अधिकार से वंचित करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। पढंरपुर की 'वारी' (यात्रा) में पैदल चलकर जाने वाले आमतौर पर बहुजन समाज के ही लोग होते है।

शिवाजी महाराज के माध्यम से मुस्लिम द्वेष फैलाने का षड्यंत्र

शिवाजी महाराज मुस्लिम द्वेष्टा नहीं थे, यह निर्विवाद रूप से सत्य होते हुए भी शिवाजी महाराज यानि मुस्लिम विरोध ऐसी कल्पना इस दुनिया में ब्राह्मणों ने निर्माण की है। अफजलखान, शाइस्तेखान, औरंगजेब, दिलेरखान ये लोग शिवाजी महाराज के दुश्मन थे, इसमें कोई दो राय नहीं हैं परन्तु उनका शिवाजी महाराज के साथ राजनीतिक युद्ध था। धर्मयुद्ध नहीं था। किन्तू अफजलखान, औरंगजेब, सिद्धी जौहर इन प्रसंगों के माध्यम से मुस्लिम द्वेष लोगों के दिमाग में ठुसकर भरने का काम कई कथाकार, शाहीर, नाटककार और कादंबरीकारों ने किया है, परन्तु कथा, कादंबरी, फिल्म, धारावाहिक और महानाट्यय यानि इतिहास नहीं है।

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज मुस्लिम विरोधी थे ऐसा समाज में प्रचार कर बहुजन समाज और मुसलमानों के बीच झगड़ा निर्माण करना यह बुनियादी मकसद है। बहुजन समाज और मुसलमानों के बीच हमेशा फँसाद होता रहे, इसका ब्राह्मणों ने कई वर्षो से प्रयास किया है। औरंगजेब ने जब हिन्दूओं पर 'जिजिया कर' लगाया था तब ब्राह्मण वह टैक्स नहीं भरते थे। इसका मतलब ब्राह्मण हिन्दू नहीं है। ब्राह्मण मूलत: विदेशी हैं इसलिए उन्हें देश और धर्म नहीं है, इसलिए वे हिन्दू के नाम पर बहुजनों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काते है। किन्तू ब्राह्मणों का मुसलमानों के साथ अन्दर ही अन्दर अच्छा रिश्ता होता है। यह बात बहुजनों ने ध्यान में रखकर धार्मिक फँसाद में शामिल होने से बचनाा चाहिए। क्योंकि व्यक्ति के प्राणों की कोई कीमत नहीं होती, प्राण अमुल्य हैं और एक बार जाने वाले प्राण कभी लौटकर नहीं आते। दुनिया के सभी इन्सान समान होते हैं। भारत की जातियाँ, धर्म पंत यह सब ब्राह्मणों ने निर्माण किए हैं। सत्ता चाहे किसी की भी क्यों न हो, ब्राह्मण उसे ही चिपके रहते हैं। अकबर और औरंगजेब इनके कई ब्राह्मण सलाहकार थे। अफजलखान, शाइस्तेखान, औरंगजेब, दिलेखान, सिद्धी जौहर इन्हें ब्राह्मणों द्वारा सहायता करने के कारण ही शिवाजी महाराज को काफी तकलीफ उठानी पड़ी। आज भी कई ब्राह्मण अभिनेत्रियाँ मुसलमान अभिनेताओं पर फिदा हैं। गीत-संगीत के क्षेत्र में मुसलमान मान्यवरों की हांजी-हांजी करके हीब्राह्मण गायकों का उदय हुआं है। राजनैतिक क्षेत्र में भी ब्राह्मण और मुसलमान इनका कोई बैर नहीं है, हर सत्ता को ब्राह्मणों चिपके रहते है। इसलिए संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य, गीत-संगीत, वादन, संशोधन शिक्षा, संभाषण (वक्तृत्व प्रचार माध्यम, प्रशासन आदि क्षेत्रों पर ब्राह्मणों का कब्जा है।

लाखों मूलनिवासियों को गीत गाने का अवसर नहीं मिला इसलिए वे गायक नहीं बन पायें। मतलब केवल अवसर नहीं मिला इसलिए योग्यता होते हुए भी बहुजन समाज को ब्राह्मणों ने गुलामी में रखा और इसलिए आतंकवादियों की दहशत से ज्यादा ब्राह्मणों का सांस्कृतिक आतंकवाद ज्यादा खतरनाक है और यह आतंकवाद बरकरार रखने के लिए ब्राह्मण,मुसलमान ही नहीं बल्कि दुनिया की किसी भी सत्ता के साथ नजदीकियाँ बढ़ाते हैं, परन्तु बहुजन समाज आगे न आने पायें इसलिए वे बहुजनों को भी कभी मुसलमानों, इसाईयों,

Scanned with CamScanner

बौद्धों के खिलाफ भड़काकर अपना सांस्कृतिक एवं राजनैतिक उल्लू सिधा करते हैं। इसके लिए बहुजन समाज समेत सभी धर्म के भाईयों ने फँसाद में शामिल नहीं होना चाहिए। प्रचार माध्यम ब्राह्मणों के कब्जे में रहने से अखबारों पर बिल्कूल यकिन नहीं किया जा सकता।

ऐसा प्रचार किया जाता है कि यदि शिवाजी महाराज नहीं होते तो सबकी सुन्नत हो गई होती, तो क्या क्या मुसलमानों की नौकरी करने वाले राजपूत सिपाहियों की सुन्नत हुई? मिर्जाराजे जयसिंह, रामसिंह,भीमसेन सक्सेना इनकी सुन्नत क्यों नही हुई? उत्तर भारत के बहुजनों की सुन्नत क्यों नहीं हुई? संभाजी महाराज ब्राह्मण के भेष में मथुरा में बगैर किसी डर के रह सकते थे। इसका मतलब आगरा के नजदीक रहने वाले ब्राह्मणों की सुन्नत नहीं हुई। फिर भी कवि भूषण के 'काव्य' का आधार लेकर मुसलमानों को डर बताने का प्रयास ब्राह्मण और उनके संगठन करते हैं। बहुजनों में मुसलमानों के प्रति भय, पैदाकर उनमें सुरक्षास की भावना निर्माण कर उनका इस्तेमाल सत्ता, संपत्ति कमाने के लिए करना औरा मुसलमान एवं बहुजनों को फँसाद में खत्म करना, यह ब्राह्मणों का दांव-पेंच है। मुसलमानों के अन्दर भी असुरक्षा की भावना पैदा कर उन्हें भी भड़काया जाता है।

शिवाजी महाराज के भक्तों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने का काम ब्राह्मण नेता समय-समय पर क्यों करते हैं? इसका जवाब हर कोई हमेशा के लिए ध्यान में रखे। बहुजन समाज और मुसलमानों के बीच निरंतर झगड़ा चलता रहे यानि झगड़े में ही उनकी ताकत खर्च होकर उसका फायदा ब्राह्मणों को राजनीति और प्रशासन में होता है। बहुजन समाज और मुस्लिम युवा जब दंगे में फँसते हैं तब ब्राह्मणों को प्रतियोगिता परीक्षा में आसानी से सफलता मिलती है। बहुजन समाज के लड़के पुलिस स्टेशन, कोर्ट के चक्कर काँटते रहते है और बाद में जेल में फँस जाते हैं। इसलिए शिवाजी महाराज के माध्यम से मुस्लिम द्वेष निर्माण करने का षड्यंत्र किया गया शिवाजी महाराज की मुस्लिम विरोधी प्रतिमा निर्माण करने के लिए ब्राह्मणों ने 'लश्कर-ए-शिवबा नामक संगठन बनाया।

शिवाजी महाराज का दुनिया का पहला चित्र बनाने वाला मीर मोहम्मद यह मुसलमान था। उनके कारण ही हमें आज शिवाजी महाराज का वास्तविक

Scanned with CamScanner

चित्र उपलब्ध हुआ है। शिवाजी महाराज के स्वराज का पहला सेनापति यह नुरखान बेग था। सिद्धी इब्राहीम और मदारी मेहतर शिवाजी महाराज के अंगरक्षक थे। सिद्धी हिलाल शिवाजी महाराज के निष्ठावान सरदार थे। इब्राहीम दौलत खान यह शिवाजी महाराज के तटरक्षक दल के प्रमुख थे, काजी हैदर नीजि सचिव थे। केलशी के संत बसाबा याकूत, पाटगांव के संत मौनीबाबा शिवाजी महाराज के लिए गुरू समान थे। रूस्तूमेजमान शिवाजी महाराज का गुप्तचर था। शिवाजी महाराज की सेना में 35 फिसदी मुसलमान थे। उन लिए नमाज अदा करने हेतु शिवाजी महाराज ने रायगड पर मस्जिद बनावायी थी। इसका मतलब मस्जिद गिराने वाले लोग शिवाजी महाराज के अनुयायी कतई नहीं हो सकते। शहाजी महाराज की मुक्ति के लिए औरंगजेब तथा संभाजी की मुक्ति के लिए आदिलशहा ने शिवाजी महाराज को सहायता की थी। इसका मतलब वह धर्म युद्ध नहीं था। शिवाजी महाराज का नाम लेकर मुसलमान या किसी भी धर्म को गाली देने वाले लोग शिवाजी महाराज के अनुयायी कभी नहीं हो सकते। इसके पीछे बहुजनों की अज्ञानता और ब्राह्मणों की धूर्तता है।

ब्राह्मण मराठों को मुसलमानों के खिलाफ क्यों भड़काते हैं ?

मराठा यह एक बहुत बड़ा व्यापक समूह है। ब्राह्मण छोड़ शेष सभी बहुजनों को 'मराठा' ऐसा कहा जाता है। शिवाजी महाराज की सेना को मराठों की सेना ऐसा भी कहा जाता है, उसमें सभी जाति-धर्म के लोग शामिल थे। आज शिवाजी महाराज के अनुयायियों (मावलों) को ब्राह्मणों और उनके कथित संगठन हमेशा मुसलमानों का डर बताते है। मुस्लिम द्वेष पढ़ाते है। मुसलमानों के खिलाफ भड़काते हैं। ब्राह्मण ऐसा विकृत बर्ताव क्यों करते हैं? इसके पीछे मराठों को मुसलमानों का डर बताकर उन पर अपना वर्चस्व बरकरार रखना यह ब्राह्मणों का दांव है। इस देश की न्यायपालिका, प्रशासन, फिल्मी दुनिया, सांस्कृतिक सत्ता, धर्मसत्ता, राजसत्ता, अर्थ सत्ता, साहित्य सत्ता, शिक्षा क्षेत्र में निर्णय सत्ता अपने कब्जे में रखने हेतु ब्राह्मण हमेशा मराठों को दैववाद-कर्मकांड और मुसलमानों के खिलाफ भड़काते है। भारत की कोई भी वास्तविक सत्ता मराठों के कब्जें में नहीं है। सत्ता का मतलब केवल विधायक, सांसद, मत्री, जिलापंचायत, नगर निगम, ग्राम पंचायत सदस्य यानि सत्ता नहीं है। हमारा देश विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री, सरपंच, मेयर,

Scanned with CamScanner

नगराध्यक्ष नहीं चलाते। बल्कि हमारा देश न्यायपालिका, प्रशासन, सचिवालय, मंत्रालय चलाता है। यह व्यवस्था आज भी ब्राह्मणों के कब्जे में है, यह बात आगे दिए गए आंकड़ों के आधार पर साबित होती है।

विदेशी भट ब्राह्मणों का अनु॰जाति, जनजाति, ओबीसी, अति पिछड़ा वर्ग एवं धर्मपरिवर्तित मूलनिवासी इन सभी की नौकरियों पर अतिक्रमण

विभाग	कुल पद	ब्राह्मण		अनु॰जाति/ अनु॰जनजाति		ओबीसी, मराठा, यादव, पटेल	
		चाहिए	हैं	चाहिए	हैं	चाहिए	हैं
1 राष्ट्रपति सचिवालय	49	07	45	11	04	25	01
2 उपराष्ट्रपति सचिवालय	07	1.5	07	02	00	04	00
3 मंत्रियों के कैबिनेट सचिव	20	03	19	04	01	11	00
4 प्रधानमंत्री कार्यालय	35	05	33	08	02	18	00
5 कृषि एवं सिंचन	274	41	259	72	15	142	00
6 रक्षा मंत्रालय	1379	207	1331	319	48	719	00
7 समाज कल्याण एवं हेल्थ	209	31	192	47	17	109	00
8 वित्त मंत्रालय	1008	151	942	227	66	524	00
9 गृह मंत्रालय	409	78	377	12	19	213	13
10 श्रम मंत्रालय	74	11	70	17	04	38	00
11 रसायन एवं पेट्रोलियम	121	18	112	27	09	63	00
12 राज्यपाल एवं उपराज्यपाल	27	04	25	7	14	06	00
13 विदेश में राजदूत	140	21	140	31	00	73	00
14 विश्वविद्यालय के कुलगुरू	108	16	108	24	00	56	00
15 प्रधान सचिव	26	04	26	07	00	14	00
16 हाई कोर्ट न्यायाधीश	330	50	326	74	04	172	00
17 सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीश	23	03	23	07	00	14	00
18 आई॰ए॰एस॰ अधिकारी	3600	540	2950	810	600	1872	50
19 पी॰टी॰आई॰	2700	108	2600	621	00	1404	00
20 शंकराचार्य	05	0.2	05	1.15	00	2.65	00

Scanned with CamScanner

उपरोक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि हमारे देश की वास्तविक सत्ता ब्राह्मणों के ही कब्जे में है। सरपंच, विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री यानि सत्ता नहीं है। एक जिले में लगभग 1000 सरपंच, 200 ग्राम पंचायत सदस्य, 70 जिला पंचायत सदस्य, 10 विधायक होते हैं और एक जिले के लिए केवल एक ही कलेक्टर होता है। जिला कलेक्टर चलाते हैं, विधायक, सांसद, सरपंज या मेयर नहीं चलाते। कलेक्टर को कभी चुनाव नहीं लड़ना पड़ता, वोट मांगने के लिए नहीं जाना पड़ता। ऐसे 3600 आई॰ए॰एस॰ हमारे देश में है। इनमें से 2950 कलेक्टर ब्राह्मण हैं। दि ग्रेट मराठा ग्राम पंचायत और सोसायटी के लिए पीढ़ी–दर–पीढ़ी चक्कर काँट रहे हैं। मंत्री, विधायक, सांसद लोग ब्राह्मणों के ताल पर नाचते हैं। उसका कारण उपरोक्त आंकड़ें है। परन्तु ब्राह्मण मराठों को हमेशा बताते हैं कि हमें दलितों के कारण नौकरियाँ नहीं मिलती। अनुसूचित जाति /जनजाति का आरक्षण 22.5 फीसदी है, ओबीसी का आरक्षण 27 फीसदी है। कूल 3.5 फीसदी सीटें यदि बाजू (बगल) में की जाए तो फिर खुले वर्ग की 47 फीसदी नौकरियों पर किसने अतिक्रमण किया है? खुले वर्ग की 90 प्रतिशत नौकरियों पर ब्राह्मणों ने अपना कब्जा जमाया, यह बात उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर साबित होती है। खुले वर्ग की 50.5% सिटों के लिए मराठा लोग ब्राह्मणों के प्रतिस्पर्धी न बन पायें इसलिए ब्राह्मण मराठों को ईश्वर--ईश्वर करने लगता है और मराठा युवाओं को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया है। हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष निर्माण करता है। फँसाद करवाता है। किन्तू हिन्दू–मुस्लिम फँसाद में जोशी, कुलकर्णी, देशपाण्डे, भिड़े, एकबोटे कभी नहीं मरते। मरते हैं केवल मराठा।

राममन्दिर–बाबरी मस्जिद आन्दोलन में 67000 युवाओं की जान गई, उनमें एक भी ब्राह्मण नहीं था। मगर यदि कल राममंदिर बनता है तो उस मन्दिर का पुरोहित कौन होगा? इस पर मराठों को सोचना होगा। हिन्दू–मुस्लिम फँसाद का फायदा केवल ब्राह्मणों को होता है। हिन्दूत्व के लिए ब्राह्मणों ने कभी अपनी जान नहीं गँवायी। भारत में अनगिनत किसानों ने आत्महत्याएँ की है, किन्तू किसी ब्राह्मण को दक्षिणा नहीं मिली इसलिए उसने उस खूदकुशी की हो, क्या ऐसी कोई खबर आप ने पढ़ी है? इसका मतलब

Scanned with CamScanner

मंदिर का, हिन्दूत्व का फायदा ब्राह्मणों को ही होता है।

हिन्दूत्व के नाम पर पिछड़े वर्ग पर वर्चस्व बरकरार रखने हेतू ब्राह्मण हिन्दू-मुस्लिम फँसाद करवाते हैं, परन्तु हिन्दू-मुसलमान फँसाद एकाएक नहीं होता। उसके लिए ब्राह्मण पहले पार्श्वभूमि तैयार करते हैं। यदि ब्राह्मण कहते हैं कि मुसलमानों के खिलाफ लड़िए तो कोई भी लड़ने वाला नहीं है। फिर ब्राह्मण उसके लिए क्या करते हैं? ब्राह्मण हिन्दू-मुसलमान संघर्ष के लिए छत्रपति शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज इन्हें कथा-कहानी, फिल्म-धारावाहिक, नाटक, पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से मुस्लिम विरोधी बताते हैं।

शिवाजी महाराज मुस्लिम विरोधी थे, इसलिए उनके अनुयायियों ने भी मुसलमानों का विरोध करना चाहिए। इसके लिए ब्राह्मण शिवाजी महाराज का मुस्लिम विरोधी झूठा इतिहास लिखते हैं। मीडिया के माध्यम से विरोधी वातावरण तैयार करते हैं, परन्तु जो ब्राह्मण छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम लेकर हमें मुसलमानों के खिलाफ भड़काते हैं वे ब्राह्मण शिवकाल में और उससे भी पूर्व मुसलमान राजाओं की सहायता करते थे। अफजलखान को प्रतापगड का रास्ता वाई के ब्राह्मणों ने बताया। अफजलखान को सफलता मिले इसके लिए वाई के ब्राह्मणों ने शतचंडी यज्ञ किया। अफजलखान का वकील कोई मुसलमान नहीं था, बल्कि कृष्णा भाष्कर कुलकर्णी नामक ब्राह्मण व्यक्ति था।

इसी ब्राह्मण वकील कृष्णा कुलकर्णी ने अफजलखान के प्रति निष्ठा का परिचय देते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज के माथे पर तलवार से वार किया। दिलेरखान की सफलता के लिए पुना के ब्राह्मणों ने सासवड में कोटीटंडी यज्ञ किया। इसके लिए दिलेरखान से ब्राह्मणों ने छः करोड़ रूपये लिए। औरंगजेब का सेक्रेटरी उदयराज पंडित, प्रधानप रधुनाथ दास, किलेदारा आबा भट आदि ब्राह्मणथे। अकबर के दरबार में सभी नवरत्न ब्राह्मण ही थे। संभाजी महाराज को ब्राह्मणों ने औरंगजेब के माध्यम से मुनस्मृति संहिता द्वारा बेहाल कर मार डाला। गजनी का मोहम्मद अलीउद्दीन खिजली इसकी सफलता के लिए ब्राह्मणों ने ही सहायता की है। मतलब मुस्लिम सत्ताधिशों को मदद करने वाले सभी ब्राह्मण हैं। इसका मतलब ब्राह्मणों को मुसलमानों के प्रति बहुत लगाव है, ऐसा नहीं है । जहाँ सत्ता होती है वहाँ पर ब्राह्मण होता है, यह

Scanned with CamScanner

ब्राह्मणों की वृत्ति है।

मराठा-मुसलमान लड़कर मर जाए और हमारा फायदा हो इसके लिए ब्राह्मण हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष निर्माण करते हैं। परन्तु ब्राह्मण गुप्त रूप से मुसलमानों के साथ रिश्ता बनाते हैं। इस पर मूलनिवासी बहुजनों को सोंचना होगा।

फिल्म में शाहरूख खान, सलमान खान, अमीर खान, सैफअली खान, फरदीन खान अभिनेता और माधूरी दिक्षित, उर्मिला मातोंडकर, भाग्यश्री, पटवर्धन, ऐश्वर्या राय, ममता कुलकर्णी, अभिनेत्री होती है। माधूरी, भाग्यश्री ने सलमान खान और अमीर खान के साथ डान्स (नृत्य) किया। माधूरी दिक्षित को लेकर एम॰एफ॰ हुसैन पुरी दुनिया में घुमे 'गजगामिनी' फिल्म बनायी। उस समय जोशी, भिडे, सिंधल, एकबोटे, तोगडिया इनका दिमाग क्यों नहीं भड़का? इन्होंने माधुरी-भाग्यश्री के घर पर रैली क्यों नहीं निकाली? इस पर मूलनिवासी बहुजनों को सोचना होगा। ब्राह्मण लड़कियों का मुसलमान लड़को के बगैर दिल नहीं लगता। अनगिनत मुस्लिम नायकों की बीबियाँ ब्राह्मण हैं। इसका ब्राह्मणों को गुस्सा क्यों नहीं आता? बहुजनों को मुस्लिम द्वेष पढ़ाने वाले ब्राह्मण कितने धर्मद्रोही, नीच, धूर्त हैं इस पर मूलनिवासी बहुजनों को सोचना होगा।

हमें मुसलमानों के खिलाफ भड़काकर फँसाद करवाने वाले ब्राह्मण हमारे धर्म के नहीं हैं। ब्राह्मण विदेशी है। इसलिए ब्राह्मण हिन्दू नहीं है। परन्तु इस देश के बहुजनों का इस्तेमाल कर अपना वर्चस्व बरकरार रखने के लिए ब्राह्मण खूद को हिन्दू के तौर पर प्रचारित करते हैं। हमारा और ब्राह्मणों का धर्म एक नहीं है। हमरा धर्म यानि शिवाजी महाराज का धर्म शिवधर्म है। ब्राह्मणों की बातें सुनना बंद कर पहले ब्राह्मण मुक्त होने का प्रयास करते हैं, तो अपने आप भयमुक्त होंगे। इस संबंध में शिवाजी महाराज के गुरू संत तुकाराम महाराज अपने अभंग में कहते हैं 'तुका म्हणे सांगो किती। जळो तयाची संगती।।' ब्राह्मणों का साथ छोड़ने से ही आपका कल्याण होगा। अब बहुजन युवाओं को ग्राम पंचायत, सोसायटी, नगर निगम के चुनाव लड़ने की बजाए डाक्टर, वकील, इंजिनियर, आईएएस, अभिनेता, शोधकर्ता, लेखक, नाटककार बनने पर जोर देना होगा। एमपीएससी/युपीएससी की खूब पढ़ाई

Scanned with CamScanner

करनी होगी। अपना दुश्मन हमें निर्धारित करना होगा। सरकारी नौकरियाँ ब्राह्मणें के कब्जे में है। नीजि क्षेत्र के टाटा, बिरला, अंबानी, बजाज, दैनिक सकाळ, पीटीआई, आईआईटी, इस्त्रों आदि संस्थाओं में भी 90 फीसदी ब्राह्मण ही हैं। ब्राह्मणों की तुलना में हमारे युवाओं की गुणवत्ता ज्यादा अच्छी है। इस गुणवत्ता के क्षेत्र में ब्राह्मण युवाओं के साथ बहुजन यवा प्रतियोगिता न करें, इसके लिए ब्राह्मण बहुजन युवाओं को मुसलमानों के खिलाफ भड़काते हैं। इस पर गंभीर रूप से सोचना होगा। पढ़ना होगा। सत्य विचारों का प्रचार करना होगा। यही शिवधर्म का शिवकार्य है।

ब्राह्मण हिन्दु नहीं हैं

सन् 1678 में औरंगजेब ने जब हिन्दूओं पर जिजिया कर लगाया था, तब ब्राह्मण औरंगजेब से कहने लगा, ''हम जिजिया कर नहीं भरेंगे'', तब औरंगजेब पूछा, क्यों? तो ब्राह्मण कहने लगा कि ''हम विदेशी है, हम हिन्दु नहीं हैं, इसलिए हिन्दुओं के लिए लगाया गया जिजिया कर हम नहीं देंगे।''

छत्रपति शिवाजी महाराज ने जब समता पर आधारित स्वराज निर्माण किया तब शिवाजी महाराज को खत्म करने का बीड़ा उठाने वाले अफजलखान को सफलता मिले इसके लिए वाई के ब्राह्मणों ने शतचंडी यज्ञ किया। शिवाजी महाराज ने अफजलखान को जब खत्म किया तब अफजलखान का वकील कृष्णा भाष्कर कुलकर्णी ने शिवाजी महाराज के माथे पर तलवार से वार किया, यह शिवाजी महाराज को किसी दुश्मन द्वारा समूचे जीवन में हुई पहली जख्म थी।

दिलेरखान की विजय के लिए और शिवाजी महाराज की पराजय के लिए पुना के 400 ब्राह्मणों ने 'कोटीचंडी यज्ञ' किया। शिवाजी महाराज ने जब खूद का राज्याभिषेक करने का फैसला लिया तब ब्राह्मणों ने महाराज को विरोध किया। शिवाजी महाराज द्वारा प्रारंभ किया गया 'शिवशक' नाना फडणवीस इस ब्राह्मण पेशवा ने बंद करे मुसलमानों का 'फसलीशक' शुरू किया। उपरोक्त बातों को मद्देनजर रखते हुए शिवभक्तों को सोचना होगा कि यदि शिवाजी महाराज हिन्दु, हिन्दवी स्वराज और हिन्दुत्व के लिए लड़ रहे थे, तो खूद को हिन्दू कहलाने वाले ब्राह्मण मुसलमानों की मदद क्यों कर रहे थे?

संत तुकाराम ने जब अभंगो का लेखन किया तब मंबाजी भट, रामेश्वर

Scanned with CamScanner

भट आदि ब्राह्मणों ने तुकाराम महाराज की 'गाथा' इन्द्रायणी नदी में डुबायी, तुकाराम महाराज की काफी प्रताड़ना की। ब्राह्मणों ने संत तुकाराम महाराज को धोखसे से मारा।

संभाजी महाराज ने 'बुधभूषण' नामक संस्कृत ग्रंथ की रचना की इसलिए ब्राह्मणों ने औरंगजेब के जरिए संभाजी महाराज की मनुस्मृति संहितानुसासर हत्या की। बसंत कानेटकर, रामगणेश गडकरी, सु॰ग॰शेंवडे, महेश तेंडुलकर, शाहीर योगेश कुलकर्णी, आदि ब्राह्मणों ने संभाजी महाराज की काफी बदनामी की। संभाजी महाराज का बदनामी भरा चरित्र लिखने वाले सभी ब्राह्मण हैं। जैसा ब्राह्मण इतिहासकार प्रचार करते हैं कि संभाजी महाराज हिन्दू धर्म के लिए लड़े, यदि वास्तव में संभाजी महाराज हिन्दू धर्म के लिए लड़े तो खूद को हिन्दू कहलाने वाले ब्राह्मणों ने संभाजी महाराज की बदनामी क्यों की?

कक्षा 12 वीं की मार्च 2006 की 'मराठी' विषय की प्रश्नावली में संत तुकाराम महाराज के संबंध में बदनामी कारक संक्षिप्त लेख (पैरेग्राफ) चुनने वाली कुंदा पेडणेकर नामक ब्राह्मण है। वह पैरेग्राफ लिखने वाले अडलजा देशाई उर्फ ओक यह महिला ब्राह्मण है, और वह पैराग्राफ पेपर में शामिल करने वाला डा॰वसंत कालबांडे नामक ब्राह्मण है। संत तुकाराम महाराज और ब्राह्मण दोनों हिन्दू है फिर भी हिन्दू कहलाने वाले ब्राह्मणों ने संत तुकाराम महाराज की बदनामी क्यों की?

जेम्स लेन के जरिए पुरंदरे, बेडेकर, मंजूल, दामले, कुलकर्णी, जोशी लेने, चंदावरकर, चित्रे आदि चौदह ब्राह्मणों ने छत्रपति शिवाजी महाराज की बदनामी की। ब्राह्मणों का और शिवाजी महाराज का धर्म यदि एक होता तो क्या ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज की बदनामी की होती?

क्या अन्य धर्म के लोग उनके महापुरूष की बदनामी करते हैं? शिक्ख समुदाय के लोग कभी भी गुरूनानकजी की बदनामी नहीं करते। जैन समुदाय के लोग कभी भी भगवान महावीर की बदनामी नहीं करते। मुस्लिम समुदाय लोग कभी भी मोहम्मद पैगंबर साहब की बदनामी नहीं करते। बौद्ध धर्मीय लोग कभी भी तथागत बुद्ध की बदनामी नहीं करते। इससे यह बात ध्यान में रखनी होगी। कि ब्राह्मण यदि हमारे धर्म के होते तो उन्होंने हमारे

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज की बदनामी नहीं की होगी। ब्राह्मण यदि हमारे धर्मबन्धू होते तो ब्राह्मणों ने अपनी माता जिजाऊ माँ साहब की बदनामी नहीं की होती। ब्राह्मण हिन्दू नहीं हैं इसलिए वे हमारे महापुरूषों का विकृतीकरण एवं बदनामी करते हैं।

ब्राह्मण बहुजन समाज पर ब्राह्मण के तौर पर कभी राज नहीं कर सकता इसलिए वो हिन्दू के तौर पर हमारा धार्मिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, न्याय पालिका, सांस्कृतिक, साहित्यक, प्रचार माध्यम आदि क्षेत्रों में नेतृत्व करता है और हमारा शोषण करता है। यह शोषणकारी व्यवस्था बरकरार रखने हेतु ब्राह्मणों निरंतर 'गर्व से कहों, हम हिन्दू है', 'हिन्दू धर्म खतरे में हैं', 'हिन्दूत्व के लिए लड़ना होगा' के लिए लड़ना होगा, ऐसा प्रचार करते हैं। इसकी बजाए यदि ब्राह्मण कहने लगे कि 'ब्राह्मण धर्म खतरे में है, ब्राह्मण ध र्म के लिए लड़िए', तो ब्राह्मणों की सहायता करने के लिए कोई भी आगे आने वाला नहीं है। ब्राह्मण हिन्दू के तौर पर हमारा शोषण करता है। यदि हमारे देश में नब्बे फीसदी मुसलमान होते तो ब्राह्मणों ने 'गर्व से कहो, हम मुसलमान है', ऐसा नारा दिया होता। ब्राह्मण दांवपेच बदलता है मगर उद्देश्य कभी नहीं बदलता। शिवकाल में हम हिन्दू नहीं है ऐसा कहने वाले ब्राह्मण आज खूद को हिन्दू क्यों कहते हैं? इस बात पर गंभीर रूप से सोचना होगा।

सारांश, ब्राह्मणों विदेशी हैं, यह ऐतिहासिक सच्चाई है, इसलिए ब्राह्मणों हिन्दू नहीं है। ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज, संत तुकाराम महाराज इनकी निरंतर बदनामी की है। इसलिए ब्राह्मण हिन्दू नहीं हैं। इसलिए उन्हें हमारे विधि करने का और हमारा धार्मिक नेतृत्व करने का अधि ाकार नहीं है।

राजर्षि शाहू महाराज कहते हैं, ''लिंगायत की पूजा लिंगायत करते हैं, वे ब्राह्मणों को किसी धार्मिक कर्मकांड में शमिल नहीं करते। सिक्ख लोग सिक्ख समुदाय के पूजा विधि करते हैं, वे ब्राह्मण को नहीं बुलाते। जैन धार्मिय लोग अपनी पूजा स्वयं करते हैं, वे भी ब्राह्मणों को नहीं बुलाते। इतनी हीं नहीं तो कौओं का नेता कौआ ही होता है, हिरण के गुट का नेता हिरण सही होता है, हिरण कभी सुअर को अपना नेता नहीं बनता। तोता कभी कौएँ को अपना नेता नहीं बनाता। पंछियों को यह समझ है, उसी प्रकार इन्सान को यह समझना

Scanned with CamScanner

होगा कि ब्रह्मण हमारे धर्म के नहीं हैं इसलिए ब्राह्मण हमारे धर्म का नेता नही हो सकता। ब्राह्मण हिन्दू नहीं है, इसलिए हिन्दू धर्म का मुखिया या हिन्दुओं की ओर से बोलने का, आन्दोलन करने का ब्राह्मणों को अधिकार नहीं है। ब्राह्मण और हमारे पूजा विधि समान नहीं है। उनके और हमारे धार्मिक जीवन में काफी अंतर है।

मुसलमान-मराठा दोनों ब्राह्मणों के टारगेट हैं

मराठों को हाथ में लेकर मुस्लिम द्वेष पढ़ाने वाले ब्राह्मणों के केवल मुसलमान ही टारगेट नहीं है, बल्कि मराठा भी टारगेट हैं। शिवाजी महाराज ने सभी ब्राह्मणों के विरोध को बाजू में रख अपना राज्याभिषेक करवाया । तभी से मराठों को समाप्त करना, यह ब्राह्मणों का मकसद है। यदि ब्राह्मणों को मराठों के प्रति प्यार होता तो उन्होंने मराठों को दूरदर्शन, न्यायपालिका, कार्यपालिका, नाट्यक्षेत्र, सांस्कृजिक क्षेत्र, साहित्य क्षेत्र आदि क्षेत्रों में शामिल किया होता, इसका उलटा वे इन जगहों पर मराठों के शामिल होने का विरोध करते हैं। इसके पीछे दलित, मुसलमान विवाद को खाद्य.डालने का काम ब्राह्मण करते हैं। इसके पीछे दलित-मुसलमानों के साथ-साथ मराठों को भी समाप्त करना, यह ब्राह्मणों की साजिश है। इसके लिए ब्राह्मण मराठों का ही इस्तेमाल करते हैं, यह बड़ी दुःख की बात है। कार्यपालिका, न्यायपालिका, प्रचार माध्यम, धर्मसत्ता पर क़ब्जा बनायें हेतू ब्राह्मण देश में फँसाद करवाते हैं। ब्राह्मणों का वर्चस्व बरकरार रखने हेतू ब्राह्मणों के अनगिनत पूर्णकालिक प्रचारक अपना नाम और वेशभूषा बदलकर काम करते हैं। इसके लिए वे शिवाजी महाराज और संभाजी महाराज का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि तिलक, सावरकर का नाम लेने से बहुजन समाज को भड़काया नहीं जा सकता, यह ब्राह्मणों को भलिभाँति पता है।

शिवाजी महाराज को 'मराठा राजा' कहने के पीछे की साजिश

छत्रपति शिवाजी महाराज ने भारत के मूलनिवासी बहुजनों का राज निर्माण किया। महाराज ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था समाप्त की। 'स्वराज' केवल पाटी,भोसले, जाधव, निंबालकर, गायकवाड माने इन मराठा जाति के लोगों का ही राज नहीं था। बल्कि शिवाजी महाराज ने सभी जाति धर्म के लोगों की सहायता से स्वराज (सामान्य जनों का राज) निर्माण किया।

Scanned with CamScanner

यदि शिवाजी महाराज ने केवल मराठा तख्त की निर्मिती की होती तो अन्य जाति धर्म के लोगों ने शिवाजी महाराज की सहायता नहीं की होती। शिवाजी महाराज की सेना एवं अधिकारी वर्ग में महार, चमार, मातंग, कुम्हार, नाई, आगरी, लोहार, लिंगायत, धनगर, सुतार, कोली, बौद्ध, मुसलमान आदि कई जाति-धर्म के लोग थे। शिवाजी महाराज के लिए सभी जाति के लोगों ने अपने प्राणों की आहूती दी। इसका मतलब शिवाजी महाराज का राज केवल मात्र मराठों का राज नहीं था, यह निर्विवाद रूप से सत्य है। फिर भी महाराज का जिक्र एक मराठा राजा के तौर पर जान-बुझकर प्रचार माध्यम और ब्राह्मणी साहित्य में किया जाता है। इसके पीछे शिवाजी महाराज के वैश्रिक कार्य को सीमित करने की ब्राह्मणों की साजिश है।

शिवाजी महाराज को मराठा फाउण्डर, मराठा सम्राट, मराठा राजा इस प्रकार संबोधित करने पर महाराष्ट्र के बाहर के लोग शिवाजी महराज को एक मराठा जाति के नेता के तौर पर देखते है। इसका मतलब यह शिवाजी महाराज को केवल एक जाति की सीमा में बंद करने की साजिश है। गैर मराठा जाति को शिवाजी महाराज के प्रति जो सम्मान है। जो आदरभाव है, वह समाप्त करने के लिए ब्राह्मण सोच-समझकर प्रयास करते हैं। अखबार, राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ, अंग्रेजी प्रचार माध्यम के जरिए यह प्रयास किया जाता है। इसलिए भारत की 21वीं सदी सकी जनता शिवाजी महाराज की तरफ जातिगत दृष्टिकोण से देखने की बहुत ज्यादा संभावना है। यह यना हो इसलिए शिवाजी महाराज के अनुयायियों को इस ओर ध्यान देना होगा।

शिवाजी महाराज को 'गो-ब्राह्मण प्रतिपालक' कहने के पीछे की साजिश

छत्रपति शिवाजी महराज को वैदिकों ने समय-समय पर यकाफी तकलीफ पहुँचायी। पेशवाओं ने महाराज के समूचे कार्य को कालीख पोती। क्याइस प्रकारा तकलीफ पहुँचाने वाले लोगों की रक्षा शिवाजी महाराज ने की होगा? इसका उलटा ब्रह्मणों द्वारा शिवाजी महाराज को किया हुआ विरोध महराज ने कोई परवाह न करते हुए खुड्डे लाईन लगया। इस दौरान शिवाजी महाराज ने गंथों को प्रमाण नहीं माना। 'ब्राह्मण हो इसकी क्या परवाह करना !' ऐसी हिदायत शिवाजी महराज ने ब्राह्मणों को दी। ब्राह्मणों की बद्‌तमिजी को लगाम लगाया। यह बात सामान्यजनों की समझ में न आने पाए इसलिए

Scanned with CamScanner

शिवाजी महाराज की 'गो-ब्राह्मण प्रतिपालक' ऐसी प्रतिमा ब्राह्मणों द्वारा निर्माण की गई।

यदि महाराज गो-ब्राह्मण प्रतिपालक थे तो ब्राह्मणों ने और गायों ने शिवाजी महाराज के लिए अपने प्राणों की आहूति क्यों नहीं दी? शिवाजी महाराज ने केवल गो-पालन कर अन्य जानवरों को खत्म करने का षड्यंत्र नहीं किया था। उनका गो पर प्रेम था इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने अन्य पशुओं का तिरस्कार किया हो।

देश में गायों की संख्या बढ़े और बहुजन समाज के लड़के चरवाहे बने तथा ब्राह्मणों को कम कीमत में दूध, चक्का, मलाई मिले इसके लिए वे गाय का उदात्तीकरण करते हैं, और बहुजन महापुरूषों को गो-पालक बनाते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज गो-ब्राह्मण प्रतिपालक नहीं बल्कि बहुजन प्रतिपालक, कुलवाडी भूषण और सामान्यजनों (रयत) के राजा हैं। परिवर्तन का काम करने वाले महापुरूष का पहले जमकर विरोध किया जाता है, यदि उसमें सफता नहीं मिली तो उनकी बदनामी की जाती है। यदि उसमें भी सफलता हाथ नहीं आयी तो फिर उस महापुरूष की हत्या की जाती है। फिर भी दिवंगत महापुरूष को भगवान बनाया जाता है। भगवान बनाकर उसके नाम का जय-जयकार कर उसे मानने वाले उनके अनुयायियों को गुलाम बनाया जाता है। शिवाजी महाराज के साथ भी कुछ ऐसा भी हुआ। मगर अभी भी समय नहीं गया। देर से ही क्यों न हो, बहुजन समाज को शिवाजी महाराज के वास्तविक इतिहास की समझ होने लगी है। इतिहासाचार्य मा॰म॰देशमुख वास्तव इतिहास के आद्य शोधकर्ता है। उनके द्वारा लगायी गई चिंगारी अब बुझने वाली नहीं है। शिवाजी महाराज को काफी प्रताड़ित किया गया परन्तु महाराज ने परिवर्तन का कार्य अधूरा नहीं छोड़ा। इसलिए आज हम गर्दन ऊँची कर खड़े हैं। शिवाजी महाराज का कार्य वैश्रिक है। महाराज ने जाति, धर्म, पंत, प्रान्त, भाषा इन कृत्रिम बन्धनों को समाप्त कर समूचि मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य किया, इसलिए उन्हें विश्ववंद्य, बहुजन प्रतिपालक, कुलवाडी भूषण कहते हैं। ऐसे विश्ववंद्य महाराज को विनम्र अभिवादन !

Scanned with CamScanner

अभिव्यक्ति स्वतंत्रता के नाम पर बदनामी की साजिश

शिवाजी महाराज के नाम की तथा उनके विशेषणों की अवमानना असंख्य कलाकृतियों के माध्यम से की गई। बहुजन अज्ञानतावश करते हैं, और ब्राह्मण जान-बुझकर करते हैं। मच्छिंद्र कांबली और संतोष पवार इन्होंने ''माझे पति छत्रपति'' यह नाट्य निर्माण किया। 'छत्रपति' इस गौरवशाली शब्द की यह क्रूर चेष्टा है। पैसा कमाने के लिए पवित्र उपाधियों का धंधा करने वालों पर सही मायने में सरकार ने कठोर कार्रवाई करनी चाहिए थी। मगर सरकार के पास समय कहा है? आखिरकार यह काम शांताराम कुंजीर, प्रवीण गायकवाड, संतोष नानवटे इन्होंने किया। शिवाजी महाराज की बदनामी करने वाले मच्छिंद्र कांबली और संतोष पवार इन्हें मराठा महासंघ ने अच्छा सबक सिखाया। तब कांबली ने नाटक का नाम बदला। 'छत्रपति' की बजाए 'छत्रीपति' ऐसा नाम रखा। कांबली जी, इतना द्वेष किसलिए? यदि नाटक का पूरा नाम बदला होता तो आप भी शिवाजी महाराज के सच्चे अनुयायी हो सकते थे।

य०दि०फडके शिवाजी महाराज को एकेरी शब्द में बोलने का समर्थन करते हैं। फडके जी ! क्या आप अपने पिता के साथ एकेरी लब्ज में ही बातें करते हैं? शिवाजी महाराज तो आपके पिताजी तुलना में कई गुना ज्यादा द्वेष हैं। बहुजन द्वेष्टा रामदास तिलक, सावरकर आदि लोगों का यदि एक लब्ज में जिक्र किया जाए तो ब्राह्मणों को खटकता है। किन्तु शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज इनका अपमानजनक जिक्र करने की बात नहीं खटकती, इसका आश्चर्य लगता है। कई शराब की दुकान, बिडी को शिवाजी महाराज का नाम देना यह शिवाजी महाराज की खुल्लम-खुल्ला बदनामी है। दुनिया का कोई भी इन्सान अपने महापुरूष की बदनामी नहीं सह सकता, उसी प्रकार हमें भी इस संबंध में जागरूक रहना होगा।

आधा चेहरा बाध (टाइगर) का और आधा चेहरा शिवाजी महाराज का निकालना, यह भी शिवाजी महाराज की बदनामी है। ह०मो०मराठे इन्होंने लालु प्रसाद यादव इनकी तुलना शिवाजी महाराज से की, अर्थात दोनों की बदनामी करना यह ह०मो०मराठे इनकी चाल है। शिवाजी महाराज ने गणपति की क्या किसी भी मूर्ति की प्रतिष्ठापना नहीं की थी। फिर भी पुरंदरे ने ठाणे

Scanned with CamScanner

की सभा में आग उगली। यहाँ से आगे शिवाजी महाराज की बदनामी करने वालों को मराठा सेवासंघ, संभाजी बिग्रेड, जिजाऊ बिग्रेड नहीं छोड़ेगा।

क्या मराठों ने शिवाजी महाराज को विरोध किया?

शिवाजी महाराज को हर कदम पर परोक्ष-अपरोक्ष रूप से विरोध करने वाले ब्राह्मणों के संबंध में जानकारी लेने के पश्चात कुछ पाठकों के दिल में यह सवाल खड़ा होने की संभावना है कि क्या जावली के मोरे, खोपड़े, निंबालकर, मोहितें आदि मराठा मोरे, खोपडे, निंबालकर, मोति, आदि मराठा सरदार परंपरागत रूप से अपने-अपने क्षेत्र पर राज करने वाले संस्थासपित थे। उन्हें अपनी श्रेष्ठता पर काफी गर्व था। लोगों के कल्याण की उन्हें तसूभर भी चिन्ता नहीं थी। वे सभी सरदार निष्क्रिय थे। आदिलशहा, मुगलों के राज में वह अपने-अपने क्षेत्र का नेतृत्व कर रहे थे। वे अवाम के नेता बिल्कूल ही नहीं थे। ब्राह्मणी व्यवस्था के कारण उनके दिलो-दिमाग में समता का विचार प्रस्थापित नहीं हुआ था।

गर्वभाव के चलते वे शिवाजी महाराज का विरोध करते थे। हम चाहे निष्क्रिय ही क्यों न हो मगर फिर भी अन्य लोगों की तुलना में हम श्रेष्ठ हैं, उनकी यह सोंच ब्राह्मणी व्यवस्था का परिणाम थी। क्योंकि रामदास ने ही मराठा सरदारों को शिवाजी महाराज के खिलाफ खड़ा किया था। इसलिए मराठा सरदार शिवाजी महाराज का विरोध करते थे। किन्तू उनका विरोध प्रासंगिक था। उनके विरोध के पीछे अज्ञान था। इसलिए आगे चलकर उन मराठा सरदारों ने शिवाजी महराज की सहायता की। बजाजी निंबालकर ने धर्मान्तर नहीं किया था। आज सभी मोरे, खोपडे, निंबालकर, मोहिते इन्हें शिवाजी महाराज के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम है। किन्तु ब्राह्मण जान-बुझकर स्वार्थ के चलते शिवाजी महाराज को विरोध करते थे लेकिन आज तो ऐसी स्थिति है कि ब्राह्मण शिवाजी महाराज का नाम लेकर उनकी बदनामी कर रहे हैं। मराठा कोई भी गलती अज्ञानतावश करता है।

भारत के सभी ब्राह्मण विदेशी हैं ।

आर्यो ने अनार्यो को पराजीत कर भारत में अपना स्थान जमाया। (अर्यानी अनार्यांचा बिमोड कारुन हिन्दुस्थानात तंगड्या पसरल्या) (संदर्भ: बालासाहब ठासकरे के पिता प्रबोधनकार ठाकरे लिखित-ज्वलंत हिन्दुत्व)

Scanned with CamScanner

ब्राह्मण लोग समुंदर के पार इरान देश है, उस देश के मूलनिवासी थे। पहले उन्हें इरानी या आर्य कहा जाता था। प्रथमत: उन आर्य लोगों ने भारत में आक्रमण कर काफी हंगामा मचाया। (संदर्भ : म॰फुले लिखित-'गुलामगिरी' (मराठी) पृ॰ 143)

औरंगजेब न हिन्दुओं पर 'जिजिया कर' लगाया तब ब्राह्मणों ने हम भी विदेशी है अर्थात हिन्दू नहीं है, ऐसा कहकर जिजिया कर मे सहूलियत हासिल की। इसका मतलब ब्राह्मण हिन्दू तो नहीं, भारतीय भी नहीं है, यही हकिकत है।

इजिप्त का अपभ्रंश जिप्तवान हुआ। जिप्तवान को ही आगे चलकर 'चित्पावन' कहा जाने लगा। इसका मतलब चिप्तवान ब्राह्मण यह मूलत: इजिप्त के हैं। (संदर्भ: रामचंद्र लाड लिखित-पायपोस किंमतीचे पेशवे)

राष्ट्रपिता जोतिबा फुले, छ॰शाहू महाराज, बाबासाहब डा॰अम्बेडकर, कर्मवीर भाऊराव पाटील, इनके द्वारा शुरू किए गए स्कूलों में आज भी ब्राह्मण निर्मित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। इसलिए बच्चों को झूठा इतिहास पढ़ाया जाता है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रंथ

1. शिवभारत : कविन्द्र परमानंद
2. जेधे शकावली: संपादक, अविनाश सोवनी
3. श्री शिवप्रभुचे चरित्र: कृष्णाजी अनंत सभासद
4. छ॰शिवाजी महाराज: कृष्णाजी अर्जुन केलुस्कर
5. युगप्रवर्तक शिवराज आणि मराठ्यांची शौर्यगाथा: मा॰म॰देशमुख
6. रामदास आणि पेशवाई: प्रो॰मा॰म॰देशमुख
7. विश्ववंद्य राजा शिवाजी: श्रीमंत कोकाटे
8. चिटणीस बखर: म॰रा॰चिटणीस
9. शूद्र पूर्वी कोण होते?: डा॰बाबासाहब अम्बेडकर
10. छ॰संभाजी महाराज: वा॰सी॰बेंद्रे
11. छ॰संभाजी स्मारक ग्रंथ:डा॰जयसिंहराव पवार
12. असे होते मोगल (महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित): निकोलाओ मनुची
13. शिवपुत्र संभाजी: डा॰कमल गोखले
14. हुतात्मा छ॰संभाजी: प्रो॰डा॰एस॰ए॰बाहेकर
15. शिवचरित्र एक अभ्यास:सेतु माधव पगडी
16. शिवाजी आणि शिवकाल: जदुनाथ सरकार
17. उग्र प्रकृति संभाजी: गो॰स॰सरदेसाई
18. शिवाजी कोण होता? कॉ॰गोविंद पानसरे
19. परकीयांच्या दृष्टितून शिवाजी: रा॰व्यं॰जोशी
20. शिवाजी शूद्र कसा?: प्रो॰अशोक राणा
21. हिंदुत्वाच्या विळख्यात छ॰शिवराय:सर्जेराव भोसले
22. आरोपीच्या पिंजऱ्यात संभाजी: प्रो॰अशोक राणा
23. छ॰मराठा विरूद्ध वैदिक ब्राह्मण: दिपक गायकवाड
24. सिंहगड : ग॰ह॰खरे
25. मुरारबाजी देशपांडे : प्रभाकर भावे
26. बाजीप्रभु देशपांडे : प्रभाकर भावे
27. राजा शिवछत्रपती : ब॰मो॰पुरंदरे

28. मराठा मार्ग (सितंबर-2001) संपादक-पुरूषोत्तम खेडेकर
29. चित्रलेखा (मई-जून-2001) कार्य॰संपादक-ज्ञानेश महाराव
30. आंबेडकर चळवळीचे मारेकरी : मा॰वसंत राजस
31. हिंदु विरूद्ध वैदिक : पार्थ पोकळे
32. समग्र म॰फुले वाड्.मय (महाराष्ट्र सरकार प्रकाशित) राष्ट्रपिता जोतिबा फुले
33. संघर्षसाठी मूलनिवासी भारत (अगस्त -2001)संपादक-वामन मेश्राम
34. टाईम्स ऑफ इण्डिया: (21-05-2001)
35. नामदेवे रचिला पाया : संपादक-प्रो॰प्रभाकर पावडे
36. दीपस्तंभ : प्राचार्य शिवाजीराव भोसले
37. बंधनाचे ऋण : राम प्रधान
38. शिवछत्रपती इतिहास आणि चरित्र खंड-१
(मराठा मंदीर) संपादक - य॰दि॰फडके
39. बहुजन समाज आणि परिवर्तन : प्रो॰मा॰म॰देशमुख
40. मध्ययुगीन भारताचा इतिहास : प्रो॰मा॰म॰देशमुख
41. फुतूहाते आलमगिरी: ईश्वरदास नागर (अनुवाद-सेतुमाधव पगडी)
42. आद्यक्रांतीकारक शहाजीराजे भोसले: प्रो॰डा॰एस॰ए॰बाहेकर
43. राष्ट्रमाता जिजाऊ : प्रो॰डा॰एस॰ए॰ बाहेकर
44. गणपतीची (संगीत) प्रेतयात्रा : विश्वासराव देशमुख
45. क्या मूलनिवासी बहुजन हिन्दू है? : वामन मेश्राम
46. विद्रोही तुकाराम : डा॰आ॰ह॰सालुंखे
47. श्री छत्रपती आणि त्यांची प्रभावळ : सेतुमाधव पगडी
48. हिन्दू संस्कृति आणि स्त्री : डा॰आ॰ह॰सालुंखे
49. वादांची वादळे : डा॰आ॰ह॰सालुंखे
50. स्वातंत्र्यवीर छ॰संभाजी महाराज : श्रीमंत कोकाटे

Scanned with CamScanner

.....प्रस्थापित वर्ग की गुलामी से मूलनिवासी भूमिपुत्रों को आजाद कराने हेतू छ. शिवाजी महाराज ने परिवर्तन की लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में उन्हें दुश्मनों का जमकर प्रतिकार करना पड़ा। शिवाजी महाराज के दुश्मन दो प्रकार के थे। पहला खुला दुश्मन और दूसरा छुपा दुश्मन। खुले दुश्मन की तुलना छुपा दुश्मन ज्यादा खतरनाक होता है। क्योंकि खुले दुश्मन के खिलाफ़ दांवपेच बनाया जा सकता है किन्तू छुपे दुश्मनों की काली करतुतें तुरन्त पता नहीं चलने के कारण उनके खिलाफ़ दांवपेच बनाना संभव नहीं होता। औरंगजेब, अफजलखान, शाईस्तेखान, दिलेरखान ये शिवाजी महाराज के खुले दुश्मन थे। शिवाजी महाराज की उनके साथ जो दुश्मनी थी वह मूलतः राजनैतिक थी, वह धार्मिक कतई नहीं थी। वे खुले दुश्मन होने के कारण शिवाजी महाराज ने उन्हें हर बार धूल चटायी। परंतू छुपे दुश्मनों ने शिवाजी महाराज को काफ़ी तकलीफ पहुँचायी। शिवाजी महाराज द्वारा स्वराज्य निर्माण का कार्य आरंभ करते ही दादोजी कोंडदेव ने शिवाजी महाराज के दिल में दुश्मनों के प्रती डर पैदा करने का प्रयास किया। अफजलखान के साथ मुलाकात के समय कृष्णाजी भास्कर कुलकर्णी ने शिवाजी महाराज पर तलवार चलायी। जहांगिर के लिए वाई के ब्राह्मणों ने अफजलखान की सहाय्यता की। रायबाधीन देशमुख ने तो मुगलों की खातीर शिवाजी महाराज के खिलाफ़ मरते दम तक लड़ाई लडी। शिवाजी महाराज जंजीरा किले पर विजय हासील न कर पायें इसलिए मुरगुड नांदगांव के जोशी ने सिद्दी को मदद की। असमर्थ रामदास ने शिवाजी महाराज की अनेक गुप्त योजनाएँ आदिलशहा और औरंगजेब को बताकर शिवाजी महाराज के परिवर्तन के कार्य को जमकर विरोध किया। राज्याभिषेक का मोरोपंत पिंगले से लेकर महाराष्ट्र के सभी ब्राह्मणों ने विरोध किया। गागाभट्ट ने राज्याभिषेक के लिए बहुत बड़ी रिश्वत ली और महाराज को काफ़ी दुःख पहुँचाया। मराठों में हमेशा बैर बना रहे इसके लिए गागाभट्ट ने बारामाशी और अक्करमाशी ऐसा भेद निर्माण किया। पुरंदर की लड़ाई के समय दिलेरखान की सफलता के लिए पुना के ४०० ब्राह्मणों ने कोटीचंडी यज्ञ किया। मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तो, उमाजी पंडित, राहुजी सोमनाथ इन्होंने शिवाजी महाराज और संभाजी महाराज के बीच झगड़ा लगाने का प्रयास किया। सोयराबाई -संभाजी महाराज की बदनामी भी इन्होंने ही की। अणाजी दत्तो, राहुजी सोमनाथ इन्होंने शिवाजी महाराज की हत्या की। पेशवाओं ने शिवशक बन्द किया। पेशवा, तिलक, सावरकर, अत्रे, पुरंदरे, सालगावकर, बेडेकर, य. दि. फडके, प्रधान ये लोग वर्तमान में शिवाजी महाराज के वास्तविक दुश्मन है।

– श्रीमंत कोकाटे

प्रकाशक
मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट
सर्वे नं. ५, ४/१११ केशव नगर
मुंढवा, पुणे – ४११ ०३६
Visit at: www.mulnivasibamcef.org
Regd. No.E-6021